संगीत-सम्राट तानसेन

जीवनी और रचनाएँ

•

प्रस्तावना-लेखक :

डा० बा० वि० केसकर

[भारत गणराज्य के सूचना और प्रसारण मंत्री]

•

रचयिता :

प्रभुदयाल मीतल

•

प्रकाशक :

साहित्य संस्थान, मथुरा.

प्रथम संस्करण
आषाढ़ी पूर्णिमा, सं० २०१७

मूल्य ३) तीन रुपया

मुद्रक :
त्रिलोकीनाथ मीतल, भारत प्रिंटर्स, मीतल निवास, मथुरा ।

प्रस्तावना

श्री प्रभुदयाल मीतल ने तानसेन पर यह पुस्तक लिखकर एक बड़ा उपयोगी काम किया है। तानसेन हमारे देश के महान् संगीतज्ञों में थे। अर्वाचीन काल में उनका नाम इतना प्रसिद्ध हुआ है कि हिंदुस्तानी संगीत के लिए वे एक प्रकार के प्रतीक हैं।

तानसेन की जीवनी के संबंध में बहुत सी किंवदंतियाँ हैं। यह भी संभव है कि उससे संबंधित कुछ किस्से भी घड़े गये हों। जीवन की कुछ घटनाओं के बारे में मतभेद भी है। इन सबके होते हुए या शायद इनके कारण भी तानसेन की एक जीवनी लिखी जानी अत्यंत आवश्यक थी। मीतल जी ने यह जीवनी लिखकर बड़ा अच्छा काम किया है। उन्होंने जो कुछ मसाला इस समय मिल सकता है, वह यहाँ एकत्रित करके पेश कर दिया है।

तानसेन की सम्पूर्ण रचनाओं को एकत्रित करने का जो प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है, वह सराहनीय है। आशा है, सभी संगीतज्ञ इससे लाभ उठावेंगे। मैं इस परमोपयोगी काम के लिए उन्हें बधाई देता हूँ।

नई दिल्ली,
७ मई, १९६० ई०

बा० वि० केसकर
[भारत गणराज्य के सूचना और प्रसारण मंत्री]

तानसेन संबंधी प्रसिद्ध प्रशस्तियाँ

●

विधना यह जिय जानिकै, सेस न दीन्हे कान ।
धरा - मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ॥

●

पीथल सों मजलिस गई, तानसेन सों राग ।
हँसिवौ - रमिवौ - बोलिवौ, गयौ बीरबर साथ ॥

●

वक्तव्य

भारत को अपने जिन महान् गायकों पर गर्व है, उनमें संगीत-सम्राट तानसेन का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उत्तर भारत की सुविख्यात ध्रुपद शैली के उन्नायकों में तो उन्हें अग्रिम पंक्ति में स्थान दिया जाता है। आश्चर्य और खेद की बात है, ऐसे सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ के जीवन-वृत्तांत की प्रामाणिक रूप-रेखा तक से हम अपरिचित हैं। उनकी जीवनी से संबंधित इतनी अधिक किंवदंतियाँ और अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं कि उनमें से प्रामाणिक बातों का निश्चय करना भी एक जटिल समस्या बनी हुई है। तानसेन के रचे हुए ध्रुपदों का उनके जीवन-काल से अब तक सभी संगीतज्ञों में व्यापक प्रचार रहा है; किंतु उनका भी कोई प्राचीन और प्रामाणिक संकलन उपलब्ध नहीं है। उत्तर भारतीय संगीत के विख्यात उद्धारक श्री कृष्णानंद व्यास ने कलावंतों के परंपरागत घरानों और संगीत की प्राचीन पोथियों से तानसेन के ध्रुपदों को बड़े परिश्रम पूर्वक संकलित कर उन्हें अपनी महान् रचना 'संगीत राग कल्पद्रुम' में प्रकाशित किया था। इस प्रशंसनीय ग्रंथ के अतिरिक्त कुछ अन्य संगीत ग्रंथों में भी तानसेन के ध्रुपद मिलते हैं; किंतु वे अब भी पर्याप्त संख्या में अप्रकाशित हैं और उनमें से अधिकांश प्राचीन घरानों से संबंधित कलावंतों के कंठस्थ हैं।

मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि तानसेन पर एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय, जिसमें उनकी यथासंभव प्रामाणिक जीवनी हो और अधिक से अधिक उपलब्ध रचनाओं का संकलन हो। प्रस्तुत पुस्तक उसी इच्छा की किंचित पूर्ति का लघु प्रयास है। इस पुस्तक के दो खंड हैं। प्रथम खंड में तानसेन की जीवनी है और द्वितीय खंड में उनकी रचनाओं का संकलन है। परिशिष्ट में तानसेन के पुत्रों की रचनाएँ हैं और समकालीन संगीतज्ञों की नामावली है।

तानसेन के मूल नाम, जन्म-स्थान, जन्म-संवत, माता-पिता, दीक्षा-गुरु और संगीत-शिक्षक के संबंध में प्रामाणिक लिखित सामग्री की अपेक्षा दंत-कथाएँ और किंवदंतियाँ ही अधिकतर उपलब्ध होती हैं। इन बहुसंख्यक किंवदंतियों में से प्रामाणिक तथ्यों का संकलन करना तत्वान्वेषी विद्वानों के लिए भी एक समस्या बन गई है। यही कारण है, तानसेन संबंधी प्रकाशित पुस्तकों में उनके जीवन-वृत्तांत की सामग्री उनकी रचनाओं की तुलना में बहुत कम मिलती है। जो थोड़ी-बहुत मिलती भी है, वह अधिकतर किंवदंतियों और अनुश्रुतियों पर आधारित होने के कारण प्राय: अप्रामाणिक है। मैंने इन किंवदंतियों, अनुश्रुतियों और दंतकथाओं की परीक्षा कर उनकी विश्वसनीय बातों को ऐतिहासिक तथ्यों के प्रकाश में उपस्थित करने की चेष्टा की है। प्रस्तुत पुस्तक में तानसेन की जीवनी विषयक जो सामग्री दी गई है, वह अन्य प्रकाशित रचनाओं की अपेक्षा अधिक ही नहीं, वरन् यथासंभव प्रामाणिक भी है।

तानसेन की रचनाओं के रूप में वे बहुसंख्यक ध्रुपद हैं, जो उन्होंने समय-समय पर अपने गायन के लिये रचे थे। इन ध्रुपदों का सबसे बड़ा और पुराना संग्रह श्री कृष्णानंद व्यास कृत 'संगीत राग कल्पद्रुम' में मिलता है। इसी के आधार पर अब तक तानसेन की रचनाओं के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं; किंतु उन्हें क्रमवद्ध और सुसंपादित नहीं कहा जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में तानसेन के जो ध्रुपद हैं, वे 'संगीत राग कल्पद्रुम' के अतिरिक्त अन्य संगीत ग्रंथों और कीर्तन-पोथियों से संगृहीत तथा प्राचीन घरानों के कतिपय गायकों से प्राप्त किये गये हैं। इसलिए इस पुस्तक में दिये हुए तानसेन के ध्रुपदों की संख्या अन्यत्र प्रकाशित ध्रुपदों से अधिक है। साथ ही इन्हें क्रमवद्ध और प्राय: सुसंपादित रूप में प्रस्तुत करने की भी पूरी चेष्टा की गई है।

तानसेन की रचनाओं में इन ध्रुपदों के अतिरिक्त 'संगीत-सार' और 'राग-माला' नामक दो ग्रंथों का भी स्थान है। कुछ विद्वान इन ग्रंथों को तानसेन की रचना मानने में संदेह करते हैं। पहिले मेरा विचार भी इन्हें इस पुस्तक में देने का नहीं था, किंतु काफी सोच-विचार के बाद मैंने इनको भी इस पुस्तक में संगृहीत करना उचित समझा है। कारण यह है, पहिले तो ये ग्रंथ एक दम अप्रामाणिक नहीं माने जाते हैं; फिर वे तानसेन के संगीत शास्त्रोक्त ज्ञान को प्रकट करते हैं, जो उस युग के संगीतज्ञों के लिए आवश्यक था। यदि संदिग्ध रचना माने जाने से ही इन ग्रंथों को छोड़ दिया जाता, तो फिर तानसेन के वे बहुसंख्यक ध्रुपद भी छोड़ने पड़ते, जिनकी प्रामाणिकता में भी संदेह किया जा सकता है। तानसेन की रचनाओं को प्रामाणिकता की कसौटी पर कसने का सुगम उपाय ही यह है कि एक बार उन्हें समग्र रूप में संकलित कर लिया जावे और फिर उनकी तुलनात्मक परीक्षा की जावे। परीक्षण के उपरांत उनमें से अप्रामाणिक रचनाओं की छटनी की जा सकती है।

पुस्तक के अंत में तीन परिशिष्ट हैं। प्रथम परिशिष्ट में तानसेन के पुत्रों की कतिपय रचनाओं का संकलन है और द्वितीय परिशिष्ट में समकालीन संगीतज्ञों की नामावली है। तृतीय परिशिष्ट में वे स्फुट रचनाएँ हैं, जो पुस्तक छप जाने के बाद उपलब्ध हुई हैं। पुस्तक में प्रसंगानुसार आठ चित्र भी दिये गये हैं, जिनसे इसकी शोभा के साथ ही साथ उपयोगिता में भी वृद्धि हुई है।

इस युग में जिन महानुभावों की चेष्टा से भारतीय संगीत की सब प्रकार से उन्नति हो रही है, उनमें केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री माननीय डा० केसकर जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने जहाँ 'आकाश वाणी' के कार्यक्रम में भारतीय संगीत को प्रमुखता दी है, वहाँ भारतीय संगीतज्ञों की गौरव-वृद्धि का भी

प्रशंसनीय प्रयास किया है। उनकी व्यक्तिगत चेष्टा के फल स्वरूप ही ग्वालियर के 'तानसेन स्मृति उत्सव' को अखिल भारतीय संगीत महोत्सव का वृहत् रूप प्राप्त हुआ है। तानसेन के प्रति उनकी जो आस्था है, उसी के कारण उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकाल कर इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। मैं इसके लिए माननीय डा० केसकर जी का अत्यंत अनुगृहीत हूँ।

इस पुस्तक में दिये हुए चित्रों के फोटो और ब्लाक कई सज्जनों के सहयोग से प्राप्त हुए हैं। संगीत-सम्राट तानसेन का आरंभिक चित्र और अकबर-हरिदास भेंट संबंधी चित्र नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित प्राचीन चित्रों के फोटोओं से मुद्रित हुए हैं। तानसेन और स्वामी हरिदास, स्वामी हरिदास (डांगुर) तथा तानसेन का दूसरा चित्र संगीत कार्यालय, हाथरस द्वारा प्रदत्त ब्लाकों से छापे गये हैं। बेहट के शिव मंदिर तथा ग्वालियर स्थित गौस महम्मद के मकबरे और तानसेन की समाधि के चित्र श्री वासुदेव जी गोस्वामी द्वारा प्राप्त फोटोओं से मुद्रित हैं। मैं राष्ट्रीय संग्रहालय के अधीक्षक, संगीत कार्यालय के संचालक श्री प्रभुलाल गर्ग और श्री वासुदेव जी गोस्वामी को उनके सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

जिन सज्जनों के ग्रंथों और लेखों से इस पुस्तक में सहायता ली गई है, उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा पावन कर्त्तव्य है। मैंने पुस्तक में यथा स्थान उनका उल्लेख किया है और आरंभ में उनकी सूची भी दी है। मेरे इस तुच्छ प्रयास से यदि भारतीय संगीत के प्रेमियों को कुछ भी लाभ हुआ, तो मैं इस पुस्तक के प्रकाशन को सफल समझूंगा।

मीतल निवास,
डेम्पियर पार्क, मथुरा.
गंगा दशहरा, सं० २०१७

—**प्रभुदयाल मीतल**

विषय–सूची

◉

प्रथम खंड

तानसेन की जीवनी

विषय ... पृष्ठांक

द्वितीय खंड

तानसेन की रचनाएँ

परिशिष्ट

चित्र-सूची

संशोधन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०	६	बड़ा	कुछ छोटा
३८	५	वीणा	बाँसुरी
४५	२२	भारत के राष्ट्रपति... ने उत्सव में उपस्थित होकर इसके महत्त्व की वृद्धि की थी।	राष्ट्रपति जी तानसेन उत्सव में सम्मिलित नहीं हुए; किंतु उन्होंने सन् १९५५ में तानसेन की समाधि पर फूल-माला चढ़ाई थी।

सहायक ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाएँ

१. आईन-ए-अकबरी (अँगरेजी) : ब्लोचमैन
२. अकबरनामा (अँगरेजी) : एच. बेवरीज्ज
३. दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता : गो० हरिराय
४. अष्टसखान की वार्ता : गो० हरिराय
५. शिवसिंह सरोज : शिवसिंह
६. अकबरी दरबार के हिंदी कवि : सरयूप्रसाद अग्रवाल
७. मानसिंह और मानकुतूहल : हरिहरनिवास द्विवेदी
८. मध्यदेशीय भाषा (ग्वालियरी) : हरिहरनिवास द्विवेदी
९. अष्टछाप-परिचय : प्रभुदयाल मीतल
१०. सूर-निर्णय : द्वारकादास परीख और प्रभुदयाल मीतल
११. संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ : नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
१२. कवि तानसेन और उनका काव्य : नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
१३. संगीत राग कल्पद्रुम (भाग १, २) : कृष्णानंद व्यास
१४. कीर्तन-संग्रह (भाग १, २, ३) : लल्लूभाई देसाई
१५. कीर्तन कुसुमाकर : वसंतराम शास्त्री
१६. नादविनोद : पन्नालाल गोस्वामी
१७ संगीत सुदर्शन : सुदर्शनाचार्य शास्त्री
१८. ध्रुपद स्वर लिपि : हरिनारायण मुखर्जी
१९. यू० पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी जनरल (अँगरेजी)—लखनऊ
२०. सम्मेलन पत्रिका—इलाहाबाद
२१. संगीत (हरिदास अंक)—हाथरस
२२. धर्मयुग—बम्बई
२३. दैनिक हिन्दुस्तान—दिल्ली
२४. साप्ताहिक हिन्दुस्तान—दिल्ली

संगीत-सम्राट् तानसेन

प्रथम खंड

तानसेन की जीवनी

●

आरंभिक कथन—

भारत के महान् संगीतज्ञों और गायकों में तानसेन का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वे मुगल-सम्राट अकबर के दरबारी गायक और उनके नवरत्नों में से एक थे। अपनी गायन कला के कारण वे इतने विख्यात हुए कि अपने समय के संगीत-सम्राट माने जाते हैं। उनका देहावसान हुए यद्यपि साढ़े तीनसौ वर्ष से भी अधिक हो गये, तथापि भारतीय संगीताकाश में उनकी कीर्ति-कौमुदी आज भी वैसी ही व्याप्त है, जैसी वह उनके जीवन-काल में थी।

आश्चर्य की बात है, ऐसे सुप्रसिद्ध कलाकार के जीवन का प्रामाणिक वृत्तांत पूर्णतया उपलब्ध नहीं है। मुसलमानी शासन-काल के कई इतिहास-लेखकों के ग्रंथों में प्रसंगवश जो तानसेन संबंधी उल्लेख मिलते हैं, उनमें उनकी गायन कला की तो खूब प्रशंसा की गई है; किंतु उनके जीवन-वृत्तांत, विशेषकर आरंभिक जीवनी पर बहुत कम प्रकाश डाला गया है। उनकी रचनाओं में भी उनके जीवन-वृत्तांत के बहुत कम सूत्र मिलते हैं, यद्यपि उनमें उनके आश्रयदाता राजा रामचंद्र और सम्राट अकबर संबंधी उल्लेख पर्याप्त संख्या में हैं। यही कारण है, तानसेन के

मूल नाम, जन्म-स्थान, जन्म-संवत्, माता-पिता और उनकी संगीत-शिक्षा के संबंध में विविध किंवदंतियों तथा अनुश्रुतियों के अतिरिक्त विश्वसनीय लिखित प्रमाणों का शोचनीय अभाव है।

अकबरी दरबार के मीरमुंशी अबुलफजल तानसेन के समकालीन थे। उन्होंने अपने विख्यात ग्रंथ 'आईने अकबरी' और 'अकबरनामा' में अपने समय के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के विस्तृत वृत्तांत लिखे हैं। उन्होंने अकबर के दरबारी संगीतज्ञों की नामावली में सर्वप्रथम स्थान तानसेन को दिया है और उनके गायन की अत्यधिक प्रशंसा की है; किंतु उनके आरंभिक जीवन-वृत्तांत पर उन्होंने भी कोई प्रकाश नहीं डाला है। ऐसी दशा में कतिपय उपलब्ध उल्लेखों और परंपरागत किंवदंतियों के आधार पर ही उनका जीवन-वृत्तांत लिखा जा सकता है।

नाम—

यह प्रायः निश्चित है कि तानसेन उनका नाम नहीं था, उपाधि थी; जो उनकी गायन कला की प्रशंसा में दी गई थी। यह उपाधि उन्हें किससे प्राप्त हुई और उनका मूल नाम क्या था, इनके संबंध में पूर्ण निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता है। श्री बी. एस. सिथोले का मत है, बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र ने उन्हें तानसेन उपाधि दी थी[१]। आचार्य वृहस्पति ने अकबर कालीन फजलअली कव्वाल कृत 'कुल्लियात गवालियर' का हवाला देते हुए बतलाया है, ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के पुत्र विक्रमाजीत से उन्हें यह उपाधि प्राप्त हुई थी[२]।

---

[१] यू. पी. हिस्टोरिकल सोसायटी के जरनल (जिल्द २१, भाग १–२) में प्रकाशित 'ए नोट आन तानसेन' नामक लेख।

[२] संगीत (फरवरी, १९५९) और धर्मयुग (२७ दिसम्बर, १९५९) में प्रकाशित लेख।

कुछ भी हो, यह तानसेन उपाधि इतनी प्रसिद्ध हुई कि उसने उनके वास्तविक नाम को ही छिपा दिया। अकबरी दरबार के इतिहासकार मुल्ला बदायुनी ने एक स्थान पर उनका नाम तानसिंह भी लिखा है। किंवदंतियों के अनुसार उनका मूल नाम तन्नू, तन्ना, त्रिलोचन, तनसुख अथवा रामतनु था। इसमें वास्तविकता क्या है, इसे जानने का कोई साधन नहीं है।

जन्म-स्थान—

तानसेन के जन्म-स्थान के संबंध में किसी सुप्रसिद्ध इतिहासकार का लिखित प्रमाण प्राप्त नहीं है। जनश्रुति के अनुसार ग्वालियर अथवा उसके पास का बेहट ग्राम उनके जन्म-स्थान माने जाते हैं। रियासत झालाबाड़ के दरबारी श्री राठौड़ ने वहाँ के पुस्तकालय की एक हस्त लिखित पुस्तक के आधार पर तानसेन का जन्म-स्थान दिल्ली बतलाया है, जहाँ उनके पूर्वज अपने मूल निवास स्थान लाहौर को छोड़ कर आ बसे थे[१]। बल्लभ संप्रदाय के वार्ता साहित्य में तानसेन का जन्म-स्थान ग्वालियर बतलाया गया है[२]।

यह प्रसिद्ध बात है, तानसेन की आरंभिक संगीत-शिक्षा ग्वालियर में हुई थी और उक्त स्थान से उनका जीवन पर्यंत घनिष्ट संबंध रहा था। इसीलिए वे 'गवालियरी' कहलाते थे। मुंशी अबुलफजल ने अकबरी दरबार के जिन ३६ संगीतज्ञों की नामावली दी है, उनमें से १५ को उन्होंने 'गवालियरी' बतलाया है और उनमें सर्व प्रथम नाम तानसेन का लिखा है। यह भी

---

[१] दैनिक हिंदुस्तान (५ जुलाई १९५६) में प्रकाशित श्री दिलीपचंद वेदी का लेख।

[२] दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता, द्वितीय खंड, पृष्ठ १५४

प्रसिद्ध है कि अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व तानसेन ने ग्वालियर में रहने की इच्छा प्रकट की थी; यद्यपि उनके जीवन-काल में उक्त इच्छा की पूर्ति नहीं हो सकी। उनके देहावसान के पश्चात् उनकी समाधि ग्वालियर में ही बनवाई गई थी। इन सब बातों से ग्वालियर को तानसेन के जन्म-स्थान होने का पर्याप्त समर्थन प्राप्त होता है।

ग्वालियर के निकटवर्ती बेहट ग्राम में तानसेन के आरंभिक जीवन से संबंधित कुछ स्मृति-चिह्न भी बतलाये जाते हैं। इनमें एक चबूतरा और महादेवजी का मंदिर मुख्य हैं। चबूतरा को तानसेन के आरंभिक संगीत-अभ्यास का स्थल और महादेव जी को उनका उपास्यदेव कहा जाता है। महादेव जी के मंदिर का ऊपरी भाग कुछ टेढ़ा और एक ओर को झुका हुआ है। बेहट निवासियों की मान्यता है, तानसेन के आलाप से मंदिर का यह भाग झुक गया था! इस प्रकार की चमत्कारपूर्ण लोक-मान्यता का केवल इतना ही अर्थ हो सकता है कि बेहट को तानसेन के जन्म-स्थान और आरंभिक निवास-स्थान का गौरव दिया जा सके।

इस समय ग्वालियर खास अथवा उसका बेहट गाँव तानसेन के जन्म-स्थान के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी यह प्रसिद्धि तब तक निश्चित है, जब तक इनके विरुद्ध कोई अन्य विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त नहीं होता है।

जन्म-संवत्—

तानसेन के जन्म-संवत् के संबंध में किसी इतिहासकार का प्रामाणिक उल्लेख प्राप्त नहीं है। कुछ विद्वानों ने तानसेन के जीवन-वृत्तांत की संगति से उनका जन्म-संवत् निश्चित करने
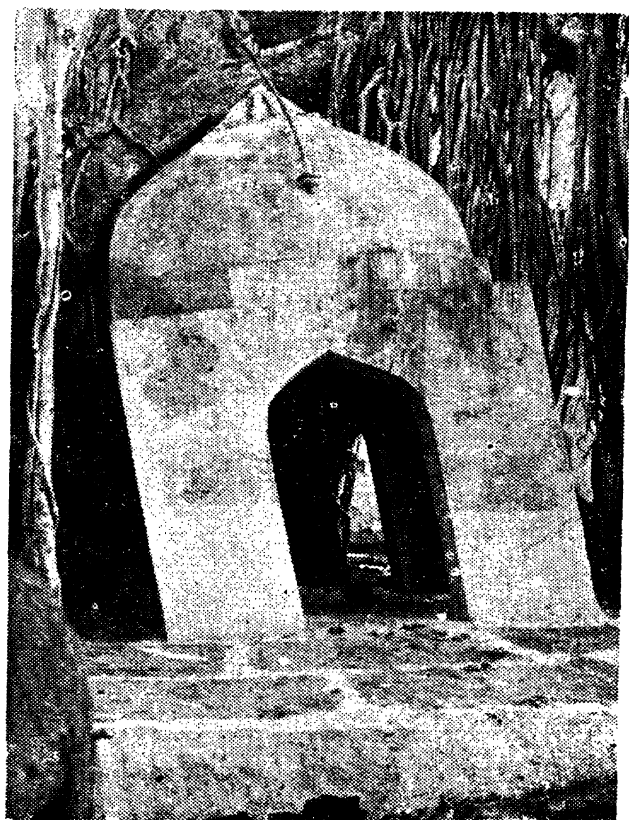
बेहट का शिव मंदिर

इसका ऊपरी भाग कुछ टेढ़ा है, जिसका कारण तानसेन का आलाप माना जाता है

की चेष्टा की है; किंतु उनके मत परस्पर विरुद्ध तथा विवादग्रस्त हैं। श्री शिवसिंह सेंगर ने तानसेन का जन्म-संवत् १५८८ लिखा है,[१] जब कि डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने इसे सं० १५७८ बतलाया है[२]। कुछ विद्वान उनका जन्म-संवत् १५६३ मानते हैं। इन विभिन्न मतों के समर्थन में विश्वसनीय प्रमाण नहीं दिये गये हैं। हिंदी साहित्यकार 'शिवसिंह सरोज' में उल्लिखित सं० १५८८ को ही तानसेन का जन्म-संवत् मानते रहे हैं; किंतु नवीन तथ्यों के कारण इसमें संशोधन करने की आवश्यकता है।

यह इतिहास प्रसिद्ध बात है, अकबरी दरबार में आने से पूर्व तानसेन बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के दरबारी गायक थे। इससे पहले वे पर्याप्त समय तक संगीत-शिक्षा प्राप्त कर इस कला में पारांगत हो चुके थे, तथा दो-एक नरेशों का संरक्षण भी प्राप्त कर सके थे। राजा रामचंद्र तानसेन की गायन-कला के बड़े प्रशंसक थे। उनके द्वारा तानसेन को अपूर्व आदर-सन्मान और प्रचुर धन-वैभव प्राप्त हुआ था। यह भी संभव है, उन्होंने ही 'तानसेन' की उपाधि भी प्रदान की हो। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि राजा रामचंद्र के आश्रय में रहते समय तानसेन की पर्याप्त प्रौढ़ावस्था थी और वे दरबारी जीवन से अवकाश लेना चाहते थे। ऐसी स्थिति में तानसेन का जन्म-संवत् १५८८ से पूर्व का ही मानना उचित होगा।

यदि 'कुल्लियात गवालियर' के अनुसार तानसेन उपाधि राजा विक्रमाजीत द्वारा दी गई मानी जाय, तब तो उनका जन्म-काल और भी पहले का मानना होगा। ग्वालियर के विख्यात

---

[१] शिवसिंह सरोज, पृष्ठ ४२६

[२] सम्मेलन पत्रिका (ज्येष्ठ, आषाढ़ सं० २००३) में प्रकाशित लेख।

संगीतज्ञ राजा मानसिंह तोमर की मृत्यु सं० १५७३ में हुई थी। उनके बाद उनका पुत्र विक्रमाजीत ग्वालियर का राजा हुआ था। विक्रमाजीत का ग्वालियर पर राज्याधिकार सं० १५७३ से १५७५ तक था और सं० १५८३ में उसकी मृत्यु हुई थी। इस प्रकार सं० १५७५ के लगभग उसके द्वारा तानसेन को उपाधि दिये जाने की संभावना हो सकती है। उस समय तानसेन की आयु कम से कम २५ वर्ष की अवश्य माननी होगी, तभी वे विक्रमाजीत के दरबार में पहुँचने और उससे उपाधि प्राप्त करने के योग्य समझे जा सकते हैं। ऐसी दशा में उनका जन्म-संवत् १५५० से पूर्व का हो सकता है, बाद का नहीं।

श्री कृष्णानंद व्यास कृत 'राग कल्पद्रुम' में अनेक प्राचीन संगीतज्ञों की दुर्लभ रचनाओं का बहुमूल्य संकलन हुआ है। उसमें दिये हुए तानसेन के बहुसंख्यक ध्रुपदों में से एक इस प्रकार है—

(राग विहाग, चौताल)

छत्रपति मान राजा, तुम चिरंजीव रहो, जौलौं ध्रुव मेरु तारौ।
चहुँ देस तें गुनी जन आवत, तुम पै धावत,
पावत मन इच्छा, सबहिं कौ जग उजियारौ॥
तुम से जो नहीं और, कासैं जाय कहूँ दौर,
वही आजिज कीरत करै, मोपै रच्छा करन हारौ।
देत करोरन, गुनी जनन कों अजाचक किये, 'तानसेन' प्रतिपारौ॥

उपर्युक्त ध्रुपद में तानसेन द्वारा किसी 'मान राजा' की प्रशंसा करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया गया है और उनके द्वारा अपनी रक्षा तथा प्रतिपालन की बात कही गई है। इस 'मान राजा' को आमेर के राजा मानसिंह मानना संभव नहीं है। आमेर नरेश मानसिंह अकबर के अधीनस्थ सेनापति और सूबेदार

थे, अतः उन्हें सर्व प्रभुता सम्पन्न स्वतंत्र नरेश की 'छत्रपति' उपाधि से संबोधित नहीं किया जा सकता था। फिर आमेर के राजा मानसिंह और तानसेन दोनों ही अकबर के दरबारी नव रत्नों में होने से प्रायः समान राजकीय स्तर पर थे, अतः तानसेन आमेर-नरेश से कोई याचना नहीं कर सकते थे, जैसा कि उक्त ध्रुपद में उल्लेख है। इस स्थिति में उक्त ध्रुपद का संबंध ग्वालियर के स्वतंत्र राजा मानसिंह तोमर से ही हो सकता है। ऐसी दशा में तानसेन को मानसिंह तोमर का समकालीन ही नहीं, वरन् गायन कला में दक्षता प्राप्त कर उन्हें आशीर्वाद देने योग्य आयु का भी मानना होगा। तब तानसेन का जन्म-संवत् १५५० से भी काफी पहले का माना जावेगा।

यह इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि तानसेन का अकबरी दरबार में प्रवेश सं० १६१९-२० में हुआ था। उनकी गायन कला की सर्वाधिक ख्याति अकबरी दरबार में रहते हुए ही हुई थी। वे पर्याप्त समय तक सम्राट अकबर के संरक्षण में रह कर अपने अपूर्व गायन से उन्हें प्रसन्न करते रहे थे। यदि विक्रमाजीत द्वारा तानसेन को उपाधि प्रदान करने की बात मानी जाय, तब अकबरी दरबार में प्रवेश करने के समय उनकी आयु ७० वर्ष से कुछ अधिक की माननी होगी। यदि उपर्युक्त ध्रुपद का मानसिंह तोमर संबंधी उल्लेख प्रामाणिक माना जाय, तब तो अकबरी दरबार में जाने के समय तानसेन की आयु ८० वर्ष से कम की सिद्ध नहीं होती। यह आयु अकबरी दरबार के किसी सक्रिय कलाकार के लिए उपयुक्त ज्ञात नहीं होती है। ऐसी दशा में विक्रमाजीत द्वारा उन्हें उपाधि प्रदान करने और उनके द्वारा मानसिंह तोमर को आशीर्वाद देने की दोनों बातें काल-क्रम से असंगत ज्ञात होती हैं।

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने 'राग कल्पद्रुम' के आधार पर 'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' नामक अपनी पुस्तक में तानसेन के ध्रुपदों का संकलन किया है। उसमें 'छत्रपति मान राजा' से संबंधित ध्रुपद भी है[1]। इस पुस्तक के ध्रुपदों को बाद में उन्होंने अपनी दूसरी पुस्तक 'कवि तानसेन और उनका काव्य' में भी संगृहीत किया है; किंतु उसमें 'छत्रपति मान राजा' के स्थान पर 'छत्रपति राजा राम' कर दिया गया है[2]। श्री चतुर्वेदी जी ने यह संशोधन किस प्रति के आधार पर किया, इसका उल्लेख उन्होंने नहीं किया। तानसेन के जीवन-वृत्तांत और उनके काल-क्रम की संगति से उक्त ध्रुपद का संबंध मानसिंह तोमर की अपेक्षा रामचंद्र बघेला से होने में ही अधिक समीचीनता है। इसी प्रकार उन्हें तानसेन उपाधि भी राजा विक्रमाजीत की अपेक्षा रामचंद्र बघेला द्वारा दी हुई मानना ही अधिक उचित जान पड़ता है। रामचंद्र बघेला के दरबार में तानसेन की जो स्थिति थी, उसे देखते हुए ये दोनों बातें संगत ज्ञात होती हैं। ऐसी दशा में तानसेन का जन्म-संवत् न तो १५८८ माना जा सकता है और न १५५० या उससे पूर्व का। हमारे विचार से तानसेन का जन्म-संवत् १५६३ मानना ही अधिक उपयुक्त होगा, जैसा कुछ विद्वान मानते भी हैं।

माता-पिता—

तानसेन के माता-पिता के निश्चित नाम और उनके विश्वसनीय वृत्तांत भी अज्ञात हैं। जनश्रुति के अनुसार उनके पिता का नाम मकरंद पांडे था। कहते हैं, मकरंद पांडे एक

---

[1] संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ, पृष्ठ १००

[2] कवि तानसेन और उनका काव्य, पृष्ठ १०८

संगीतज्ञ विद्वान थे। उन्होंने अपने पुत्र को गायन कला में कुशल बनाने की विशेष चेष्टा की थी।

मकरंद पांडे के विषय में जनश्रुतियों के अतिरिक्त कोई प्रामाणिक लेख प्राप्त नहीं है। मानसिंह तोमर के समय में नायक पांडवीय नामक एक विख्यात संगीतज्ञ की विद्यमानता का उल्लेख मिलता है। अभी तक कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिला, जिससे नायक पांडवीय को मकरंद पांडे अर्थात् तानसेन का पिता माना जा सके।

जाति और धर्म—

तानसेन जन्मतः हिंदू थे और संभवतः ब्राह्मण वर्ण में उत्पन्न हुए थे। उनके निम्न ध्रुपद से भी उनके ब्राह्मण होने का ही संकेत मिलता है—

जै-जै कर पूजौ धौलागढ़ की रानी नें। × ×
बीरबली वंश ब्राह्मण कुल-तारन तानसेन बरदानी नें॥

वल्लभ संप्रदाय के वार्ता साहित्य में उनके ब्राह्मण के घर जन्म लेने की बात लिखी गई है[1]। वे किस जाति के ब्राह्मण थे, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है। किंवदंतियों के अनुसार उन्हें मिश्र, पांडे अथवा ब्रह्मभट्ट बतलाया जाता है।

यह किंवदंती बहुत प्रसिद्ध है कि हिंदू कुल में जन्म लेने पर भी तानसेन बाद में मुसलमान हो गये थे। वे कब और क्यों मुसलमान हुए, इस रहस्य का उद्घाटन अभी तक नहीं हो सका है। उनके समकालीन किसी भी इतिहासकार अथवा कवि ने उनके मुसलमान होने के संबंध में कुछ नहीं लिखा है।

[1] ये तानसेन ग्वालियर में एक ब्राह्मण के जन्मे।
—दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता (हरिरायजी कृत) द्वि०खं० पृ०१५४

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने तानसेन के मुसलमान होने का यह कारण अनुमानित किया है कि ग्वालियर के जिस समुदाय का तानसेन से संबंध था, वह सामूहिक रूप से बलात् मुसलमान बना लिया गया था[1]। चाटुर्ज्या जी का यह अनुमान इसलिए ठीक नहीं है कि अकबर के समय में बलात् मुसलमान बनाये जाने की घटनाएँ नहीं मिलती हैं, जब कि तानसेन का अकबर के शासन-काल में ही मुसलमान होना कहा जाता है। इस संबंध में यह किवदंती बड़ी प्रसिद्ध है कि किसी मुसलमान सुंदरी से तानसेन का प्रेम हो गया था, जिसके फल स्वरूप वे मुसलमान हुए थे। इस किवदंती में कुछ तथ्य हो सकता है, क्यों कि कला-प्रेमी भावुक जन अपनी कलाप्रियता के कारण कट्टर आचार-विचारों की संकीर्ण सीमा में प्रायः नहीं रह पाते हैं। ऐसा माना जाता है, तानसेन की हिंदू पत्नी के अतिरिक्त उनकी कोई गायन कला कुशल मुसलमानी पत्नी अथवा उपपत्नी भी थी। उनके पुत्रों के नाम हिंदू और मुसलमान दोनों के से मिलते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि सुरतसेन जैसा हिंदू नामधारी पुत्र हिंदू पत्नी से तथा तानतरंग खाँ और विलास खाँ जैसे मुसलमान नाम धारी पुत्र मुसलमानी पत्नी से उत्पन्न हुए होंगे।

तानसेन के नाम के साथ 'मियाँ' विशेषण का प्रयोग, उनके रचे हुए ध्रुपदों में मुसलमानी पीर-पैगंबरों की स्तुति, ग्वालियर में उनकी कब्र की विद्यमानता और उनके वंशजों का मुसलमान धर्मावलम्वी होना आदि बातें भी तानसेन के मुसलमान होने के पक्ष में कही जाती हैं। जहाँ तक 'मियाँ' शब्द का संबंध है; वह मुसलमान का समानार्थक नहीं है, बल्कि एक आदरवाची शब्द है, जो श्रेष्ठ हिंदू और मुसलमान दोनों के लिए व्यवहृत

---

[1] सम्मेलन पत्रिका (ज्येष्ठ-आषाढ़ सं० २००३) में प्रकाशित लेख।

होता था और यदा-कदा अब भी होता है। मुसलमानी पीर-पैगंबरों की स्तुति के ध्रुपद उनके मुसलमान मित्रों और सम्राट अकबर के लिए रचे गये होंगे। इनसे उनके धार्मिक विचारों की उदारता ही प्रकट होती है। ग्वालियर में उनके मकबरे का निर्माण उनके मुसलमान मित्रों, शिष्यों और पुत्रों ने उनकी स्मृति-रक्षा के लिए कराया होगा। यह निश्चित है, तानसेन की ग्वालियर में मृत्यु नहीं हुई थी और उनकी लाश को भी ग्वालियर लाकर दफनाने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। तानसेन के वंशज कट्टर हिंदुओं की रूढ़ि-प्रियता और संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण हिंदू धर्म से वंचित होकर मुसलमानी मज़हब की शरण में जाने को विवश हुए होंगे; किंतु उनके हिंदुओं के से नाम, उनसे मिलती हुई रीति-रिवाज तथा हिंदू देवी-देवताओं के प्रति उनकी अविचल भक्ति से यह सिद्ध होता है, कि वे पूरी तरह कभी मुसलमान नहीं हुए। इसलिए यह स्पष्ट है कि पूर्वोल्लिखित बातें तानसेन को मुसलमान सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

ऐसा ज्ञात होता है, तानसेन का मुसलमानों के साथ अधिक संपर्क और सहवास तथा उनके आहार-विहार की स्वच्छंदता के कारण कट्टर पंथी हिंदुओं ने उनका बहिष्कार कर उन्हें मुसलमान घोषित कर दिया था। उन्होंने स्वेच्छा से कभी मुसलमानी मज़हब स्वीकार किया हो, यह बात प्रामाणिक ज्ञात नहीं होती है। इसकी पुष्टि उनके देहावसान-काल की घटना से भी होती है। मुंशी अबुलफजल ने 'अकबरनामा' में तानसेन की शव-यात्रा का उल्लेख करते हुए लिखा है कि शाहंशाह अकबर की आज्ञा से गायक और वादक गण विवाहोत्सव की भाँति गाते-बजाते हुए तानसेन के शव को अंतिम

संस्कार के लिए ले गये थे[१]। मुसलमानी मज़हब के किसी संप्रदाय में गान-वाद्य के साथ मुर्दा को दफनाने की प्रथा नहीं है; जब कि हिंदुओं में बड़े-बूढ़े की मृत्यु होने पर उसके शव का अंतिम संस्कार सदा ही इसी प्रकार हँसी-खुशी से किया जाता है। 'अकबरनामा' के उक्त उल्लेख से ज्ञात होता है कि तानसेन मृत्यु के समय तक भी मसलमान नहीं थे। इस प्रकार उनके उत्तर जीवन में मुसलमान हो जाने की किंवदंती निराधार हो जाती है। उपर्युक्त तथ्य के कारण यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि तानसेन जीवन पर्यंत हिंदू रहे थे।

शिक्षा-दीक्षा—

तानसेन की शिक्षा-दीक्षा के संबंध में कोई प्रामाणिक उल्लेख उपलब्ध नहीं है। इनसे संबंधित जो किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, उनसे ज्ञात होता है कि तानसेन की आरंभिक संगीत-शिक्षा उनके पिता मकरंद पांडे और उनके गुरु सूफी संत गौस मुहम्मद द्वारा ग्वालियर में हुई थी। बाद में स्वामी हरिदास से वृंदाबन में उन्हें संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त हुई थी।

जहाँ तक उनकी आरंभिक संगीत-शिक्षा की बात है, उसका ग्वालियर में होना असंगत ज्ञात नहीं होता है। मानसिंह तोमर ग्वालियर के विख्यात संगीतप्रिय नरेश थे। उनके प्रोत्साहन से उस समय के अनेक संगीतशास्त्री और गायक-शिरोमणि विविध स्थानों से आकर ग्वालियर में एकत्र हुए थे। उनमें बैजू, पांडवीय, बख्शू और महमूद लोहंग जैसे महान् संगीताचार्य भी थे। उनके कारण तानसेन के आरंभिक जीवन काल में ही ग्वालियर संगीत का एक विख्यात केन्द्र बन गया था।

---

[१] 'अकबरनामा' का अंग्रेजी अनुवाद, जिल्द २, पृ० ८८०

तानसेन का ग्वालियर से घनिष्ट संबंध सिद्ध ही है; अतः यह यह सर्वथा संभव है कि उन्होंने ग्वालियर में ही अपनी संगीत-शिक्षा प्राप्त की हो।

अब प्रश्न यह है, उन्होंने ग्वालियर में संगीत की शिक्षा किससे प्राप्त की ? 'संगीत'-संचालक श्रीप्रभुलाल गर्ग का मत है– "तानसेन की आरंभिक शिक्षा अपने पिता मकरंद के चरणों में बैठ कर हुई। अपने एक ध्रुपद में उन्होंने मकरंद को अपना संगीत-गुरु कहा है[१]।" हमारे देखने में वह ध्रुपद नहीं आया है, अतः हम नहीं कह सकते कि वह कहाँ तक प्रामाणिक है। मकरंद पांडे के विषय में यह भी निश्चित नहीं है कि वे संगीतज्ञ थे या नहीं। यदि वे संगीतज्ञ सिद्ध हो जाते हैं, तब उनके द्वारा तानसेन की आरंभिक संगीत-शिक्षा होने की बात संभव हो सकती है।

सूफी संत गौस महम्मद और तानसेन से संबंधित कई किवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। एक किवदंती है कि तानसेन का जन्म गौस महम्मद की दुआ से हुआ था। दूसरी प्रसिद्ध किवदंती है, तानसेन को आरंभिक संगीत-शिक्षा गौस महम्मद से प्राप्त हुई थी। फिर उन्हें हरिदास स्वामी के पास संगीत की उच्च शिक्षा के लिए वृंदाबन भेजा गया था। डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल का कथन है,—"तानसेन के पदों से भी स्पष्ट होता है कि गौस महम्मद और स्वामी हरिदास उनके संगीत-गुरु थे[२]।" तीसरी किवदंती है, सिद्ध फकीर गौस महम्मद ने तानसेन को अपना जूठा पान खाने को दिया था। इससे तानसेन को गायन कला में सिद्धि प्राप्त हो गई; किंतु उन्हें अपने पैतृक हिंदू धर्म से

---

[१] संगीत (फरवरी १९५९) का हरिदास अंक, पृष्ठ १८

[२] अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृष्ठ १०२

वंचित होना पड़ा। श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने भी गौस महम्मद से संगीत-शिक्षा प्राप्त कर तानसेन के मुसलमान होने की बात कही है[1]। इन किंवदंतियों की सत्यता विचारणीय है।

पहली बात यह है, तानसे के वे प्रामाणिक ध्रुपद उपलब्ध नहीं हैं, जिनमें उन्होंने स्पष्ट रूप से गौस महम्मद और स्वामी हरिदास को अपने संगीत-गुरु बतलाया हो। तानसेन का एक ध्रुपद इस पुस्तक में संकलित है, जिसमें उन्होंने मुसलमानी धर्म के अनेक पीर-पैगंबरों की वंदना करते हुए उनमें 'गौस' का भी नामोल्लेख किया है[2]। यदि उक्त उल्लेख का अभिप्राय सूफी संत गौस महम्मद से है, तो इतना ही कहा जा सकता है कि वे तानसेन के श्रद्धाभाजन थे। इससे उनके संगीत-गुरु होने का कोई संकेत नहीं मिलता है। गौस महम्मद का सूफी फकीर होना तो सिद्ध भी है; किंतु उनके संगीतज्ञ होने का कोई प्रमाण नहीं है। सूफी फकीर गायन कला के शागिर्द भी नहीं किया करते हैं।

बल्लभ संप्रदायी वार्ता में तानसेन की आरंभिक संगीत-शिक्षा किसी विधर्मी द्वारा होने की बात कही गई है; किंतु उसमें गौस महम्मद के नाम का स्पष्ट उल्लेख नहीं है[3]। संभव है,

---

[1] मध्यदेशीय भाषा (ग्वालियरी) पृष्ठ ८६ और ११२

[2] हैदर रसूल 'गौस' कुतुबुद्दीन अल्लाफकीर,
तानसेन कों दीजिये राग-रंग, तीन ग्राम ॥

[3] ये तानसेन ग्वालियर में एक ब्राह्मण के जन्मे। सो बरस पाँच के भए तब इनकों एक म्लेच्छ कौ संग भयौ। सो वह म्लेच्छ संगीत कला में बहोत निपुन हतौ। सो वानें तानसेन कों संगीत सिखायौ। सो तानसेन बहोत सुंदर गावन लागे।

— दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता (हरिराय जी कृत) द्वि०खं०, पृ० १५४

तानसेन को ग्वालियर में किसी मुसलमान संगीतशास्त्री से ही आरंभिक शिक्षा प्राप्त हुई हो; किंतु इस संबंध में गौस महम्मद का नामोल्लेख प्रामाणिक ज्ञात नहीं होता है।

मुंशी अबुलफजल ने 'अकबरनामा' में गौस महम्मद का जो चरित्र-चित्रण किया है, उससे उनके तानसेन के संबंध की सभी किंवदंतियाँ अप्रामाणिक सिद्ध हो जाती हैं। गौस महम्मद का असली नाम शेख हामिदुद्दीन था। उनकी मृत्यु ८० वर्ष की आयु में सं० १६२० में हुई थी। इस प्रकार उनका जन्म सं० १५४० के लगभग हुआ था। आरंभिक जीवन में वे एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे, किंतु बाद में वे फकीर हो गये थे। उनके रचे हुए दो ग्रंथ कहे जाते हैं, जिनके नाम 'जवाहर-उल-खमसा' और 'गुलजार-ए-चमन' हैं। 'अकबरनामा' में लिखा गया है, महम्मद गौस ने हुमायू के शत्रु गुजरात के शासक बहादुरशाह के साथ गुप्त संधि की थी। इसका भेद खुल जाने पर बैरमखाँ ने उन्हें गिरफ्तार करना चाहा, किंतु वे अपनी जान बचाने के लिए ग्वालियर चले गये। तभी से वे वहाँ फकीर के वेश में रहने लगे। अंत में ग्वालियर में ही उनकी मृत्यु भी हुई। इससे ज्ञात होता है, गौस महम्मद फकीर होकर सं० १६१३ से ग्वालियर में रहे थे। उस समय तानसेन प्रौढ़ावस्था के थे। वे तब तक संगीत-कला में पारांगत होकर ग्वालियर से चले गये थे। उन्होंने कई स्थानों में यथेष्ट यश-कीर्ति प्राप्ति की और फिर बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के दरबार की शोभा बढ़ाई। यदि अबुलफजल का उक्त कथन प्रामाणिक है, तब गौस महम्मद की दुआ से तानसेन के जन्म होने, उनसे संगीत-शिक्षा प्राप्त करने अथवा उनके जूठे पान से संगीत कला की सिद्धि होने आदि की सभी किंवदंतियाँ अप्रामाणिक सिद्ध हो जाती हैं।

यह ठीक है, गौस महम्मद अपने उत्तर जीवन में एक सिद्ध फकीर के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे। इससे संभव है, वे तानसेन के श्रद्धास्पद भी रहे हों, किंतु उनसे संबंधित अन्य सभी बातें कपोलकल्पित ज्ञात होती हैं। ऐसा मालूम होता है, गौस महम्मद की मृत्यु के बहुत दिनों बाद उनके मुरीदों ने उनका महत्व बढ़ाने के लिए इस प्रकार की बातें प्रचलित कर दी थीं।

वृंदाबन के विरक्त संत स्वामी हरिदास अथवा बाबा हरिदास डागुर भी तानसेन के संगीत-गुरु कहे जाते हैं। गायकों की मंडली में कुछ ऐसे ध्रुपद प्रचलित हैं, जिनमें तानसेन ने बाबा हरिदास को अपना गुरु स्वीकार किया है। इस प्रकार के ध्रुपद लिखित रूप में न होकर मौखिक रूप में ही उपलब्ध होते हैं। श्री बी. एन. निगम ने ऐसे दो ध्रुपद संकलित किये हैं, जिनके कुछ अंश यहाँ दिये जाते हैं—

पाई विद्या मैं परम, पुनि पाई है और अलख माई है,
गुरु हरिदास चरन निस्तारौ है ॥
मोकों जगत-पिता नें, तोकों जगत-माता नें, दोउ अधिकारौ है,
शिव गान संगत विस्तारौ है।
तेरी तान राम बान, मदनराय उड़गन समान, और गुनी भाजे,
भाजो है तानसेन, माता जीव दान देउ, तोरे चरन मोकों उभारौ है॥

अथवा

आज जनम सफल भयौ तानसेन, बाबा हरिदास हाथ पकरयौ,
श्री राग सिखायौ पहले-पहल।
मैं औरन सों सीखौ शाह महम्मद गौस पीर समान,
नायक बक्सू की समाधि में पहले-पहल[1] ॥

[1] संगीत (फरवरी १६५६) हरिदास अंक, पृष्ठ ३३

तानसेन ओौर स्वामी हरिदास

उपर्युक्त ध्रुपदों की अटपटी शब्द-योजना से ज्ञात होता है कि वे किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए गढ़े हैं; अतः वे अप्रामाणिक हैं। फिर भी स्वामी हरिदास अथवा हरिदास डागुर से संबंधित किवदंतियाँ विचारणीय हैं। कुछ संगीतज्ञों की धारणा है कि स्वामी हरिदास और हरिदास डागुर एक ही व्यक्ति थे। ध्रुपद की सुप्रसिद्ध चार बानियों में से एक 'डागुर बानी' के गायक होने के कारण वे 'हरिदास डागुर' कहलाते थे। गांधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के श्री विनयचंद्र मौद्गल्य ने ऐसा ही मत प्रकट किया है[1]। संगीतज्ञों के अतिरिक्त कुछ साहित्यकारों का भी इसी प्रकार का मत जान पड़ता है। श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने स्वामी हरिदास को हरिदास डागुर मानते हुए उनकी डागुरी बानी को ग्वालियर के राजा डूंगरेन्द्रसिंह से संबंधित बतलाया है[2]। श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने स्वामी हरिदास की कतिपय रचनाओं के साथ हरिदास डागुर ही नहीं, बल्कि अन्य हरिदासों की रचनाएँ भी मिला कर उन सभी को एक ही व्यक्ति समझा है[3]।

वास्तव में ये सब भ्रमात्मक कथन हैं। स्वामी हरिदास और हरिदास डागुर दोनों पृथक्-पृथक् संगीतज्ञ थे। दोनों की रचनाएँ भाषा, भाव, विषय और नाम-छाप के कारण इतनी भिन्न हैं कि उन्हें सरसरी निगाह से देखने पर भी एक व्यक्ति की रचनाएँ नहीं कहा जा सकता है। स्वामी हरिदास की रचनाओं में केवल

---

[1] साप्ताहिक हिंदुस्तान (१ जुलाई १९५६) में प्रकाशित लेख— भारतीय संगीत—गगन के सूर्य बाबा हरिदास।

[2] मध्यदेशीय भाषा (ग्वालियरी) पृष्ठ ८६—८७

[3] संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ, पृष्ठ ५१—५७

राधा-कृष्ण की नित्य बिहार लीलाओं का गायन हुआ है, जब कि हरिदास डागुर की रचनाओं में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति के साथ ही साथ साधारण नायिकाओं तक का कथन मिलता है। उन दोनों के समय में भी अंतर है। स्वामी हरिदास पूर्ववर्ती और हरिदास डागुर परवर्ती थे। इस संबंध में हमने स्वामी हरिदास विषयक अपनी अन्य पुस्तक में विस्तार से विचार किया है।

अब प्रश्न यह है कि संगीत के क्षेत्र में तानसेन स्वामी हरिदास के शिष्य थे अथवा हरिदास डागुर के ? तानसेन की रचनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वे भाषा, भाव और विषय की दृष्टि से स्वामी हरिदास की रचनाओं की अपेक्षा हरिदास डागुर की रचनाओं के अधिक निकट हैं। यदि गुरु की रचनाओं का प्रभाव शिष्य की रचनाओं पर होना आवश्यक समझा जाय, तब स्वामी हरिदास की अपेक्षा हरिदास डागुर को तानसेन का संगीत-गुरु कहा जा सकता है। उस दशा में तानसेन की गायकी को 'डागुरी बानी' मानना होगा। यदि तानसेन के ध्रुपद गायन की कोई विशिष्ट 'बानी' थी, तब वह 'गुवरहारी' अथवा 'गौरारी' ही हो सकती है, न कि 'डागुरी'। सन् १२७२ हिजरी में लिखित 'मअदन-उल-मूसिकी' नामक एक संगीत ग्रंथ में तानसेन को स्पष्ट रूप से 'गौरारी बानी' का प्रचारक बतलाया गया है। तानसेन ने अपने एक ध्रुपद में स्वयं 'गुवरहारी' अथवा 'गौरारी' बानी को सर्वोत्तम और 'डागुरी' को उससे कहीं घट कर तीसरे दर्जे की बानी कहा है[1]। यदि तानसेन हरिदास डागुर के शिष्य होते, तब वे इस प्रकार का कथन नहीं कर

---

[1] बानी चारौं के ब्यौहार सुनि लीजै, हो गुनी जन !

तब पावै यह विद्या सार।

राजा गुवरहार, फौजदार खंडार, दीवान डागुर, बक्सी नौहार ॥
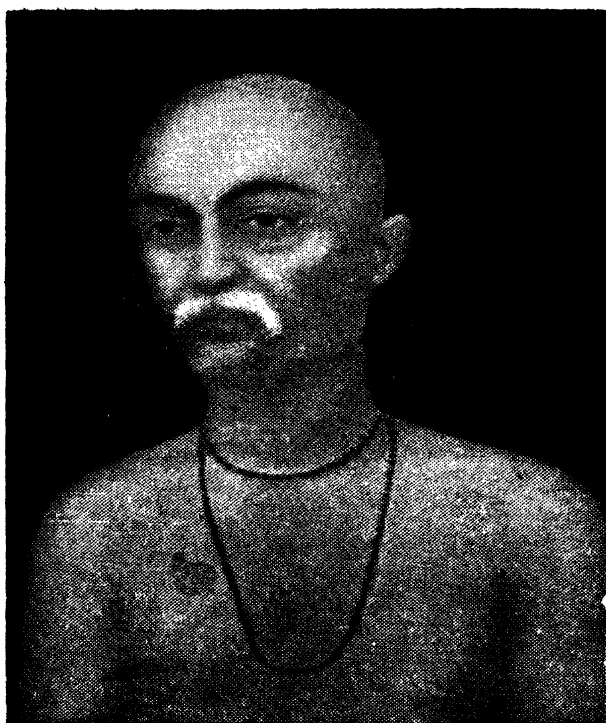
स्वामी हरिदास (डागुर)

[कलकत्ता की श्री प्रेमचंद्र बोराल आर्ट गैलरी में इसे स्वामी हरिदास का प्रामाणिक चित्र माना जाता है। इसकी आकृति, विशेषकर मूंछों के कारण, स्वामी जी के संप्रदाय में प्राप्त चित्रों से भिन्न ज्ञात होती है। संभवतः यह हरिदास डागुर का चित्र है]

सकते थे। फिर हरिदास डागुर तानसेन के परवर्ती संगीतज्ञ ज्ञात होते हैं। श्री वी. एन. निगम ने शाहजहाँ के दरबारी गायक जगन्नाथ कविराय का एक ध्रुपद उद्धृत किया है[1]। उसमें कतिपय विख्यात संगीतज्ञों का क्रमानुसार नामोल्लेख किया गया है। यदि यह क्रम कालानुसार है, तब हरिदास डागुर तानसेन ही नहीं, वरन् धौंधी के भी परवर्ती सिद्ध होते हैं। वह ध्रुपद इस प्रकार है—

सर्व कला संपूरन, मति अपार विस्तार,
नाद कौ नायक 'बैजू' 'गोपाल'।
ता पाछै 'बक्सू' बिहँसि बस कीन्हौं, 'महमू' महि मंडल में
उदोत चहुँचक भरौ, डिढ़ विद्या निधान,
सरस धरु 'करन' डिढ़ ताल॥
'भगवंत' सुर भरन, 'रामदास' जसु पायौ,
'तानसेन' जगतगुरु कहायौ, 'धौंधी' बानी रसाल।
सुरति विलास 'हरिदास डागुर' जगन्नाथ कविराय,
तिनके पग परसिबे कौं स्याम राम रंग लाल॥

इस प्रकार हरिदास डागुर को तानसेन का संगीत-गुरु बतलाने वाली किंवदंती निराधार सिद्ध होती है। अब स्वामी हरिदास से संबंधित किंवदंती पर विचार करना चाहिए। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि स्वामी हरिदास संगीत कला के महान् ज्ञाता और अद्वितीय गायक थे। इसके साथ ही वे वैष्णव धर्म के अंतर्गत एक विशिष्ट भक्ति संप्रदाय के प्रवर्त्तक भी थे। उनके संप्रदाय में गुरु-शिष्य का जो अर्थ होता है, उसके कारण तानसेन को स्वामी जी का शिष्य कदापि नहीं कहा जा सकता है। हरिदासी संप्रदाय में विरक्त शिष्यों की परंपरा है;

[1] संगीत (हरिदास अंक) पृष्ठ ३०

जब कि तानसेन गृहस्थ थे। इस संप्रदाय के गृहस्थ भी किसी अन्य देवी-देवता की भक्ति न कर एक मात्र श्री बिहारी जी में ही श्रद्धा रखते हैं; जब कि तानसेन ने अपनी रचनाओं में विविध देवी-देवताओं और पीर-पैगम्बरों की स्तुति-वंदना की है। उनकी रचनाओं में स्वामी जी की भक्ति-भावना की झलक तक दिखलाई नहीं देती है। किसी समकालीन इतिहासकार ने भी स्वामी जी को तानसेन के गुरु होने का उल्लेख नहीं किया है। ऐसी दशा में इस किंवदंती की प्रामाणिकता में संदेह होता है; किंतु यह इतनी अधिक प्रसिद्ध है कि इसे एक दम कपोल-कल्पित भी नहीं कहा जा सकता है।

स्वामी हरिदास और तानसेन के गुरु-शिष्य होने की किंवदंती कब से प्रचलित है, इसका ठीक-ठीक काल-निर्णय करना तो संभव नहीं है; किंतु इसका दो सौ वर्ष से भी अधिक पुराना उल्लेख उपलब्ध है। किशनगढ़ के राजा भक्तवर नागरीदास द्वारा सं० १८०० में रचित 'पद प्रसंग माला' में इस प्रसंग का इस प्रकार कथन हुआ है—

"एक समैं अकबर पातसाह तानसैन सौं बूझी जु तैं कौन सौं गाइबौ सीख्यौ; कोऊ तोऊ तैं अधिक गावै है? तब वानैं कही जु मैं कौन गनती में हूँ। श्री बृंदाबन में हरिदास जी नाम वैष्णव हैं, तिनकौ गाइबे कौ हौं शिष्य हूँ। यह सुनि पातसाह तानसैन के संग जलघरी लै श्री बृंदाबन स्वामी जी पै आयौ।"

राजा नागरीदास ने किसी परंपरागत अनुश्रुति के आधार पर ही उक्त कथन किया होगा, अतः यह किंवदंती काफी पुरानी मालूम होती है। ऐसा ज्ञात होता है, चाहें तानसेन स्वामी जी के विधवत् शिष्य न हों, किंतु उन्होंने संगीत के क्षेत्र में किसी समय उनसे कुछ प्राप्त अवश्य किया था।

यह घटना किस काल की हो सकती है, इसके संबंध में आचार्य वृहस्पति का कथन है—

"हमें ऐसा लगता है कि सन् १५१८ (सं० १५७५) में ग्वालियर का किला विक्रमाजीत के हाथ से निकल जाने के पश्चात् तानसेन वृंदाबन आकर कुछ दिनों के लिए श्री स्वामी जी के चरणों में बैठा हो, परंतु उसके दरबारी संस्कारों ने उसे वहाँ अधिक न टिकने दिया हो[1] ।"

बल्लभ संप्रदाय के वार्ता साहित्य से ज्ञात होता है, तानसेन ने अपने उत्तर जीवन में अष्टछाप के विख्यात संगीताचार्य गोविंद गोस्वामी से भी कीर्तन पद्धति की गायन कला का शिक्षण प्राप्त किया था। 'दो सौ बावन वैष्णवन' की वार्ता में लिखा है, एक बार तानसेन गोकुल में गोसाईं विट्ठलनाथ जी के पास गये थे। वहाँ पर उन्होंने गोविंदस्वामी का गायन सुना। तानसेन उस भक्तिपूर्ण गायन से इतने प्रभावित हुए कि वे गोसाईं जी के सेवक बन गये और उन्होंने गोविंद स्वामी से कीर्तन गान की शिक्षा प्राप्त की[2] । इसके पश्चात् वे बराबर गोसाईं जी के संपर्क में रहे । नरवरगढ़ के राजा आशकरन ने भी तानसेन की प्रेरणा से ही गोसाईं विट्ठलनाथ जी के सेवक बनकर गोविंदस्वामी जी से कीर्तन की शिक्षा प्राप्त की थी[3] । वार्ता में तो यहाँ तक लिखा गया है, विट्ठलनाथ जी के संपर्क में आने के पश्चात् तानसेन बल्लभ संप्रदाय के निष्ठावान वैष्णव बन गये थे । वे राधा-कृष्ण के लीला विषयक ध्रुपदों की रचना

[1] संगीत (हरिदास अंक) पृ० ११

[2] दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता (हरिराय जी कृत) द्वि.खं. पृ.१५६

[3] ,, ,, ,, १८६ से १९३

कर उन्हें श्रीनाथ जी के सन्मुख गाया करते थे। उस समय उन्होंने अकबरी दरबार में जाना भी स्थगित कर दिया था[१]।

तानसेन की रचनाओं में राधा-कृष्ण की विविध लीलाओं के जो ध्रुपद मिलते हैं, उनसे उनके बल्लभ संप्रदाय से संबंधित होने की संभावना तो हो सकती है; किंतु उनका अकबरी दरबार से उदासीन होकर श्रीनाथ जी के मंदिर में कीर्तन करने की बात प्रामाणिक ज्ञात नहीं होती है। 'अकबरनामा' के अनुसार तानसेन मृत्यु पर्यंत अकबरी दरबार से संबंधित रहे थे। वे उससे अवकाश प्राप्त कर अपनी इच्छानुसार ग्वालियर भी नहीं जा सके थे।

आचार्य वृहस्पति ने बल्लभ संप्रदायी तानसेन को इन तानसेन से पृथक् एक दूसरे कलाकार होने की संभावना प्रकट की है[२]। 'तुजुक जहाँगीरी' में एक तानसेन कलावंत की चर्चा है, जो जहाँगीर के शासन-काल में विद्यमान था; किंतु वार्ता के कथन से उस तानसेन कलावंत की संगति नहीं बैठती है।

तानसेन की शिक्षा-दीक्षा से संबंधित उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि उन्हें ग्वालियर के विख्यात संगीतज्ञों से, जिनमें बक्सू और महमूद जैसे मुसलमान भी हो सकते हैं, संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई थी। फिर उन्होंने स्वामी हरिदास और गोविंदस्वामी जैसे भक्त संगीताचार्यों से अपनी संगीत-शिक्षा को पूर्णता प्रदान की थी। उनके आरंभिक जीवन पर किसी विशिष्ट संप्रदाय का प्रभाव लक्षित नहीं होता है; किंतु अपने उत्तर जीवन में वे बल्लभ संप्रदाय से प्रभावित जान पड़ते हैं।

---

[१] दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता (हरिराय जी कृत) दि.खं. पृ. १५७

[२] संगीत (हरिदास अंक) पृष्ठ १०

जीविकोपार्जन—

ग्वालियर में संगीत-शिक्षा प्राप्त कर तानसेन एक उत्कृष्ट गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी ख्याति इतनी अधिक हुई कि वे संगीत द्वारा जीविकोपार्जन ही नहीं, वरन् आदर-सन्मान और यश-कीर्ति भी प्राप्त करने में समर्थ हुए। यदि तानसेन की रचनाओं में उपलब्ध 'छत्रपति राजा राम' का ध्रुपद प्रामाणिक है और फजलअली कव्वाल कृत 'कुल्लियात ग्वालियर' में उल्लिखित राजा विक्रमाजीत द्वारा 'तानसेन' उपाधि दिये जाने की बात भी ठीक है; तब यह कहा जा सकता है कि ग्वालियर के संगीतज्ञ नरेश राजा मानसिंह तोमर और उनके पुत्र राजा विक्रमाजीत ने अपने राज्य के उस नवोदित कलाकार को सर्व प्रथम प्रोत्साहन और प्रश्रय दिया था।

राजा विक्रमाजीत दुर्भाग्य से केवल तीन वर्ष तक ही ग्वालियर पर राज्याधिकार कायम रख सके थे। सं० १५७६ में जब उनका राज्य छिन्न-भिन्न हो गया, तब ग्वालियर के प्रसिद्ध संगीतज्ञों की मंडली भी बिखर गई। वहाँ के जगविख्यात् गायकों और संगीताचार्यों को अपनी जीविका के लिए अन्यत्र जाने को विवश होना पड़ा। ग्वालियर का सुप्रसिद्ध गायक बक्सू उसी समय कालिंजर के राजा कीरत के आश्रय में चला गया था। वहाँ से उसे गुजरात के सुलतान बहादुर (सं० १५८३ से १५९३) ने अपने दरबार में बुला लिया था।

ऐसा ज्ञात होता है, उसी परिस्थिति में तानसेन भी ग्वालियर छोड़ कर अन्यत्र जाने को वाध्य हुए थे। शिवसिंह सेंगर ने लिखा है, तानसेन सर्वप्रथम शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खाँ सूरी के आश्रय में रहे[1]। दौलतखाँ की मृत्यु होने पर

[1] शिवसिंह सरोज, पृ० ४२९

वे बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के दरबारी गायक नियुक्त हुए थे। उस समय तक तानसेन की पर्याप्त प्रसिद्धि हो चुकी थी। राजा रामचंद्र ने उस उच्च कोटि के कलाकार को प्राप्त कर अपने को धन्य माना। उन्होंने तानसेन को अत्यंत आदर पूर्वक अपने दरबार में रखा था और उन्हें सन्मान सहित विपुल धन-वैभव प्रदान किया था। तानसेन ने अपने अनेक ध्रुपदों में राजा रामचंद्र की गुणग्राहकता और उदारता की भरपूर प्रशंसा की है।

राजा रामचंद्र के दरबार में रहने से तानसेन की व्यापक प्रसिद्धि हुई थी। जब उनके गायन की प्रशंसा उस समय के विख्यात मुगल सम्राट अकबर ने सुनी, तो वे तानसेन को अपना दरबारी गायक बनाने के लिए लालायित हुए। अबुलफजल ने लिखा है, सम्राट अकबर ने अपने शासन के सातवें वर्ष तानसेन को अपने दरबार में उपस्थित होने का निमंत्रण भेजा था[1]। सम्राट का एक विश्वसनीय कर्मचारी जलाल खाँ कूरसी शाही फरमान सहित तानसेन को अपने साथ लिवा लाने को भेजा गया। राजा रामचंद्र ने विवश होकर अपने प्रिय गायक को बहुमूल्य उपहार देकर विदा किया। इस प्रकार सं.१६१६-२० में तानसेन का अकबरी दरबार में प्रवेश हुआ[2]। अबुलफजल ने 'आईने अकबरी' में लिखा है, तानसेन के प्रथम गायन पर ही सम्राट अकबर ने उन्हें २ लाख का पुरस्कार दिया था।

अपनी अपूर्व गायन कला के कारण ही तानसेन को सम्राट अकबर द्वारा विपुल धन के अतिरिक्त उनके दरबारी नवरत्नों में स्थान भी प्राप्त हुआ था। प्रतापी मुगल सम्राट के

---

[1] आईने अकबरी, अंग्रेजी संस्करण, जिल्द १, पृ० ४४५

[2] अकबरनामा, भाग १, पृ० २७९–८०

प्रिय गायक होने के कारण तानसेन की प्रसिद्धि समस्त देश में व्याप्त हो गई। उन्होंने अकबर के आश्रय में रहते हुए असीम आदर तथा विपुल वैभव प्राप्त किया था। वे अपने अंतिम काल तक अकबरी दरबार से सम्बद्ध रहे थे।

अकबर-हरिदास भेंट—

ऐसी किंवदंती है, तानसेन द्वारा स्वामी हरिदास के अद्भुत संगीत की प्रशंसा सुन कर सम्राट अकबर को उनसे मिलने की प्रबल उत्कंठा हुई थी। स्वामी हरिदास संसारत्यागी विरक्त संत थे। उनकी गायन कला उनके उपास्य ठाकुर बिहारी जी के लिए ही अर्पित थी। वे किसी भी दशा में किसी राजा-महाराजा को अपना गायन सुनाना पसंद नहीं करते थे। कहते हैं, अपनी उत्सुकता की पूर्ति के लिए सम्राट अकबर छद्म वेश में तानसेन के साथ वृंदाबन गये थे। वहाँ पर उन्हें स्वामी जी के गायन सुनने का सुयोग प्राप्त हुआ और वे उसके दिव्य सौंदर्य पर मुग्ध हो गये।

अब से दो शताब्दी पूर्व रचित 'पद प्रसंग माला' में भक्तवर राजा नागरीदास ने इस घटना का इस प्रकार उल्लेख किया है—

पहिलै तानसैन गायौ। विनती करी महाराज, कछु आपु हू बोलियै। तब श्री हरिदास जी अलापचारी करी मलार राग की। चैत-वैसाख कौ महीना हतौ। तब ताही बेर घटा घुमड़ि आई। मोर बोलनि लागे। तब नयौ बनाइ विष्न पद गायौ। तब ताही बेर वर्षा होन लागी। सो वह पद—ऐसी रितु सदा-सरवदा जो रहै बोलति मोरनि।

यहाँ यह उल्लेखनीय है,स्वामी जी द्वारा गाये हुए उक्त पद को नागरीदास जी ने 'विष्णुपद' कहा है; यद्यपि उनकी रचनाओं

को साधारणतः 'ध्रुपद' कहा जाता है। अकबर-हरिदास भेंट का उल्लेख किसी समकालीन इतिहासकार ने नहीं किया है। इसका लिखित विवरण सर्व प्रथम नागरीदास कृत 'पद प्रसंग माला' में और फिर किशोरदास कृत 'निज मत सिद्धांत' तथा भगवतरसिक की 'वाणी' में मिलता है। ब्रज के लोक-जीवन में और स्वामी हरिदास जी के संप्रदाय में इस घटना की बहुत पुराने समय से प्रसिद्धि चली आ रही है; अतः समकालीन ऐतिहासिक प्रमाण न मिलने पर भी इसकी प्रामाणिकता में संदेह नहीं किया जा सकता है।

इस महत्त्वपूर्ण घटना के यथार्थ काल का ज्ञान नहीं होता है; किंतु सामयिक घटनाओं की संगति से उसका निश्चय किया जा सकता है। तानसेन सं० १६१६–२० में अकबरी दरबार में आये थे और स्वामी हरिदास का देहावसान सं० १६३२ में हुआ था। इस प्रकार इस घटना का निश्चित काल सं० १६२० से १६३२ के बीच का ही हो सकता है।

वार्ता साहित्य से ज्ञात होता है, तानसेन से सूरदास का एक पद सुन कर सम्राट अकबर महात्मा सूरदास से मिले थे, और उनके गायन से अत्यंत प्रभावित हुए थे[१]। अकबर-सूरदास भेंट का भी निश्चित काल ज्ञात नहीं होता है, किंतु हमने सिद्ध किया है कि उक्त भेंट सं० १६२३ में मथुरा में हुई थी[२]। सं० १६२३ में सम्राट अकबर का मथुरा-वृंदाबन जाना प्रामाणित है, अतः यह सर्वथा संभव है कि उसी समय वे स्वामी हरिदास से भी वृंदाबन में मिले हों। श्री ग्राउस ने इस घटना का काल सं० १६३० अनुमानित किया है।

---

१ अष्टसखान की वार्ता, पृष्ठ ११५

२ अष्टछाप परिचय, पृ० १२८, १३६। सूर निर्णय, पृष्ठ ६१

अकबर–हरिदास भेंट

स्वामी हरिदास गा रहे हैं। उनके समक्ष तानसेन बैठे हैं और सम्राट अकबर खड़े हैं

इस घटना से संबंधित कुछ चित्र भी मिलते हैं, जो किशनगढ़ नरेश के चित्र-संग्रह में, वृंदाबन के देवालयों में और दिल्ली तथा अन्य स्थानों के संग्रहालयों से सुरक्षित हैं। ये चित्र १८ वीं शती अथवा उसके बाद के हैं। इनमें स्वामी हरिदास जी तानसेन और अकबर के समक्ष गाते हुए चित्रित किये गये हैं। स्वामी जी के सामने तानसेन बैठे हुए हैं और अकबर किसी चित्र में बैठे हुए और किसी में खड़े हुए दिखाये गये हैं।

इन चित्रों में सम्राट अकबर की आयु सबसे अधिक, उससे कम स्वामी हरिदास की और सबसे कम तानसेन की चित्रित की गई है। वास्तव में स्वामी हरिदास सबसे अधिक आयु के थे। उनसे कम आयु तानसेन की और सबसे कम सम्राट अकबर की थी। इस प्रकार ये चित्र उक्त घटना का समर्थन तो करते हैं; किंतु अपने अशुद्ध चित्रण के कारण उसकी प्रामाणिकता में संदेह भी उत्पन्न करते हैं। ऐसा ज्ञात होता है, इन चित्रों के निर्माण के समय उनके निर्माताओं की जानकारी में अकबर-हरिदास भेंट की किंवदंती तो थी, किंतु उनके समक्ष कोई प्राचीन चित्र नहीं था। उन्होंने अपने सीमित ऐतिहासिक ज्ञान से उस प्रसिद्ध किंवदंती का चित्रण मात्र कर दिया था; जब कि उनमें चित्रित आकृतियों को वे यथार्थ स्वरूप प्रदान नहीं कर सके थे।

रूप-रंग और वेश-भूषा—

तानसेन के जो कई चित्र मिलते हैं, उनसे उनके रूप-रंग, आकार-प्रकार और वेश-भूषा का कुछ बोध होता है। इन चित्रों में उन्हें सम्राट अकबर, स्वामी हरिदास और जहाँगीर के साथ तथा अकेले भी चित्रित किया गया है। तानसेन का सबसे

प्राचीन चित्र १७ वीं शताब्दी के अंत का उपलब्ध है। उक्त चित्र उदयपुर महाराणा के संग्रह में था; किंतु बाद में उसे दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय को अर्पित कर दिया गया। बंबई के प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम और अलाहाबाद के प्रयाग संग्रहालय में भी तानसेन के चित्र हैं।

इन चित्रों से ज्ञात होता है, तानसेन का रंग साँवला और उनका आकार मध्यम था। उनके होंठ पर पतली मूंछ थी। वे धारीदार अथवा बिना धारी की पगड़ी तथा सफेद जामा पहिनते थे। उनकी कमर में उस समय के राजकीय पुरुषों की प्रथा के अनुसार छुरा-चाकू आदि शस्त्र लगे हुए हैं। इन चित्रों में वे प्रायः ताली बजाने की मुद्रा में संगीत रत दिखालाये गये हैं।

रचनाएँ—

तानसेन की प्रमुख रचनाएँ वे अनेक ध्रुपद हैं, जो लिखित अथवा मौखिक रूप में उपलब्ध होते हैं। लिखित रूप में वे संगीत के विविध ग्रंथों में बिखरे पड़े हैं और अलिखित रूप में वे पुराने घरानों से संबंधित कलावंतों के कंठस्थ हैं। तानसेन के लिखित ध्रुपदों का सबसे बड़ा संकलन 'राग कल्पद्रुम' में हुआ है। इसके अनंतर 'नाद विनोद' तथा अन्य संगीत ग्रंथों में भी उनका थोड़ा-बहुत संग्रह मिलता है। अभी तक लिखित ध्रुपदों को ही प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इसके फल स्वरूप तानसेन के लगभग तीनसौ ध्रुपद सुलभ हो गये हैं। यदि गायकों के कंठस्थ ध्रुपदों को भी संकलित कर लिया जाय, तब इस संख्या में और भी वृद्धि हो सकती है। इन ध्रुपदों में कितने प्रामाणिक हैं और कितने अप्रामाणिक, इसका निश्चिय भी तभी हो सकता है, जब एक बार लिखित और अलिखित सभी रचनाओं का संकलन हो जाय।

संगीत-सम्राट तानसेन

तानसेन के ये ध्रुपद स्फुट रचनाओं के रूप में हैं। इन्हें उन्होंने अपने गायन के लिए रचे थे। इनके अतिरिक्त ग्रंथ रूप में भी उनके नाम से कुछ रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। 'मिश्रबंधु विनोद' में उनके तीन ग्रंथों का उल्लेख हुआ है। उनके नाम हैं– १. संगीतसार, २. रागमाला और ३. गणेश स्तोत्र। पहिले दोनों ग्रंथ हस्त लिखित और मुद्रित रूप में उपलब्ध हैं, किंतु गणेश स्तोत्र अप्राप्य है। उपलब्ध रचनाओं के विषय में अभी तक निश्चय नहीं हुआ है कि इनमें तानसेन की प्रामाणिक रचनाएँ कौन सी हैं।

'संगीत-सार' की एक हस्त लिखित प्रति दरबार पुस्तकालय रीवाँ के सरस्वती भंडार में सुरक्षित है। इसमें ८२ पृष्ठ हैं। इसका लिपिकाल सं० १८८८ है और इसे किसी हेठासिंह ने लिपिबद्ध किया था। इसकी ग्रंथ सं० १२ और बस्ता सं० ११४ है। इसका कुछ भाग श्री कृष्णानंद व्यास ने सर्व प्रथम सं०१८६८ में अपने सुप्रसिद्ध संगीत ग्रंथ 'राग कल्पद्रुम' में प्रकाशित किया था। इसे समग्र रूप में डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल ने अपने शोध प्रबंध 'अकबरी दरबार के हिंदी कवि' के परिशिष्ट में प्रकाशित किया है। इसी को बाद में श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी कृत 'कवि तानसेन और उनका काव्य' नामक पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। इस ग्रंथ की रचना दोहों में हुई है, जिनकी संख्या १८४ है। इनके अतिरिक्त इसमें १ कवित्त और १ सवैया भी है।

इस ग्रंथ में संगीत के विविध अंग नाद, तान, स्वर, राग, वाद्य और ताल का विवेचन किया गया है। तान के अंतर्गत शुद्ध तान, कूट तान, ग्राम और औड़व, षाड़व आदि का तथा राग के अंतर्गत श्रुति, मूर्च्छना, अलंकार, स्वर, आलाप आदि का वर्णन है। इस ग्रंथ का सबसे बड़ा अंश ताल विषयक है, जिसमें

ताल-मात्रा, ताल-स्वरूप, ताल-भेद और गमक का कथन करने के अनंतर देशी और चच्चुट के अंतर्गत अनेक तालों का विस्तृत विवेचन नाम तथा लक्षण सहित किया है।

'राग माला' भी संगीत विषयक ग्रंथ है। यह गो० गोवर्धनलाल द्वारा संपादित होकर लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ था। बाद में इसे श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'कवि तानसेन और उनका काव्य' में प्रकाशित किया है। इसकी रचना भी दोहों में हुई है, जिनकी संख्या ३०८ है। इस प्रकार यह ग्रंथ 'संगीत सार' से आकार में बड़ा है; किंतु इसके पूर्वार्द्ध के अधिकांश दोहे संगीत सार के दोहों से मिलते हुए हैं। दोनों ग्रंथों का आरंभ भी एक से दोहों से हुआ है। यथा—

सुर मुनि कों परनाम करि, सुगम कियौ संगीत।
'तानसेन' रस सहित हित, जानैं गायन प्रीत ॥१॥

गीत वाद्य अरु निरत कौ, कह्यौ नाम संगीत।
'तानसेन' मत सहस गनि, भरत मतहिं मन मीत ॥२॥

द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जान।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसि समान ॥३॥

गीत वाद्य और अरु नृत्य के, रस सर्वस गुन जोय।
'तानसेन' उपजत नहीं, सो संगीत न होय ॥४॥

—संगीत सार

सुर मुनि कौं परनाम करि, सुगम करौं संगीत।
'तानसेन' बानी सरस, जान गान की प्रीत ॥१॥

गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम संगीत।
'तानसेन' सु मतंग मुनि, भरत मते हो थीत ॥२॥

द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जान।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसनु मान॥३॥
गीत वाद्य अरु नृत्य रस, साधारन गुन जोइ।
'तानसेन' उपजै नहीं, जो संगीत न होइ॥४॥

—राग माला

'राग माला' में पहिले संगीत और नाद के लक्षण तथा भेद बतलाने के बाद नाड़ी, तान, ग्राम, स्वर, श्रुति, मूर्च्छना, राग, आलाप, गमक, गान विद्या के गुण दोष, गान-भेद और कवि-भेद का वर्णन किया गया है। फिर प्रबंध गीताध्याय शीर्षक में प्रबंध, गण-विचार और वर्ग-विचार का कथन कर राग संकीर्णाध्याय में विविध राग-रागनियों का विस्तार पूर्वक विवेचन किया है।

'संगीत सार' और 'राग माला' दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि संगीत-लक्षण, संगीत-भेद, नाद, तान, स्वर का विवेचन दोनों में प्रायः समान है। उनसे संबंधित दोहे भी दोनों ग्रंथों में प्रायः एक से हैं। 'संगीत सार' में ताल विषयक विवेचन की विशेषता है और 'राग माला' में राग-रागनियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। दोनों ग्रंथों में दिये हुए प्रायः एक से दोहों की संख्या इस प्रकार है—

संगीतसार-दोहा सं० १, २, ३, ४, ५, ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १६, २०, २१, २३, २४, २५, २७, २६, ३०, ३३, ३५, ३७, ३८, ३६, ४०, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६३, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७२, ७३, ७४, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, १००, १०१, १०२, १०३, १०५, १०६, १०७, १०८, १०६, ११०, ११४, ११५, ११६, ११८, ११६, १२१ कुल संख्या ८६

राग माला—१, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३३, ३७, ३९, ४०, ४१, ४२, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७२, ७३, ७४, ७५, ७८, ७९, ८०, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, १००, १०२, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, १२४, १२५, १२६, १२८, १२९, १३० कुल सं० ८९

उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि दोनों ग्रंथों के आरंभिक १३० दोहों में से ८९ दोहे एक से हैं। यदि दोनों ग्रंथों को मिलाकर उन्हें एक ग्रंथ के रूप में संपादित किया जाय, तो समान भाग की पुनरावृत्ति बचाये जाने के साथ ही साथ वह संगीत विषयक एक सर्वांगपूर्ण रचना भी हो सकती है। इन ग्रंथों से उनके रचयिता का संगीत संबंधी प्रचुर अनुभव और अपार ज्ञान सिद्ध होता है।

तानसेन के ध्रुपदों को परिश्रम पूर्वक संकलित कर उन्हें प्रकाशित करने का सर्व प्रथम प्रयास श्री कृष्णानंद व्यास ने सं० १८९८ में किया था। उनके सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'रागकल्पद्रुम' में अन्य संगीतज्ञों की दुर्लभ रचनाओं के साथ ही साथ तानसेन के भी बहुसंख्यक ध्रुपद प्रकाशित हुए हैं। संगीत के अन्य ग्रंथों में भी तानसेन के थोड़े-बहुत ध्रुपद मिलते हैं, किंतु उनकी जितनी अधिक संख्या में 'रागकल्पद्रुम' में है, उतनी किसी भी एक ग्रंथ में नहीं है। श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने 'रागकल्पद्रुम' में से तानसेन के ध्रुपदों को संकलित कर उन्हें 'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' और 'कवि तानसेन और उनका काव्य' नामक अपनी दो पुस्तकों में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में भी अन्य

उपलब्ध ध्रुपदों के साथ 'राग कल्पद्रुम' के संग्रह को भी परिष्कृत रूप में प्रकाशित किया गया है।

तानसेन के उपलब्ध ध्रुपदों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वे अधिकतर देव-वंदना, ज्ञान-भक्ति, राज-प्रशंसा, संगीत-विवेचन, नायिकाभेद और कृष्ण-लीला से संबंधित हैं। देव-वंदना विषयक ध्रुपदों में गणेश, सरस्वती, शंकर, दुर्गा, प्रभृति हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति की गई है। इसके साथ ही उन्होंने मुसलमानी धर्म के पीर-पैगम्बरों के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। ज्ञान-भक्ति के ध्रुपदों में ब्रह्म की व्यापकता का कथन है। राज-प्रशंसा संबंधी ध्रुपदों में बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र बघेला और सम्राट अकबर की प्रशंसा की गई है। इनमें अकबर संबंधी ध्रुपद अधिक संख्या में हैं। प्रायः २०–२२ ध्रुपदों में तो अकबर की प्रशंसा ही है। इनके अतिरिक्त अन्य ८–१० ध्रुपदों में भी उनके नाम का उल्लेख हुआ है। उन ध्रुपदों में प्रतापी मुगल सम्राट के वैभव, प्रताप और यश का वर्णन किया गया है। राजा रामचंद्र बघेला से संबंधित ध्रुपद भी पर्याप्त संख्या में हैं। उनमें बांधवगढ़-नरेश की उदारता, दान-शीलता और प्रताप का कथन हुआ है। उनसे ज्ञात होता है कि तानसेन राजा रामचंद्र के प्रति सम्राट अकबर की अपेक्षा भी अधिक आकृष्ट थे। उनके कई ध्रुपद ऐसे हैं, जिनमें अकबर के समक्ष भी राजा रामचंद्र की प्रशंसा की गई है। एक ध्रुपद में खानखाना का उल्लेख हुआ है। संगीत विषयक ध्रुपदों में संगीत के विविध अंगों का नामोल्लेख और तत्संबंधी अनेक रूपकों का कथन है। कई ध्रुपदों में संगीत के चमत्कार और बैजू-गोपाल की प्रतियोगिता का वर्णन है। एक ध्रुपद में उन्होंने ध्रुपद गायकी की चार बानियों का नामोल्लेख किया है।

नायिकाभेद संबंधी ध्रुपदों में नायिकाओं के रूप, सौन्दर्य और उनकी विविध चेष्टाओं का कथन है। कृष्ण-लीला विषयक ध्रुपदों में भगवान् श्री कृष्ण की बाल और निकुंज लीलाओं के वर्णन के साथ ही साथ उनके वेणु-वादन और होली-खेल का रसपूर्ण कथन किया गया है।

ये समस्त ध्रुपद गायन के लिए रचे गये थे, अतः इनका अधिकतर महत्व संगीत विषयक रचनाओं के कारण है। जहाँ तक इनके कवित्व का संबंध है, वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। नायिकाभेद और कृष्ण-लीला विषयक ध्रुपद काव्य की दृष्टि से भी कुछ अच्छे कहे जा सकते हैं।

संगीत संबंधी योग्यता—

तानसेन अपने समय के सर्वाधिक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं। वे ध्रुपद गायकी के विख्यात गायक थे। उन्होंने ध्रुपद शैली को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करने का भारी प्रयास किया था। वे दीपक राग के अनुपम गायक थे। गायन कला के उपलक्ष में जितना यश और वैभव तानसेन को मिला था, उतना किसी भी कलाकार को किसी समय प्राप्त नहीं हुआ। इसका कारण जहाँ उनका उस समय के सबसे प्रतापी मुगल सम्राट अकबर के दरबार से सम्बद्ध होना है, वहाँ उनकी अपूर्व गायन शैली और संगीत विषयक योग्यता भी है। सम्राट अकबर और उनके दरबार के अनेक संगीत-प्रेमियों की यह धारणा थी कि तानसेन के समान उच्च कोटि का गायक पिछले एक हजार वर्ष में नहीं हुआ। इसका उल्लेख मुंशी अबुलफजल ने 'आईने अकबरी' में किया है और इसका समर्थन सम्राट जहाँगीर कृत 'तुजुकजहाँगीरी' में हुआ है। बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के समय में रचे हुए माधव कृत 'वीरभानूदय काव्यम्' में भी लिखा गया है कि

तानसेन के समान कलाविद् इस धरणी पर न तो पहले हुआ, न इस समय है, और न आगे होने की संभावना है[1]।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त कथन सरासर अतिशयोक्ति पूर्ण है; क्यों कि तानसेन के समय में ही उनकी टक्कर के कई विख्यात गायक थे, जिनसे उनकी संगीत-प्रतियोगिताएँ भी हुई थीं। किंवदंतियों के अनुसार उनमें तानसेन की पराजय प्रसिद्ध है। निश्चय ही इन किंवदंतियों की प्रामाणिकता संदिग्ध है, किंतु स्वामी हरिदास और गोविंदस्वामी जैसे महान् संगीताचार्य, जो तानसेन के संगीत-शिक्षक भी कहे जाते हैं, किसी भी प्रकार उनसे कम नहीं थे। ऐसा ज्ञात होता है, संगीत-जीवी कलावंतों की तुलना में ही तानसेन को अद्वितीय गायक बतलाया गया है। संगीत-साधक भक्त गायकों से तानसेन की तुलना करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं हुआ था।

उनकी गायन कला की प्रशंसा में कई चमत्कार पूर्ण किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। इनमें उनके द्वारा गाये हुए दीपक राग से बुझे हुए दीपों का अपने आप जलना, मेघ राग से असमय में वर्षा होना तथा उनके गायन से पत्थर का पिघलना आदि असंभव बातें कही जाती हैं। 'आईने अकबरी', 'तुजुक जहाँगीरी' तथा अन्य समकालीन ग्रंथों में जहाँ उसके गायन की अत्यंत प्रशंसा की गई है, वहाँ उक्त चमत्कारपूर्ण बातों का कोई उल्लेख नहीं हुआ है। तानसेन और बैजू बावरा

[1] गान्धर्व विद्या मय देह भ्राजे यस्तानसेन नाम कलाविदेऽदात ।
रागं प्रतीह प्रति तानमेतत् प्रति ध्रुपत्कोटि शशाङ्क टङ्का ।।२६।।
भूतो भविष्यन्नपि वर्तमानो न तानसेने सदृशो (नसमो) धरण्याम् ।
तथा (ऽ) प्रसिद्धया त्रिदितेऽपि मन्ये नैतादृशः कोप्यनवद्यविद्यः ।।२६।।
—वीरभानूदय काव्यम्, दशम् सर्ग, पृ० १२१–१२२

की संगीत-प्रतियोगिता से संबंधित भी इसी प्रकार की अनहोनी बातें कही जाती हैं; किंतु वे भी कपोल-कल्पित ही जान पड़ती हैं। उनकी सत्यता का कोई प्रामाणिक आधार उपलब्ध नहीं है।

अबुलफजल ने लिखा है, तानसेन अपनी गायन कला से मस्त हाथियों और जंगली जीवों को अपने वश में कर लेते थे! सम्राट अकबर आखेट के समय प्रायः तानसेन को अपने साथ रखते थे, ताकि उनके गायन से आकर्षित जंगली जीवों का वे सरलता पूर्वक शिकार कर सकें। इस कथन में कितना सत्य है, यह कहना कठिन है। पर यह निश्चित बात है, तानसेन अपने समय के अत्यंत प्रभावशाली और सर्वाधिक प्रशंसित गायक थे।

औरंगजेब के काश्मीरी सूबेदार फकीरुल्ला ने अपने प्रशंसनीय ग्रंथ 'राग दर्पण' में तानसेन को 'आताई' लिखा है। आताई से फकीरुल्ला का अभिप्राय उस गायक से है, जिसे संगीत का व्यावहारिक ज्ञान तो हो, किंतु सैद्धांतिक ज्ञान न हो[1]। संभव है, संस्कृत का विशेष ज्ञाता न होने से तानसेन ने संगीत के सैद्धांतिक ग्रंथों का गंभीर अध्ययन न किया हो, किंतु वे संगीत-सिद्धांत से बिलकुल अपरिचित थे, यह नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने अपने ध्रुपदों में संगीत के सिद्धांत पक्ष पर पर्याप्त प्रकाश डाला है और लुप्तप्राय 'मूर्च्छना' सिद्धांत से अपनी विज्ञता प्रकट की है। उनके एक ध्रुपद से संगीत के विख्यात ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' से उनकी जानकारी प्रकट होती है। तानसेन के नाम से प्रसिद्ध 'संगीत-सार' और 'राग-माला' तो संगीत के सैद्धांतिक ग्रंथ ही हैं, जिनसे उनकी तत्संबंधी मर्मज्ञता

मानसिंह और मान कुतुहल, पृ० १२६–१३०

प्रकट होती है । ऐसी दशा में यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि वे प्रभावशाली गायक होने के साथ ही साथ विद्वान संगीतज्ञ भी थे ।

उन्होंने प्राचीन रागों में परिवर्तन कर नये रागों का प्रचलन किया था । इससे उनका गायन रोचक होने के साथ ही साथ लोक-प्रसिद्ध भी हुआ; किंतु इसके कारण भारत की परंपरागत संगीत पद्धति को बड़ी क्षति पहुँची थी । परंपराप्रिय संगीतज्ञों ने इसके लिए उनका विरोध भी किया था, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली । तानसेन द्वारा प्रचलित नये रागों में 'दरबारी कानड़ा' और 'मियाँ की मलार' विशेष प्रसिद्ध हैं ।

सम्राट अकबर के शासन काल में अन्य विद्याओं और कलाओं की भाँति संगीत कला की भी विशेष उन्नति हुई थी । उनके दरबार में देश-विदेश के चुने हुए संगीतज्ञ नियुक्त थे । उनमें से प्रमुख ३६ कलाकारों का नामोल्लेख अबुलफजल ने 'आईने अकबरी' में किया है[1] । इनमें प्रथम नाम तानसेन का और दूसरा बाबा रामदास का है । उन ३६ कलाकारों में प्राय: आधी संख्या गायकों की और आधी वादकों की थी । उनके नाम इस प्रकार हैं—

१. मियाँ तानसेन—गायक, ग्वालियर निवासी । उनके समान गायक पहिले एक हज़ार वर्ष में नहीं हुआ ।
२. बाबा रामदास—गायक, ग्वालियर निवासी ।
३. सुभान खाँ— ,, ,,
४. श्रीज्ञान खाँ— ,, ,,
५. मियाँ चाँद— ,, ,, तानसेन का शिष्य ।
६. विचित्र खाँ— ,, ,, सुभान खाँ का भाई ।

[1] आईने अकबरी (ब्लोचमैन कृत अंग्रेजी अनुवाद) पृ० ६८०–६८२

७. महम्मद खाँ ढाड़ी—गायक
८. वीरमंडल खाँ—वादक, ग्वालियर। सुरमंडल बजाता था।
९. बाज बहादुर—गायक, मालवा-नरेश। उसके दरबार में रूपमती नामक विख्यात गायिका थी।
१०. शिहाब खाँ–वादक,ग्वालियर निवासी। वीणा बजाता था।
११. दाऊद ढाड़ी—गायक।
१२. सरोद खाँ—गायक, ग्वालियर निवासी।
१३. मियाँ लाल— ,, ,,
१४. तानतरंग खाँ— ,, ,, तानसेन का पुत्र।
१५. मुल्ला इसहाक ढाड़ी—गायक।
१६. उस्ता दोस्त—वादक, मशहद।
१७. नायक चर्चू—गायक, ग्वालियर निवासी।
१८. प्रवीन खाँ–वादक, ग्वालियर निवासी। वीणा बजाता था।
१९. सूरदास—गायक ,, बाबा रामदास का पुत्र।
२०. चाँद खाँ—गायक ,,
२१. रंगसेन—गायक, आगरा निवासी।
२२. शेख दावन ढाड़ी—वादक, करना वाद्य बजाता था।
२३. रहमतुल्ला—गायक, मुल्ला इसहाक का भाई।
२४. मीर सैयद अली—वादक, घीचक वाद्य बजाता था।
२५. उस्ता यूसुफ—वादक, हिरात निवासी। तंबूरा बजाता था।
२६. कासिम—वादक, एक वाद्य यंत्र का निर्माता।
२७. ताशबेग—वादक, कुबुज वाद्य बजाता था।
२८. सुलतान हाफिज़ हुसैन—वादक।
२९. बहराम कुली—वादक।
३०. सुलतान हाशिम—वादक, तंबूरा बजाता था।
३१. उस्ता शाह महम्मद—वादक।

३२. उस्ता महम्मद ग्रमीन--वादक, तंबूरा बजाता था।
३३. हाफिज ख्वाजा ग्रली--वादक।
३४. मीर ग्रब्दुल्ला--गायक।
३५. पीरज़ादा--गायक, खुरासान निवासी।
३६. उस्ता महम्मद हुसैन--वादक, तंबूरा बजाता था।

मुगल सम्राट ग्रकबर के दरबार में संगीतज्ञों का प्रभावशाली गायन ग्रौर वादन होने के साथ ही साथ संगीत शास्त्रोक्त विचार-विमर्श भी होता था। उस समय ग्रनेक संगीत-ग्रंथों की रचना भी हुई थी। फकीरुल्ला ने लिखा है कि ग्रकबर के शासन-काल में 'राग-सागर' नामक एक महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथ का संकलन किया गया था[1]। दक्षिण के विख्यात संगीत-शास्त्री पुंडरीक विट्ठल की महत्वपूर्ण संगीत रचनाएँ उसी समय निर्मित हुई थीं। पुंडरीक विट्ठल ग्रामेर के राजा मानसिंह के संगीत-प्रिय भाई माधवसिंह का ग्राश्रित विद्वान था। उसकी विविध रचनाएँ सद्राग-चंद्रोदय, राग-मंजरी, राग-माला ग्रौर नर्तन-निर्णय ग्रादि संगीतज्ञों में प्रसिद्ध हैं।

ग्रकबर के दरबार में संगीतज्ञों को खड़े होकर गाने का नियम था; ग्रतः तानसेन भी दिन में खड़े होकर गाते थे। रात्रि के समय ग्रौर नौरोजा में तथा जश्नों के ग्रवसर पर वे बैठ कर गाया करते थे।

काव्य-महत्व--

तानसेन ग्रपूर्व गायक ग्रौर विख्यात संगीतज्ञ होने के साथ ही साथ कवि भी थे। 'तुज़ुक जहाँगीरी' में उनके संगीत के साथ उनके काव्य की भी भरपूर प्रशंसा की गई है। हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में तानसेन का नामोल्लेख प्रायः नहीं

[1] मानसिंह ग्रौर मान कुतुहल, पृ० १२९

हुआ है। इसका कारण शायद यह है कि हिंदी के विद्वानों ने उनकी रचनाओं को साहित्यिक महत्व नहीं दिया। इसके विपरीत डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने तानसेन के काव्य-महत्व की भी निम्न लिखित शब्दों में प्रशंसा की है—

प्राचीन और मध्य युग के हिंदू काव्य, ज्ञान, योग और भक्ति का मानों मंथन करके जो नवनीत निकला, वह तानसेन के पदों के स्वर्ण कटोरे में धर दिया गया है[1] !

निश्चय ही यह तानसेन के काव्य की उसी प्रकार अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा है, जिस प्रकार 'आईने अकबरी' और 'वीरभानूदय काव्यम्' में उनके संगीत की है। फिर भी काव्य की दृष्टि से उनके ध्रुपद इतने उपेक्षणीय नहीं हैं, जितने हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने उन्हें समझा है। उनके कतिपय ध्रुपदों में तो उत्तम काव्य के सभी लक्षण मिलते हैं।

तानसेन अपने गायन के लिए स्वयं अपने ध्रुपदों की रचना करते थे, अतः उनके सुदीर्घ जीवन में निश्चय ही बहुसंख्यक ध्रुपद रचे गये होंगे। वे सब के सब इस समय उपलब्ध हो सकेंगे, इसकी आशा करना व्यर्थ है। तानसेन जिन ध्रुपदों की रचना करके गाते थे, उनमें से अधिकांश उनके शिष्यों, वंशजों और प्रशंसकों ने कंठस्थ कर लिये थे। उनमें से कुछ बाद में लिपिबद्ध भी किये गये, जो विविध संगीत ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। उनके ऐसे ध्रुपद भी हैं, जो अभी तक लिपिबद्ध नहीं हैं। वे परंपरागत गायकों के घरानों में और कृतविद्य कलाकारों के कंठों में सुरक्षित हैं। यह जानने का कोई साधन नहीं है कि लिपिबद्ध और कंठस्थ ध्रुपदों के अतिरिक्त उनकी कितनी

[1] सम्मेलन पत्रिका (चैत्र-वैशाख सं० २००३) में प्रकाशित लेख।

रचनाएँ काल के प्रवाह में नष्ट हो गईं। उनकी जो रचनाएँ आजकल मिलती हैं, वे भी अपने मूल रूप में हैं या नहीं, यह कोई नहीं कह सकता।

तानसेन के नाम से उपलब्ध ध्रुपदों की काव्यालोचना के लिए उन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहिला भाग उनकी युवावस्था में रचे हुए ध्रुपदों का है। उनमें आश्रयदाता नरेशों की प्रशस्ति और विविध देवी-देवताओं की स्तुति-वंदना की गई है। दूसरा भाग उनकी प्रौढ़ावस्था के ध्रुपदों का हो सकता है। उनमें संगीत कला का विवेचन और नायिकाओं के रूप-सौन्दर्य का रसपूर्ण वर्णन है। तीसरा भाग उनकी वृद्धावस्था के ध्रुपदों का हो सकता है। उनमें श्री कृष्ण की विविध लीलाओं का मनोहर कथन किया गया है। तानसेन की रचनाओं के ये तीनों विभाग काव्य की दृष्टि से उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार नायिकाभेद और कृष्णलीला से संबंधित ध्रुपद ही उनकी सर्वोत्तम काव्य-रचनाएँ कही जा सकती हैं।

वास्तविक बात यह है, तानसेन कवि की अपेक्षा गायक के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। उनका काव्य उनके संगीत से दब गया है; किंतु फिर भी वह उपेक्षणीय नहीं हैं। उनकी समस्त रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं, किंतु उनमें अरबी-फारसी के भी कुछ शब्द मिलते हैं। वे जायसी, सूरदास, तुलसीदास और रहीम जैसे विख्यात कवियों के समकालीन थे। अब्दुर्रहीम खानखाना तो उनके साथी और अकबरी दरबार के नवरत्नों में ही थे। उनके एक ध्रुपद में खानखाना का नामोल्लेख भी हुआ है। किंवदंती के अनुसार महात्मा सूरदास से भी उनका परिचय था। सूर-काव्य की प्रशंसा में उनका आगे लिखा दोहा प्रसिद्ध है—

किधौं सूर कौ सर लग्यौ, किधौं सूर की पीर ।
किधौं सूर कौ पद सुन्यौ, तन-मन धुनत सरीर ॥

कहते हैं, महात्मा सूरदास ने भी तानसेन की प्रशंसा में निम्न लिखित दोहा कहा था—

विधना यह जिय जान कै, सेषहिं दिये न कान ।
धरा-मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ॥

मृत्यु और समाधि—

अकबरनामा में लिखा है, तानसेन की मृत्यु अकबरी शासन के ३४ वें वर्ष सं० १६४६ में हुई थी। ईसवी सन् के अनुसार उनकी मृत्यु तिथि २६ अप्रैल सन् १५८६ बतलाई गई है[1]। अकबरनामा के उल्लेख से ऐसा संकेत भी मिलता है कि तानसेन की मृत्यु आगरा में हुई थी। उनका अंतिम संस्कार कहाँ हुआ, इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है।

एक किंवदंती प्रसिद्ध है, बीरबल की मृत्यु का दुःखजनक समाचार सुन कर सम्राट अकबर ने निम्न लिखित दोहा कहा था, जिसमें राजा पृथ्वीसिंह, तानसेन और बीरबल की मृत्यु पर पश्चाताप करते हुए उनके गुणों का स्मरण किया गया है—

पीथल सूँ मजलिस गई, तानसेन सूँ राग ।
हँसिवौ-रमिवौ-बोलिवौ गयौ बीरबर साथ ॥

उपर्युक्त दोहा में तानसेन की मृत्यु का उल्लेख बीरबल की मृत्यु से पहिले किया गया हैं। बीरबल की मृत्यु सं० १६४२ में और तानसेन की सं० १६४६ में हुई थी। इस प्रकार या तो उक्त दोहा अप्रामाणिक है, अथवा वह बीरबल की मृत्यु के तत्काल पश्चात् न होकर बाद में किसी समय कहा गया था।

[1] अकबरनामा, भाग २ (अंगरेजी अनुवाद) पृ० ८८०

'तुजुक जहाँगीरी' के उल्लेख के अनुसार एक तानसेन कलावंत की विद्यमानता सं० १६७५ में भी ज्ञात होती है। इस उल्लेख के कारण कुछ विद्वानों ने तानसेन की उपर्युक्त मृत्यु-तिथि की सत्यता में संदेह प्रकट किया है। हम पहले लिख चुके हैं; जहाँगीरी दरबार का वह तानसेन अकबरी दरबार के तानसेन से भिन्न था। ऐसा मालूम होता है, अकबर के बाद भी मुगल दरबार के श्रेष्ठ गायक को तानसेन उपाधि दी जाती थी।

तानसेन के निम्न लिखित ध्रुपद उनके अंतिम काल की रचनाएँ ज्ञात होते हैं। इनमें दूसरे ध्रुपद की अंतिम पंक्ति में तो उनके अंत काल का भी संकेत मिलता है—

रागिनी मुलतानी, धनाश्री चौताल

ए ईश्वर! मो हिय की जानत,
गति जो बीतत, विना देखैं तुव दरस।
एक निमिष जु पै नाँहिन निरखत मैं,
साँस अकुलात, कछु न सुहात, मन-नैंन दोऊ जात तरस॥
भव-भंजन, मन-रंजन, काटत दुख-द्वंद,
ऐसौ जग में व्यापि रह्यौ सरस।
तुही आदि, तुही अंत-तारनतरन, 'तानसेन' तुही अरस-परस॥

[२]

तेरी गति-औगति मो पै बरनी ना जात नारायन निरंजन,
निराकार परमेश्वर सप्तदीप शिवशंकर।
शिवशंकर अवतार कौ लेवत हरत भरत बित,
देखत तेरी विडंबना सबही, सकल स्त्री-पुरुष, नारी-नर॥
तूही जल-थल, तुही पसु-पंछी, तुही पवन-पानी, तुही धरती-अंबर,
तुही चंद्र, तुही सूर्ज, बसौ जो जल-थर।
'तानसेन' के प्रान उड़त हैं, जानत हैं सब घर-घर॥

ग्वालियर में किले के नीचे दो मशहूर मकबरे बने हुए हैं। इनमें से एक गौस महम्मद का और दूसरा तानसेन का बतलाया जाता है। हम लिख चुके हैं, अकबरनामा के उल्लेख से ऐसा संकेत मिलता है कि तानसेन की मृत्यु आगरा में हुई थी। उनका अंतिम संस्कार कहाँ हुआ, इसका उल्लेख नहीं मिलता है; तथापि अकबरनामा के कथन से ऐसी ध्वनि निकलती है कि संभवतः तानसेन का अंतिम सांस्कार भी आगरा में ही हुआ था।

सन् १६५८ के दिसम्बर मास में स्वामी हरिदास जी का स्मृति उत्सव वृंदाबन में मनाया गया था। उस समय उपस्थित व्यक्तियों को ज्ञात हुआ कि स्वामी हरिदास के निवास-स्थल निधिबन के एक कौने में तानसेन की समाधि थी, जो अब से १०–१२ वर्ष पूर्व नष्ट हो गई थी। वृंदाबन के अनेक वृद्ध जन उस समाधि की विद्यमानता के साक्षी हैं। अकबरनामा से ज्ञात होता है कि सम्राट अकबर की आज्ञा से उस समय के संगीतज्ञ गाते-बजाते और विवाहोत्सव की सी खुशी मनाते हुए तानसेन के शव को अंतिम संस्कार के लिए ले गये थे[1]। इससे अंतिम काल तक तानसेन के हिंदू होने की संभावना प्रकट होती है। ऐसी दशा में ग्वालियर में तानसेन के मकबरा होने की बात संदेहास्पद हो जाती है। इस मकबरा की प्रामाणिकता के लिए यह सिद्ध होना आवश्यक है कि तानसेन अपनी मृत्यु के समय मुसलमान थे और उनकी लाश ग्वालियर में ले जा कर दफनाई गई थी। यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इन बातों को सिद्ध

On the 26th April 1589, Miyan Tansen died and by H. M's order all the Musicians and Singers accompanied his body to grave, making melodies as at a marriage.

—*Akbarnama translated by H. Beveribge Vol : II, P. 880.*
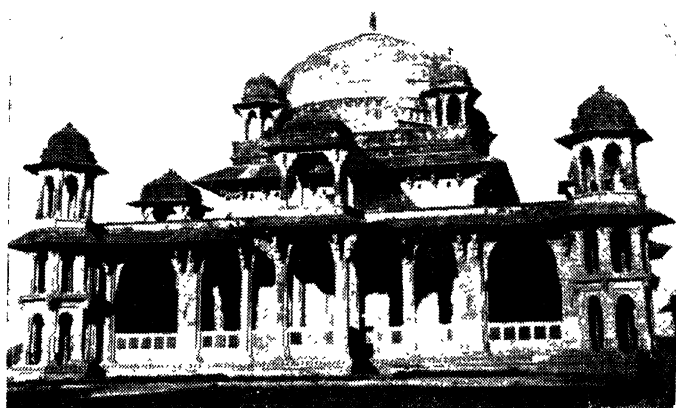
ग्वालियर में गौस महम्मद का मकबरा
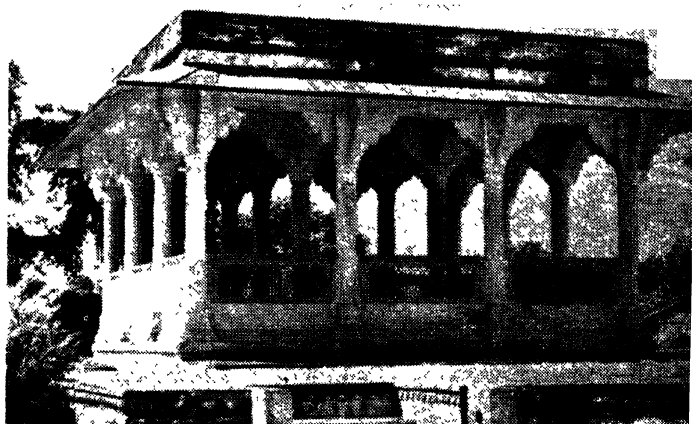
ग्वालियर में तानसेन की समाधि

करने के लिए यथेष्ट प्रमाणों का अभाव है। फिर भी ग्वालियर में तानसेन का मकबरा है और यह इसी नाम से पर्याप्त समय से प्रसिद्ध रहा है। इधर काफी समय से देश के अनेक कलाकार ग्वालियर के इस मकबरा पर उपस्थित होकर तानसेन को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे हैं।

इस मकबरा के निकट एक इमली का वृक्ष है, जिसकी पत्तियाँ आगत कलाकार और गायक गण इस विश्वास के साथ खाते हैं कि इससे उनका कंठ-स्वर मधुर हो जावेगा।

ग्वालियर के स्वर्गीय महाराज माधवराव सिंधिया ने सन् १९२५ से इस मकबरा पर तानसेन की स्मृति में उर्स मनाये जाने का आदेश दिया था। इसके लिए उन्होंने राजकीय कोष से ७००) प्रति वर्ष दिये जाने की व्यवस्था भी की थी। यह उत्सव मुसलमानी विधि के अनुसार मनाया जाता था। इसका वह क्रम सन् १९४६ तक चलता रहा। इसके बाद सन् १९४७ में देश के विभाजन स्वरूप जो सांप्रादायिक झगड़े हुए, उन्होंने इस उत्सव के मनाये जाने में बाधा उपस्थित कर दी। बाद में शांति स्थापित होने और ग्वालियर के भारत गण राज्य में विलीन हो जाने के अनंतर यह उत्सव नई योजना के साथ आरंभ किया गया। अब राज्य शासन ने इसमें रुचि लेकर इसका धार्मिक रूप बदल दिया है और इसे सांस्कृतिक रूप प्रदान किया है। इधर कई वर्षों से यह उत्सव वार्षिक संगीत सम्मेलन के रूप मे मनाया जाता है। भारत के राष्ट्रपति, केन्द्र के सूचना मंत्री और राज्य के विभिन्न मंत्रियों ने इस उत्सव में उपस्थित होकर इसके महत्व की वृद्धि की है। इस उत्सव में अनेक संगीतज्ञ सम्मिलित होकर अपने गायन-वादन द्वारा उस अमर कलाकार को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। यह आयोजन तानसेन की स्मृति को जीवित-जागृत रखने का उत्तम प्रयास है।

वंश–परंपरा—

तानसेन के कई पुत्र थे। उनमें तानतरंग खाँ, सुरतिसेन, और विलास खाँ के नाम प्रसिद्ध हैं। उनकी एक पुत्री भी थी। उसका विवाह अकबरी दरबार के प्रसिद्ध वीणा-वादक मिसरी सिंह उपनाम नौबातखाँ के साथ हुआ था। उनके पुत्रों और पुत्री की संतति द्वारा उनकी वंश-परंपरा का काफी विस्तार हुआ है।

तानसेन की संतति में हिंदू और मुसलमान दोनों के से नाम होने से यह समझा जा सकता है कि उनकी हिंदू पत्नी की संतान के नाम हिंदुओं के से और मुसलमान पत्नी अथवा उप-पत्नी की संतति के नाम मुसलमानों के से हैं। तानसेन के पूर्ण-तया मुसलमान होने में तो शंका भी है, किंतु उनके वंशजों द्वारा मुसलमानी मज़हब स्वीकार करना निश्चित है। वैसे उनकी वंश-परंपरा में अभी तक कुछ नाम हिंदुओं के से भी होते हैं और उनमें हिंदुओं की सी कई रीति-रिवाजें प्रचलित हैं। इन बातों से स्पष्ट होता है, वे अपने पूर्वजों की हिंदू-परंपरा का पूर्णतया परित्याग नहीं कर सके हैं। हम यहाँ पर उनके वंश के कतिपय प्रसिद्ध व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय देते हैं—

(१) **तानतरंग खाँ**—तानसेन के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे तानसेन के समय में ही एक कुशल गायक के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे। अकबरी दरबार के विख्यात ३६ संगीतज्ञों में तानतरंग खाँ का नाम भी है। इससे ज्ञात होता है, वे अपने पिता के समान ही विख्यात गायक थे। उनके रचे हुए कतिपय ध्रुपद परिशिष्ट में दिये गये हैं।

(२) **सुरतिसेन**—तानसेन के द्वितीय पुत्र थे, जो संभवतः उनकी हिंदू पत्नी से उत्पन्न हुए थे। वे भी विख्यात गायक और संगीतशास्त्री थे। औरंगजेब के शासन-काल में काश्मीर के सूबेदार फकरुल्ला द्वारा रचे हुए 'राग दर्पण' नामक संगीत ग्रंथ

में सुरतिसेन को तानसेन और तानतरंग खाँ से भी अधिक संगीत-सिद्धांत का ज्ञाता बतलाया गया है[1]।

(३) **विलास खाँ**—तानसेन के तृतीय पुत्र थे। वे भी अपने समय के विख्यात संगीतज्ञ हुए हैं। उनके नाम से संगीत की एक विशिष्ट रागिनी 'विलासखानी तोड़ी' प्रसिद्ध है, जो उनके द्वारा आविष्कृत कही जाती है। उनके रचे हुए कतिपय ध्रुपद इस पुस्तक के परिशिष्ट में संकलित हैं।

(४) **सुहेलसेन**—तानसेन के पौत्र थे। वे शाहजहाँ के द्वितीय पुत्र शाहशुजा के आश्रित एक विख्यात गायक थे। उनका देहावसान सं० १७२५ के लगभग हुआ था।

(५) **सुधीनसेन**—तानसेन के प्रपौत्र और सुहेलसेन के पुत्र थे। वे भी अपने समय के प्रसिद्ध गायक थे। वे सं० १७३० के आस-पास विद्यमान थे।

(६) **अमृतसेन**—तानसेन की २३ वीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए कहे जाते हैं। 'संगीत सुदर्शन' ग्रंथ के रचयिता पंजाबी विद्वान श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री संगीत विद्या में अमृतसेन के शिष्य थे। उन्होंने अपने ग्रंथ की भूमिका में अपने गुरु का जीवन-वृत्तांत लिखते हुए उनके अपूर्व संगीत-कौशल की भरपूर प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है, अमृतसेन जी सितार-वादन में अपना सानी नहीं रखते थे। वे जयपुर-महाराज के आश्रित थे, किंतु अन्य राजा-महाराजाओं ने भी उन्हें विपुल धन और मान-सन्मान प्रदान किया था। उनका जन्म सं० १८७० में हुआ था और उनका देहावसान ८० वर्ष की आयु में सं० १९५० की पौष कृ० ८ को जयपुर में हुआ था। ध्रुपदियों के सुप्रसिद्ध ४ गोत्रों में से उनका 'गुवरहार' गोत था।

[1] मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० १३०

तानसेन के पुत्रों और पुत्री के वंशजों द्वारा संगीत की बड़ी उन्नति हुई है। तानसेन के पुत्र-वंशज ध्रुपद-गायक होते थे और उनकी पुत्री के वंशज वीरणा-वादक। शाही दरबार में वीरणा-वादक को प्रायः गायक के पीछे बैठना पड़ता था। इससे तानसेन के दौहित्र वंशजों को अपना अपमान जान पड़ता था। इस अपमान से बचने के लिये कालांतर में उन्होंने वीरणा बजाना ही बंद कर दिया और 'ख्याल' शैली का गायन आरंभ किया। तानसेन के दौहित्र-वंशज सदारंग उपनाम नियामत खाँ ख्याल के विख्यात गायक हुए हैं। श्री सुदर्शनाचार्य ने लिखा है, तानसेन के दौहित्र वंशज में एक खुसरो नामक संगीतज्ञ ने 'सितार' का आविष्कार किया था[१]। वह खुसरो सुप्रसिद्ध अमीर खुसरो से भिन्न था।

जैसा पहले लिखा जा चुका है, तानसेन के पुत्रों की परंपरा में ध्रुपद गायक और उनकी पुत्री की परंपरा में वीरणा-वादक होने का नियम था। आरंभ में इस नियम का पालन करना अनिवार्य समझा जाता था, किंतु बाद में उसमें शिथिलता आ गई। तब दोनों परंपराओं में गायन और वादन दोनों के ज्ञाता होने लगे। तानसेन की पुत्र-परंपरा के अमृतसेन की सितार-वादन कला का उल्लेख किया ही जा चुका है।

तानसेन के वंशज सेनियाँ कहलाते हैं। कालांतर में उनकी दो शाखाएँ हुईं, जो बीनकार और रबाबी के नाम से प्रसिद्ध हैं। बीनकारों का घराना सुरतिसेन से और रबाबियों का विलास खाँ से संबंधित बतलाया जाता है। वे लोग जयपुर, रामपुर, अलवर आदि रियासतों में बसे हुए हैं।

संगीत सुदर्शन, भूमिका, पृ० २६

पं० सुदर्शनाचार्य ने 'संगीत-सुदर्शन'-भूमिका पृ० ५६ पर तानसेन और उनके ज्येष्ठ पुत्र तानतरंग खाँ की वंशावली अपने संगीत-गुरु अमृतसेन तक इस प्रकार बतलाई है—१. तानसेन, २. तानतरंग खाँ, ३. सूरजसेन, ४. सुफलसेन, ५. झंडेसेन, ६. सुभागसेन, ७. सूरतसेन, ८. दयालसेन, ६, कृपालसेन, १०. निहालसेन, ११. ख्यालसेन, १२. कृपालसेन, १३. खुशालसेन, १४. अद्भुतसेन, १५. बालसेन, १६, रूपसेन, १७. निहालसेन, १८. लालसेन, १६. फाज़िलसेन, २०. मुरादसेन, २१, सुखसेन, २२. रहीमसेन, २३. अमृतसेन।

तानसेन की वंश-परंपरा के साथ ही साथ उनकी शिष्य-परंपरा में भी अनेक विख्यात गायक और वादक हुए हैं। तानसेन के शिष्यों में मियाँ चाँद का नाम प्रसिद्ध है। वह भी अपने गुरु की तरह अकबरी दरबार का गायक था।

तानसेन के छोटे पुत्र विलास खाँ के कई शिष्य थे। उनमें से मिसरी खाँ ढाड़ी और लाल खाँ के नाम अधिक प्रसिद्ध हैं। मिसरी खाँ शाहजहाँ के पुत्र शाहशुजा के साथ बंगाल में रहता था। उसका देहांत सं० १७३० के लगभग हुआ था। मियाँ लाल खाँ कलावंत विलास खाँ का शिष्य होने के साथ ही उनका दामाद भी था। लाल खाँ की संगीत-योग्यता से प्रसन्न होकर विलास खाँ ने अपनी पुत्री उससे विवाही थी। लाल खाँ का जन्म सं० १६०० के लगभग और देहांत सं० १६६५ के लगभग हुआ था। खुशहाल खाँ लाल खाँ का पुत्र था, जो सं० १७२५ तक विद्यमान था।

तानसेन की वंश-परंपरा और शिष्य-परंपरा में सदा से विख्यात संगीतज्ञ होते रहे हैं। उनके घरानों में अनेक दुर्लभ रचनाएँ सुरक्षित हैं। उनके कंठ में वे ध्रुपद हैं, जो अन्यत्र प्राप्त नहीं होते हैं।

जीवनी का निष्कर्ष—

तानसेन का जन्म सं० १५६३ के लगभग ग्वालियर में अथवा उसके निकटवर्ती बेहट ग्राम में हुआ था। वे हिंदू कुल में और संभवत: ब्राह्मण वर्ण में उत्पन्न हुए थे। उनके पिता का नाम मकरंद पांडे बतलाया जाता है। उनका मूल नाम क्या था, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता; किंतु किंवदंतियों के अनुसार वह तन्ना, त्रिलोचन, तनसुख अथवा रामतनु कहा जाता है। तानसेन उनका नाम नहीं था। वह उनकी उपाधि थी, जो उन्हें बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र से प्राप्त हुई थी। वह उपाधि इतनी प्रसिद्ध हुई कि उसने उनके मूल नाम को ही छिपा दिया।

उनके आरंभिक काल में ग्वालियर पर कलाप्रिय नरेश मानसिंह तोमर का शासन था। उनके प्रोत्साहन से ग्वालियर संगीत कला का विख्यात केन्द्र बन गया था; जहाँ पर बैजू, बक्सू, कर्ण और महमूद जैसे महान् संगीताचार्य और गायक गरण निवास करते थे। उन्हीं की सहायता से मानसिंह तोमर ने संगीत की ध्रुपद शैली का आविष्कार और प्रचार किया था। तानसेन को संगीत की आरंभिक शिक्षा ग्वालियर के उन विख्यात संगीतज्ञों से, जिनमें बक्सू और महमूद जैसे मुसलमान भी हो सकते हैं, प्राप्त हुई थी। मानसिंह तोमर और उनके पुत्र विक्रमाजीत द्वारा अपने राज्य के उस नवोदित कलाकार को संभवत: प्रश्रय और प्रोत्साहन भी मिला था। सं० १५७३ में मानसिंह तोमर की मृत्यु होने और सं० १५७५ में विक्रमाजीत से ग्वालियर का राज्याधिकार छिन जाने के कारण वहाँ के संगीतज्ञों की मंडली बिखरने लगी। उस परिस्थिति में तानसेन को ग्वालियर में उच्च शिक्षा प्राप्त करना संभव ज्ञात नहीं हुआ। अत: वे सं. १५७५ के बाद किसी समय वृंदाबन चले गये, जहाँ पर उन्होंने स्वामी

हरिदास जी से संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। अपने उत्तर जीवन में उन्होंने अष्टछाप के संगीताचार्य गोविंदस्वामी से भी कीर्तन पद्धति का गायन सीखा था। सूफी फकीर गौस महम्मद तानसेन के श्रद्धास्पद हो सकते हैं; किंतु उन्हें तानसेन का संगीत-गुरु बतलाना सर्वथा भ्रमात्मक है।

संगीत विद्या में पारांगत होने पर तानसेन जीविकोपार्जन के लिए चल दिये। वे सर्व प्रथम शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खाँ के आश्रय में रहे और फिर बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र के दरबारी गायक नियुक्त हुए। बांधवगढ़ में रहते हुए उन्हें विपुल धन-वैभव और मान-सन्मान प्राप्त हुआ तथा उनकी व्यापक प्रसिद्धि हुई। जब मुगल सम्राट अकबर ने उनके गायन की प्रशंसा सुनी, तब उन्होंने उनको अपने दरबार में बुला लिया और नवरत्नों में स्थान दिया। इस प्रकार सं० १६१६–२० में तानसेन का अकबरी दरबार में प्रवेश हुआ। उस समय उनकी आयु ५० वर्ष से कुछ अधिक थी। अकबर के आश्रय में रहने से तानसेन की प्रसिद्धि समस्त देश में व्याप्त हो गई थी। उन्हें मुगल सम्राट से अपूर्व आदर और विपुल वैभव प्राप्त हुआ था। जब अकबर को स्वामी हरिदास के अद्भुत संगीत सुनने की इच्छा हुई, तब वे सं० १६२३ के लगभग छद्मवेश में वृंदाबन गये। वहाँ पर उन्होंने तानसेन के प्रयत्न से स्वामीजी का दिव्य संगीत सुना।

तानसेन ध्रुपद शैली के विख्यात गायक और दीपक राग के विशेषज्ञ थे। उनके गायन की प्रशंसा में कई चमत्कारपूर्ण किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, किंतु उनका प्रामाणिक आधार उपलब्ध नहीं है। उन्होंने अपने गायन के लिए बहु संख्यक ध्रुपदों की रचना की थी। उनमें से अनेक संगीत ग्रंथों में और कलावंतों के पुराने घरानों मे सुरक्षित हैं। संगीत-सार और राग-माला नामक दो संगीत ग्रंथ भी उनके नाम से प्रसिद्ध हैं। तानसेन की उपलब्ध

रचनाओं में से कौन-कौन सी प्रामाणिक हैं, इसका अभी निश्चय नहीं हुआ है।

उनके विषय में प्रसिद्ध है कि हिंदू कुल में जन्म लेने पर पर भी वे बाद में मुसलमान हो गये थे; किंतु किसी समकालीन लेखक ने इस संबंध में कुछ भी नहीं लिखा है। ऐसा ज्ञात होता है, उनका मुसलमानों के साथ अधिक संपर्क और सहवास तथा उनके आहार-बिहार की स्वच्छंदता के कारण उस समय के रूढ़िवादी हिंदुओं ने उनका वहिष्कार कर उन्हें मुसलमान घोषित कर दिया था; किंतु वे स्वेच्छा से कभी मुसलमान हुए हों, इसका प्रमाण नहीं मिलता है। उनके वंशजों ने अवश्य मुसलमानी मज़हब स्वीकार कर लिया था। उनकी वंश-परंपरा में कुछ नाम हिंदुओं के से मिलते हैं और उनमें हिंदुओं की सी कई रीति-रिवाजें प्रचलित हैं। इनसे समझा जा सकता है कि वे भी अपने पूर्वजों की हिंदू-परंपरा का पूर्णतया परित्याग नहीं कर सके हैं।

उनका देहावसान सं० १६४६ में अकबर की राजधानी आगरा में हुआ था। उस समय उनकी आयु ८० वर्ष से अधिक थी। वे प्रायः २७ वर्ष तक अकबरी दरबार से सम्बद्ध रहे थे। उनका अंतिम संस्कार कहाँ हुआ, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। ग्वालियर में उनके नाम से प्रसिद्ध मकबरा कालांतर में उनकी स्मृति में बनवाया गया होगा। उसमें तानसेन दफनाये गये थे, इसका उल्लेख नहीं मिलता है। उनके कई पुत्र थे और एक पुत्री थी। पुत्रों में तानतरंग खाँ, सुरतसेन और विलास खाँ के नाम प्रसिद्ध हैं। उनके वंशजों और शिष्यों की परंपरा में सदा से विख्यात संगीतज्ञ और गायक होते रहे हैं। उनके कारण हिंदुस्तानी संगीत का बहुत प्रचार हुआ है।

द्वितीय खंड

तानसेन की रचनाएँ

●

ध्रुपद-संग्रह

१—वंदना

गणेश— [१] राग भैरव, चौताल

प्रथम नाम गनेश कौ लैहुँ, जा सुमिरैं होवैं सर्व सिद्ध काज।
गौरीनंदन जगबंदन लंबोदर नाम जपत,
सकल सृष्टि सुर-नर-मुनि शेष-राज ।।
विघन विनासन, सब दुख नासन, मंगलदायक ढुंढिराज।
'तानसेन' तेरी अस्तुति करै, सब देबन-सिरताज ।।

[२] रागिनी टोड़ी, चौताल

एकदंत गजबदन बिनायक, विघन-विनासन हैं सुखदाई।
लंबोदर गजानन जगबंदन शिव-सुत, ढुंढीराज सब बरदाई ।।
गौरी-सुत, गनेश, मूसकबाहन, फरसाधर,
संकर-सुवन रिद्ध-सिद्ध नवनिधि पाई।
'तानसेन' तेरी अस्तुति करत, काटौ कलेस,
प्रथम बंदन करत द्वंद मिटि जाई ।।

[३] राग भैरव, चौताल

लंबोदर गज आनन गिरजा-सुत गनेस,
एकरदन प्रसन्नबदन अरुन भेष ।
नर-नारी, गुनी-गंधर्व, किन्नर-यक्ष-तुम्बरू,
मिलि ब्रह्मा-विष्णु आरति पुजावत महेस ।।
अष्टसिद्धि, नवनिधि, मूषकबाहन, विद्यापति,
तोहि सुमिरत जिनकौं नित सेष ।
'तानसेन' के प्रभु तुम ही कूँ ध्यावैं,
अविघन रूप बिनायक रूप स्वरूप आदेस ।।

[४] राग भैरव, चौताल

तुम हो गनपति देव बुद्धिदाता, सीस धरैं गज-सुंड ।
जेई-जेई ध्यावैं, तेई-तेई फल पावैं, चंदन लेप किएँ भुज दंड ।।
सिद्धेश्वर नाम तिहारौ कहियत जे विद्याधर,
तीनि लोक महँ, सप्त दीप नव खंड ।
'तानसेन' तुमकौं नित सुमिरत, सुर-नर-मुनि, गुनी-गंधर्व झुंड ।।

[५] राग भैरव, चौताल

साधौं विद्याधर गुननिधान गुनदाता, सरस्वती माता कौं कर आदेस।
नमो-नमो ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी, सकल विद्या प्रवेस ।।
जो इनकौं ध्यावैं, मन इच्छा फल पावैं, दूर होत मन के कलेस ।
'तानसेन' प्रभु तुमहिं कौं ध्यावैं, ब्रह्मा-विष्णु-महेस ।।

[६] रागिनी आसावरी आड़ा, चौताला

महा गनेस कहत सुख चैन ।
भेंटत हू छाँड़ै अभावै, साह किरपा पागै, भागै बिचकै न ।।
नाम लेत कटत पाप, अन्न-धन-लच्छिमी दैन ।
'तानसेन' सेवक पै कृपा करौ, ज्यौं कल्पवृक्ष कामधैन ।।

[७] रागिनी टोड़ी, चौताल

एकदंत लंबोदर कीरत जाहि बिराजै।
गनेस, गौरीसुत, महामुनि, महिमा-सागर,
गुरु गननाथ अविघन राजै॥
हेरंब, गनदीपक, तुही महातुर उग्रतप,
बट्ठ चंद्रमा सीस, विनायक जगत के सिरताजै।
'तानसेन' कौं प्रसाद दीजै, सकल बुद्धि नव निधि के,
सदा दायक, नायक जगत के सारौ काजै॥

[८] राग भैरव, चौताल

ए गनराजा, महाराजा गजानन, जै विद्या जगदीस।
सप्त स्वर सौं गाऊँ, सब राग-रागिनी, पुत्रबधून सहित छत्तीस॥
बाईस सुरति, इकईस मूर्छना, उनचास कूट तान आवैं, जै महेस।
'तानसेन' कौं दीजै छै राग, छत्तीस रागिनी,
ताल-लय संगीत मत सौं होय कंठ प्रवेस॥

[९] राग भैरव, ध्रुपद चौताल

उठि प्रभात सुमरियै, जै श्री गनेस देवा।
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा॥
अंधेन कौं नेत्र देत, कुष्ठी कौं काया।
बंध्या कौं पुत्र देत, निर्धन कौं माया॥
एक-दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
मस्तक सिंदूर सोहै, मूसक असवारी॥
फूल चढ़ैं, पान चढ़ैं, और चढ़ै मेवा।
मोदक कौ भोग लगै, सुफल तेरी सेवा॥
रिद्धि देत, सिद्धि देत, बुद्धि देत भारी।
'तानसेन' गजानंद सुमिरौ नर-नारी॥

[१०] राग भैरव, चौताल

ए गनराज महाराज, दै विद्या जगदीस ।
सप्त स्वर सौं गाऊँ-बजाऊँ सर्व राग-रागिनी,
पुत्र बधून सहित छत्तीस ।।
लेत बाईस सुरति, इकईस मूरछना, उनंचास कूट तान आवैं बैन ।
ताल-लय-संगीत मत सौं, सप्त अध्याय सौं, बुद्धि प्रकास होय,
'तानसेन' प्रथम छै राग तीस रागिनीएँ ऐंन ।।

सरस्वती-गणेश— [११] राग भैरव, चौताल

प्रथम नाद सरसुती, गनपति बुद्धिदाता ।
जाकी कृपा तें अन-धन-लच्छमी पालन करै सब जग-त्राता ।।
जोई-जोई आवत, मन फल पावत, सब गुनियन कौं देत विधाता ।
'तानसेन' प्रभु जुग-जुग जीवौ, चरन कमल रंग राता ।।

सरस्वती— [१२] राग भैरव, चौताल

जै सारदा भवानी, भारती विद्यादानी,
महावाक्-बानी, तोहि ध्यावैं ।
सुर-नर-मुनि मानी, तोही कूँ त्रिभुवन जानी,
जो जाकी मन इच्छा, सोई सो पुजावैं ।।
मंगला बुधिदानी, ज्ञान की निधानी,
बीना-पुस्तक-धारिनी प्रथम तोहि गावैं ।
'तानसेन' तेरी अस्तुति कहाँ लौं बखानै,
सप्त सुर, तीन ग्राम, राग-रंग-लय-अक्षर आवैं ।।

[१३] राग भैरव, चौताल

महावाक्‌वादिनी, सनमुख हूजै हो ।
याही तैं त्रिभुवन मानी, यातैं तू भवानी,
जो जाके मन इच्छा, सोई सो पूजै हो ।।

ऋद्धि-सिद्धि तबही पाइयै मातु, जब तुम चरन छूजै हो।
'तानसेन' यह प्रसाद माँगत, जहाँ-तहाँ जुरत-फुरत,
तहाँ-तहाँ रस-रंग कौं कर तू, जै हो ।।

[१४] राग भैरव, चौताल

सरस्वती सु प्रसन्न हो, मोकौं वाक्‌बानी।
षरज-ऋषभ-गांधार इन-इन स्मरन साधै,
तब राग-रंग गुरु प्रसाद आवत तानसानी ।।
रूप की निधानी, इंद्रानी सिंहलानी,
महिषासुरमर्दिनी जगज्जननी गुननिधानी।
'तानसेन' माँगै तान-ताल-स्वर श्री दुर्गे भवानी,
दीजियै दया मोहि दीन जानी ।।

[१५] राग भैरव, चौताल

सरस्वती सुप्रसन्न होय मोकूँ वाक्‌बानी।
खरज-ऋषभ-गांधार मध्यम-पंचम-
धैवत-निषाद गुरुमुख आवत तानसानी ।।
रूप की निधानी दयानी विद्यादानी,
जगत-जननी सारदा संतन मन मानी।
'तानसेन' माँगै ताल-स्वर-अक्षर राग-रंग,
संगत सौं गावै इच्छा फलदानी ।।

[१६] राग टोड़ी, चौताला

मेरैं तौ सरस्वती घट-घट पूर रही, नाम धरायौ वाक्‌बानी।
जल-थल मधि पात जालपा भवानी, या तैं कहियत तोकौं सर्वानी।।
कोट कटानी, मृड़ानी, सप्तदीप प्रमानी, ऐसी नगरकोट रानी।
'तानसेन' कौं प्रसाद दीजैं भवानी,
दयानी कंठ पाठ ताल स्वर दै महारानी ।।

[१७] राग भैरव, चौताल

जो कोई ध्यावै सरस्वती-चरन-सरन कौं,

ताकौं देत विद्या वाक्‌बानी।

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारौं फल की दानी,

वाकवादिनी तू ही माता, आदि जोति रूप-निधानी ।।

इंद्रानी, शिवानी, मंगला, ज्ञानरूपा, सारदा बरदानी।

'तानसेन' सेवक यह माँगै तान-ताल राग-रंग,

दै दया कर मोहि दीन जानी ।।

[१८] रागिनी टोड़ी, झपताल

ज्ञानवंत कौं रस अगम बुद्धि दैनी तू,

सबही अंगन मानी हंसबाहिनी गिरा महावाक-बानी।

जो तोहि ध्यावै, मन इच्छा फल पावै,

साधत कंठ प्रानी, करत बखानी ।।

तो सी तु ही और नाहीं विद्यादानी,

जे साधैं, आराधैं तिहूँलोक जग जानी।

'तानसेन' कौं दीजै राग-रंग वर बानी,

जौलौं गंगा धरनि, ध्रुव पवन-पानी ।।

[१९] राग भैरव, चौताल

सरस्वती आदि रूप नाद ब्रह्म बीना बजावत।

मनावत पूर्न गुनी, मन इच्छा फल पावत ।।

मनि कौ मंदिर, सोने कौ कलसा,

जगमग जोति लागी, धाता पग ध्यावत।

इड़ा देवी, वाक-बानी सारदा,

'तानसेन' कौं दीजै सुर-ताल-राग-रंग सुद्ध मुद्रा गावत ।।

[२०] रागिनी टोड़ी, झपताल

वाकबानी बराही वैश्वनी ब्राह्मी, भैरवी दयाली दया कर दीजै।
माहेश्वरी मैनात्मजा सुरेश्वरी पापनाशिनी,
महामाया मृड़ानी 'तानसेन' सेवक पर सुदृष्टि कीजै।।

शिव-शंकर— [२१] राग भैरव, सुर फाक्ता

हौ ॐकार महादेव शंकर तुम, सकल कला पूरन करत आस।।
निहचैं ही धरत ध्यान, सुमिरन कर मनमान,
देखत दरसन गयौ त्रास।
हरै दुख-द्वंद, सोहत जटा गंग, रुंड-माल गलैं सोहै,बाघंबर बास।।
हर-हर करत हरै पाप, मिटै सकल दुख-संताप, लहै मन हुलास।
'तानसेन'सेवा ध्यानकर मन इच्छा फल पावै,होय कैलास निवास।।

[२२] राग भैरव, चौताल

महादेव आदिदेव देवाधिदेव महेश्वर ईश्वर हर।
नीलकंठ गिरिजापति कैलासबासी,शिवशंकर भोलानाथ गंगाधर।।
रूप बहुरूप भयानक, बाघंबर अंबर, खप्पर त्रिसूल कर।
'तानसेन' के प्रभु दीजै नाद विद्या,
संगत सौं गाऊँ-बजाऊँ, बीना कर धर।।

[२३] रागिनी गुर्जरी, चौताल

महादेव आदिदेव महेश्वर ईश्वर हर।
शंभु सितकंठ कपरही ईस विरूप,
डमरू कर त्रिपुरारी त्रिलोचन गंगाधर।।
नीलकंठ भस्मभूषन वृषवाहन पार्वती-वर।
जटाजूट बहुरूप, शिव जो गांडीव धर,
'तानसेन' कौं दीजै सुख-संपति वर।।

[२४] रागिनी गुर्जरी, चौताल

आदि देव महेश्वर गवरीश विरूप, आछैं गंगा जटाजूट।
यह अनुचर बंदन करि माँगत,
तेरे पाद-प्रसाद तैं पाऊँ राग-विस्तार तान उंचास कूट ।।
तो समान और नाँही अविगत अविनासी,
ह्वै रहे या भुव लोक मधि अटूट।
भोलानाथ भस्मभूषन गंगसिखर डिम-डिम डमरू बाजै,
'तानसेन' सेवक कौं दीजै अन-धन-दूध-पूत अखूट ।।

[२५] रागिनी टोड़ी, चौताल

महादेव देवनपति सुर-ईश्वर, शंकर पार्वतीपति दुख-हरन।
बामदेव आदि देव जटाजूट धूरजटी,
डमरू बाजत डिम-डिम सब सुख करन ।।
रूप बहुरूप भूतनाथ भुवनेश्वर, भोलानाथ गौर-बरन।
'तानसेन' के प्रभु रीझत तुरत ही,
देत मन इच्छा करै काज असरन-सरन ।।

[२६] रागिनी गुर्जरी, चौताल

महादेव देव देवनपति ईस सुरेस नीलकंठ शिव,
पंचानन पारवती-पति दुख-हरन ।
वामदेव महादेव जटाजूट गंगशिखर,
डिम-डिम डमरू बाजत पुनि रीझत सुखकरन ।।
वृषवाहन जटाजूट गंगशिखि बहुरूप,
द्रुम-द्रुम डमरू बाजै तिरसूल धरन।
'तानसेन' शिवशंकर दया कीजै भोलानाथ,
जगत पोषन भरन ।।

[२७] राग भैरव, सुर फाक्ता

त्रिपुरारी गरीबनिवाज-निवाजन समरथ,
पूरि रह्यौ सब धाय-धाय।
जो तुम्हैं ध्यावै, मन इच्छा फल पावै, तिहारौ ही गुन गाय-गाय।।
सुर-नर-मुनि ध्यान धरत हैं, तिनहू के मन पाय-पाय।
'तानसेन' प्रभु तिहारी अस्तुति करूँ, तिहारौ ही मन भाय-भाय।।

[२८] रागिनी गुर्जरी, सुर फाक्ता

नमो रट शंकर देवा मन रे, वृषभ-बाहन,
तपसी प्रबल ईश्वर महायोगि ईशान।
गंगाधर जटाजूट ललाट शशि सोहै, धारैं हरि ध्यान।।
नीलकंठ उर शेष-कपाल माला, विभूति भूषन गरल पान।
गवरी अरधंग, डमरू कर, पिनाक पानि,
धन-धन महादेव गुनसागर आगर, गावत 'तानसेन' बिनान।।

[२९] रागिनी खंभावती, चौताल

शंकर महादेव, देव सेवक सब जाके।
पावत नहीं पार शेष, ध्यावत सुर-नर-मुनेस,
गावत धन-धन गनेस-ब्रह्मादिक वाके।।
डमरू कौ ध्यान धरत, दाने कौ प्रान हरत,
ऐसौ बहु भेष धरत, नीलकंठ ताके।
लिपट-लिपट जात व्याल, ओढ़ैं शिव जरद साल,
चंद्रभाल रुंडमाल दृग विसाल वाके।।
जटा गंग, भस्म अंग, वाहन वृषभ अति प्रचंड,
गवरजा अर्धंग संग, भंग-रंग नैंन छाके।
'तानसेन' अति अनूप, शंकर कौ निरख रूप,
वारौं कई क्रोड़ भूप, चरनन पर वाके।।

[३०] रागिनी गुर्जरी, चौताल

कानन मुद्रा, मुंडमाला गरैं, भस्म विराजै अंग।
कर त्रिसूल, चंद्रमा ललाट, पारवती अरधंग॥
वृष वाहन, सीस जटा, सोहत जटाजूट गंग-तरंग।
त्रैलोचन, त्रिसूल-खप्पर डमरू लिएँ, 'तानसेन' गावत रंग॥

दुर्गा— [३१] रागिनी गुर्जरी, चौताल

शिव शक्ति अनादि आदि भवानी दयानी,
दया करौ, दीजै दरस इन नैनन दारिद्र-दरन।
तीनौं लोक में जानी मृडानी, ऐसौ प्रसाद दीजै,
दुख-द्वंद दूरि होय, सुख सरीर आनंद करन॥
महामाया भद्रकाली कल्यानी शिवानी, मैनात्मजा दुखहरन।
चंड-मुंड-महिषासुरमर्दिनी, 'तानसेन' सेवक-
सुख करन, तूही जगत पोषन-भरन॥

[३२] राग त्रिवण, चौताल

माता जालपा भवानी, जाकौं नागलोक नरलोक,
भुवलोक इंद्रलोक त्रिभुवन मानी।
सर्वानी सकल जग जानी, और दारिद्र भयहरिनी महारानी॥
जे मन-बच-करम कर तुमकौं ध्यावैं,
तिनकौं बुधिदानी, ऐसी प्रसिद्ध महा वाक्बानी।
असुरन-दलमलन अंबे, आदि शक्ति,
सुर-नर रटत रहत गुनी-ज्ञानी॥
'तानसेन' कौं मनमानी करम कर दया कर,
दयानी तान-ताल-अक्षर दै सारदा भवानी॥

[३३]

दया कर दयानी, सो राग-रंगत सौं गाऊँ उत्तम बानी ।
जंबू दुर्गा भवानी, राग-तान-ताल सहित सौं अब होवैं परम ज्ञानी।।
उक्ति-जुक्ति काव्य करन ऋद्धि-सिद्धि नवनिद्धि दानी ।
'तानसेन' प्रभु इतनौं माँगत तुम पै,
सुख-संपति-विद्या दै काश्मीर की रानी ।।

[३४]

रागिनी मुलतानी भीमपलासी, तिताला

जै-जै कर पूजौं धौलागढ़ की रानी नैं ।
पान-सुपारी-धुजा-नारियल पहिलैं भेट भवानी नैं ।।
तेल-फुलेल-अरगजा-अंबर लै चढ़ावत वाक्‌बानी नैं ।
तानसेन यह प्रसाद माँगत, दीजै बुधि और बानी नैं ।।
ब्रह्मा वेद पढ़ैं तेरे द्वारे, शंकर ध्यान समानी नैं ।
बीरबली वंश ब्राह्मण कुल तारन, 'तानसेन' बरदानी नैं ।।

[३५]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

जै-जै कर पूजौं धौलागढ़ की महारानी नैं ।
पान-सुपारी-धुजा-नारियल पहिलैं भेंट भवानी नैं ।।
तेल-फुलेल-अरगजा-अंबर लै चढ़ावौ वाक्‌बानी नैं ।
'तानसेन' प्रभु तुमही कौं ध्यावै, दीजै बुधि और बानी नैं ।।

[३६] रागिनी टोड़ी, तिताला

कराल बदनी काली, त्रिसूल-खप्पर सोहै, चंडी असुर-संहार कारन ।
महिषासुरमर्दिनी इंद्रानी माहेश्वरी,
मेनकात्मजा उमा कात्यायनी गौरी तरन तारन ।।
नारायनी निरग्रंथा काश्मीर अस्थानी, शिवा रुद्रानी अपरंपारन ।
नगरकोट-रानी, महिमा तुम जग जानी,
'तानसेन' निसि-दिन सुमिरत संकट निवारन ।।

सूर्य— [३७] राग भैरव, चौताल

जै सूर्य जगच्चक्षु जगबंदन, जगत्राता जगत्कर्ता जगन्नाथ।
आदित्य सविता अर्क खग पूषा,
गभस्तिमान् भानु दिवाकर, जग-कारज होंय तेरे हाथ॥
ज्ञान-ध्यान-जप-तप-तीरथ-व्रत,
संयम-नेंम धर्म-कर्म सब उदय होंय सनाथ।
'तानसेन' पै प्रभु कृपा कीजियै,
राग-रंग-स्वरन सौं निस-दिन गाऊँ तेरी गाथ॥

[३८] राग भैरव, चौताल

प्रभाकर भास्कर दिनकर दिवाकर, भानु प्रगटे विहान।
तेरे उदै तैं पाप-ताप छूटें,धर्म-कर्म नेंम-प्रेम होंय गुरु ज्ञान औ ध्यान॥
जगमगात जगत पर जगच्चक्षु, जोति रूप कश्यपसुत जगत के प्रान।
तेरे उदै तैं जगत-कपाट खुलत,
'तानसेन' कौं दीजियै विद्या कृपानिधान॥

[३९] रागिनी गुर्जरी, तिताला

तिमिर-हरन प्रभातकर दिनकर।
तेजस्कर जनन्मनि दृगमनि विभाकर॥
सहसरस्मि भस्म-करन पतंग गोप्ता तम कौ,
रस्मिवान महामारतंड मेहर।
तो ही तैं चंद, तो ही तैं अगिन-पानी नंग, तो ही तैं अनेक रंग,
तोही तैं चटखताई, तो ही तैं भोग गत, तो ही तैं छूटत डर॥
तेरे उगेतैं सब जगैं,चंद्र भासै विभावान,विहँसै सविता कविता गर।
'तानसेन' यह विनती करत, जौलौं तू नित दीपत रहै,
जौलौं सुरसरी, तौलौं रहै छत्र धरैं साह अकब्बर[1]॥

---

[1] पाठ अत्यंत अशुद्ध मिला है, जो ठीक किया गया है।

त्रिवेणी— [४०] राग भैरव, चौताल

है कालिंदी अति प्रतापवारी अघहारी,
सरसुती मिलि भई त्रिवेनी।
पीछे तें आवत यमुना स्याम रूप,
बरन घोर रूप, पाषान तोरि गुमान तें चली जम कें बेनी ॥
अरुन बरन सरस्वती, गुपत प्रगट होत,
चंद्र किरन जोति आकास पर छुवत भुज तेनी ।
तैसें बन-बन धाय ताहि मिलन चली,
लाल छवि अति रंग भीनी ॥
भागीरथी तू री भगत-तारन,
सगर-उद्धारन सागर समुहानी ।
सब भुअ पावन पै धार तीरथ प्रयाग,
वे तारी जलौघापति धरिनी-तरनी ॥
तौ लौं उतपत्ति नर-नारी ब्रह्मा-विष्णु मकर नहावत,
करत अस्तुति गावत भर नाद 'तानसेन' गुनी ॥

[४१]

अरुन बरन सरस्वती गुपत प्रगट होत,
चंद्र किरन जोति आकास पर छुवत भुज तेनी ।
तैसें बन-बन तेहु मिलन चली लाल अति रंग भीनी ॥
भागीरथी तू री भगत-तारन सगर-उद्धारन सारैनी ।
सब भुअ पावन पै धार तीरथ प्रयाग तें,
तारी जलौघापति धरिनी-तरनी ॥
तौ लौं उतपत्ति नर-नारी ब्रह्मा-विष्णु मकर नहावत,
करत अस्तुति गावत भर नाद 'तानसेन' गुनी ॥

रूप-त्रिवेणी— [४२] राग भैरव, चौताल

चंद्रबदनी मगनैनी ता मधि तारका गंग,
पूतरी कालिंदी, इहि विधि डोरे बनाय कीन्हीं तिरबैंनी ।
छूटी पोत कंठ, दीपक मुख की जोति होत,
तामैं गुप्त प्रगट सरस्वती मिली ऐनमैंनी ।।
सुंदर रूप अनूपम सोभा,त्रिभुवन पाप-ताप हरनी, करत सुख चैनी।
'तानसेन' कौं करौ निरमल तू ,
दाता भक्त जनन की, बैकुंठ की नसैनी ।।

[४३] राग भैरव, चौताल

चंद्रबदनी मृगनैनी तारा मध्य तारिका गंग,
पूतरी कालिंदी, इहि विधि डोरे बनाय कीन्हीं तिरबैंनी ।
छूटे पोत कंठ, दीपक मुख की जोति होत,
तामैं गुपत सरस्वती मिली ऐनमैंनी ।।
सुंदर रूप, अनूपम सोभा, त्रिविधि रजोगुन तोगुन तामस गुन,
राजत लाल-स्वेत-स्याम तरन-तारनी मुक्ति दैनी ।
निरखत ही आनंद होत, तव दरस परसत ही,
तेरौ रूप अपरंपार, कहाँ लौं बखानै 'तानसेनी' ।।

गंगा— [४४] राग भैरव, चौताल

जै गंगा जग-तारिनी जग-जननी पाप-हरनी,
बेद-बरनी बैकुंठ-निसानी ।
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा,
जाह्नवी जग-पावनी जग जानी ।।
ईस सीस मध्य बिराजत, त्रैलोक पावन किये,
जीव-जंतु, खग-मृग, सुर-नर-मुनि मानी ।
'तानसेन' प्रभु तेरी अस्तुति करत है,
दाता भक्त जनन की, मुक्ति की बरदानी ।।

अल्ला— [४५] रागिनी गुर्जरी, चौताल

या अल्ला, मोमन तू आपु सौं ऐसे कर लगा ।
हौंही नमत तू प्रवीन सुमति दै, कुमति भगा ।।
जिन तेरौ नाम लियौ, तिनकौ दुःख गयौ, तू अध्यान पगा ।
'तानसेन' माँगै सुख-संपति-संतति, तानन रंग रँगा ।।

[४६]

यह कमाल कुदरत कादिर तेरी, स्वत ही कहौ यल ली यला ।
सब ही में छायौ, याही तैं पायौ है, कालु अला ।।
दो-दो तैं सब ही की दोउ आप बनाय राखौ,
लै-लै कैं महा मरद बिल्ला ।
'तानसेन' प्रभु पै बिल्ला-बिल्ला, लिल्ला सम बिल्ला ।।

हजरत महम्मद— [४७]
रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

पाक महम्मद अल्ला रसूल तेरौ ही नूर जहूर ।
धन-धन परवरदिगार, गुनाहगार तू बक्सन,
तू ही जग रम रह्यौ भरपूर ।।
वेचुन, वेचगुन, वेशुवे, वेनमून,
अव्वल आखीर, तुही निकट, तुही दूर ।
जित देखूँ तित तुही, तुही व्यापि रह्यौ जल-थल,
धरनी-आकास 'तानसेन' तुही हजूर ।।

हजरत अली— [४८] रागिनी गुर्जरी, चौताल

हजरत अली की सुदृष्टि भली मो पर,
जो दुख जाय सब तन से भाज ।
हौं सेवक तिहारौ तुम जात पाक करीम,
करम कीजै राख लीजै, यह जगत में मेरी लाज ।।
वेचुन, वेचगुन, वेशुबे, वेनमून, पाकजात रियाज नियाज ।
'तानसेन' रब रहमान करीम रहीम, बिनती सुनियै आवाज ।।

पीर-पैगंबर— [४६] राग भैरव, तिताला

महम्मदनवी हवीबअल्लाह के साह मर्दान,
अली वली मरद कुफर दारिद्र-हरन हजरत हसन बुजरक इमाम ।
ससार के साहब हुसैन सैयद साहजादे,
जेनलाबुदीन दीनपर्ना महम्मद बाकर,
करतार कीने मनचीते करन काम ॥
हजरत जाफर सादक साँचौ सीदक इमाम, मुलकाजम हजरत-
अली बिन मुसीररजा, जाकौ दरस देखें जाय दारिद्र दाम ।
हजरत तकी अलीनकी हजरत हसन मसगरी, इमाम महम्मद-
मेंहदी साहब जमान, दै सुख संपति-संतति राखौ तिहुँलोक नाम॥
ख्वाजापीर निजामुद्दीन औलिया तू सत्तार,
परवरदिगार करीम रहीम, दरियाई पीर रोशन गाजी धाम ।
हैदररसूल गौस कुतुबुद्दीन अल्ला फकीर,
'तानसेन' कौं दीजै राग-रंग तीन ग्राम ॥

[५०]

नाम लेत दुख टरत मौन दिल ख्वाजा ।
सरस होत सुख परसत ही दरगाह रोशन जंबीर,
दस्तगीर हाजी उनके करत मन चीते काजा ॥
चिस्ती चिराग अता दीन उजारे भार,
तो पै रटत कीनौ इसलाम कुफर भाजा ।
'तानसेन' सेवक कौं रहम कर कीजियै दीन-इमान,
गरीबनिवाज सी करता जा हितपति राजा ॥

[५१] रागिनी मालश्री, तिताला

चरन तक आयौ हौं पीर अता तुम्हारे द्वार ।
करतार तुम सब बिधि कीनौं निस्तार ॥
तारवे कौं राग-ताल 'तानसेन' सौं आज ॥

[५२] रागिनी टोड़ी, झपताल

शेख फरीदी गंज जिनकी रजाकर पाइयत है,
न्यामत मौज मन की मुराद भरत वर।
दोऊ जहान कबूल मकबूल सब सेवक सेवा कर पावत,
एक पावत ततछिन नाम लेत, तरंग ऐसी पाटंबर बस्तर ।।
मो मन की मुराद तू अबेर एक जाहिर बातिन सौं,
हिलमिल रहैं एते पर, सुमिरन करैं सब नारी-नर।
बात यह जान 'तानसेन' बिनती करै,
दीजै पाक छेम-कुसल गुन भर ।।

[५३] राग भैरव, चौताल

शेख फरीद आलमगीर गंजबकस सरगंज।
नाम ऐसें कै लीजै निवाज रहै जग में लाज, जाय तन तें रंज ।।
जेई-जेई माँगियै तेई-तेई फल पाइयै, तन कौ करत दारिद्र भंज।
'तानसेन' कहै एतौ ही माँगियै तुम पै, जो हो मदत न पुंज ।।

[५४]

शेख बहावदीन गोसल आलम सेदी ही सरमस्त।
अष्टसिद्धि नवनिधि पाइयत मन बिच,
करम करके अल्ला रसूल परस्त ।।
दारिद्र-भंजन और अंजन कीजै उपज मेरी बरजस्त।
'तानसेन' की औलाद लौं सहत दामन होवें वरगस्त ।।

[५५] राग भैरव, चौताल

बेदन दरद दूर करौ हजरत मीर।
और करौ सुमिरन हजरत इमाम, काम मुरसद साँचे हौ तुम पीर।।
जो फल माँगै सो फल पायै, राज पाट सुख तरीर।
'तानसेन' प्रभु रहीम करम कीजै, पाप न रहत सरीर ।।

२—ज्ञान-भक्ति

निराकार महिमा— [५६] रागिनी टोड़ीं, चौताला

तू ही एक आदि, निरंजन निराकार नादरूप,
तेरौ ही पसारौ पूरौ सब संसार।
अलख, अव्यक्त, जग निस्तार करन तूही,
एक पाकपरवर अपरंपार ॥
जल-थल-धरिनी धवल तूही पूरन,
सकल महिमंडल तेरौ ही आधार।
'तानसेन' कौ दुख-दारिद्र दूरि करौ, कर्ता-हर्ता तू करतार ॥

व्यापक ब्रह्म— [५७] रागिनी टोड़ी, चौताल

तूही ब्रह्मा, तूही विष्णु, तूही महादेव, तूही गुरु, तूही चेला।
तूही सोना तूही सुनार, तूही कसौटी कसनहार,
तूही दीपक तुही मंदिर, तूही भेला तूही अकेला ॥
तूही रैन तुही दिन, तूही पर्वत तुही पाषान,
तूही जल तूही थल, तौही सौं मेला।
'तानसेन' के प्रभु तूही सबन में, तूही छैला, तूही अलबेला ॥

[५८] राग भैरव, धीमा तिताला

प्यारे ! तुही ब्रह्मा, तुही विष्णु, तुही रुद्र, तुही गुरु, तुही चेला।
तुही जल, तुही थल, तूही प्रबल, तुही अबल,
तुही छैल, तुही अलबेला ॥
तुही ऊँच, तुही नीच, तुही पाप-पुन्य, तुही बीच, तुही मेला।
'तानसेन' कहै प्रभु कहाँ लौं बखानूँ, तुही बहुत, तुही अकेला ॥

[५६] राग भैरव, चौताल

प्यारे ! तुही ब्रह्मा, तुही विष्णु, तुही रुद्र, तुही शक्ति,
तुही गणेश, तुही सूरा ।
तुही जल, तुही थल, तुही पवन, तुही आकास,
तुही अधूरा, तुही पूरा ॥
तुही छैल, तुही अलबेला, तुही रोवत, तुही हँसत,
तुही उठत-बैठत-चलत, तूही दूरा ।
'तानसेन' के प्रभु एकहि अनेक होइ, जग में व्यापि रहे हजूरा ॥

[६०]

तुम रब, तुम साहेब, तुमही करतार,
घट-घट पूरन जल-थल भर भार ।
तुमही रहीम, तुमही करीम, गावत गुनी-गंधर्व, सुर-नर सुर-नार॥
तुमही पूरन ब्रह्म, तुमही अचल, तुमही जगद्गुरु, तुमही सरदार ।
कहै 'मियाँ तानसेन' तुम ही आप,
तुमही करत सकल जग कौ भव पार ॥

[६१]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, तिताला

ब्रह्म गति अपरंपार न पाऊँ ।
पृथवी-पहार-पाताल ढढोरौं, और गगन लौं धाऊँ ॥
जौ लौं न होय सुदृष्टि तिहारी, मन इच्छा फल नहीं पाऊँ ।
तीरथ प्रयाग सरस्वती त्रिवेनी, सब तीरथ ह्वै कै गुरुद्वार जाऊँ ।
भागीरथी गौतमी और गंगा, 'तानसेन' गावै हरिद्वार चाहूँ ॥

[६२] रागिनी गुर्जरी, तिताला

रूप निरंजन अंजन रहित, ताहि बरनिवे कौं–
उदित भये छहौ शास्त्र अठारहौं पुरान ।
ताकौ भेद नहीं पावत शिव-सनकादिक,
ब्रह्मा-नारद-शेष रटत वोहू ब्रह्मा शिव घट व्यापक,
कोटि-कोटि ब्रह्मांड रचत देख लेहु बुधिवान ॥
आदि-अंत-मध्य वोही त्रैलोक चराचर,
वाही की इच्छा तें करत वितान ।
'तानसेन' के प्रभु सब जग व्यापि रहौ,
पूरन ब्रह्म अविनासी निरंकार अविनासी भगवान ॥

[६३] रागिनी टोड़ी, झपताल

धरिनी-धरन, अधरन-दाता विधाता, विश्व भरन पोषन ।
भागवंत सौभाग तरन-तारन भक्तजन कौं,
सकल सुख करन मोखन ॥
आदि-अंत तुही रोम-रोम रमि रह्यौ सब में,
तू ही चर-अचर थावर-जंगम तोखन ।
'तानसेन' तेरी अस्तुति कैसैं करौं अलख निरंजन,
निराकार ध्यान रहै तेरौ दुरन हू बोलन ॥

ईश्वर महिमा— [६४] दरबारी टोड़ी

तू आपु समान कोऊ दूजौ रच्यौ नाँहिन,
गुन-सामर्थ न पायौ है, धर्मराज गरीब-निवाज ।
तुम सम और कौन महाज्ञान गुननिधान,
दाता-विधाता रचि-पचि विरचौ ज्ञानी-समाज ॥
भरन-पोषन दुख-दारिद्र हरन, षट दरसन निवास सकल साज ।
'तानसेन' कहै प्रभु हिंदू मुसलमान भक्त उद्धारन भगवान,
तानैं प्रगट कियौ सकल गुन-साज ॥

ईश्वर कृपा— [६५] रागिनी मालश्री

जब करतार करम करै तौ सब कछु पावै,
नाद विद्या सुद्ध संगीत आवै।
जान बूझ भूलौ फिरै रे क्यों न वोही नाम लेत,
जा सुमिरत ही सुर-तान गावै॥
जे नर-मुनि-गुनी पचि-पचि हारे, बिना कादर कोऊ नाँ बतावै।
'तानसेन' प्रभु निसि-बासर, अब तेरौ नाम ध्यावै॥

विधाता कुम्हार— [६६] राग मालव, चौताल

भाँति-भाँति के भाँड़े गढ़े, ऐसौ विधना कुम्हार।
एकन उत्तम न्यामत, एकन मध्यम न्यामत,
एकन निकृष्ट न्यामत, एकन राखौ खाली कर मिकदार॥
एकन देत रीझत, एकन लेत रीझत, एकन कौं करोरन दिये,
एकन कौं हाथ खप्पर दिये, माँगत भीख द्वार-द्वार।
एकन कौं नरक, एकन कौं सरग देत,
'तानसेन' प्रभु रच्यौ संसार॥

ईश्वर ध्यान— [६७] रागिनी टोड़ी, तिताला

रे मन जब लगि पिंड प्रान, तब लगि जग नाँतौ,
सबहिन सौं व्यवहार।
जब लगि जीजियै, तब लगि हरि-नाम लीजियै,
राग-रंग कीजियै, यह तन-मन-नैंन-प्रान, जात न लागै बार॥
बालापन, तरुनाई और वृद्धावस्था,
पुनि-पुनि जनम-मरन होत संसार।
'तानसेन' करिलै ध्यान विश्वंभर कौ,
यही पूंजी, यही जमा, यही है सार॥

ईश-स्मरण— [६८] रागिनी धनाश्री, चौताल

सुमिरन ताकौ करौ क्यों न, जो है सत्तार।
यह सुनलै कान, और निहचैं जान, मान एक परवरदिगार।।
जो कोई ध्यावैं सो मुराद पावै, ऐसौ है गव्वार।
'तानसेन' कौं दीजै अन्न-धन-लच्छमी, यह माँगत बार-बार।।

[६९] रागिनी धनाश्री, चौताल

सुमिरन हरि कौ करौ रे, जासौं होवै भव पार।
यह सीख जान मान कह्यौ है पुरान में, भगवान आप करतार।
दीनबंधु दयासिंधु पतित पावन आनंदकंद, तो सौं कहत हौं पुकार।।
'तानसेन' कहै निरमल सदा रहियै, नर-देही नहीं बार-बार।।

सत्य प्रशंसा— [७०] रागिनी टोड़ी, चौताल

ए मन, जब लगि नैंन प्रान, तब लगि जियत सब काहू कौ दिदार।
जब लगि जीजियै, तब लगि कीजियै,
राग-रंग घरी-घरी पल-पल छिन-छिन, जात न लागै बार।।
साँच ही बोलत, साँच ही तोलत, साँच ही कीजै बनज-बिहार।
'तानसेन' के प्रभु साँच ही में रम रहे,
यातैं समझ बूझ देखियै, जग सपनौ संसार।।

विनय— [७१]

अब मैं राम-राम कहि टेरौ।
मेरौ मन लागौ उनहीं सौं, सीतापति-पद हेरौ।।
चरन सरोज श्रवन मन मेरौ, धुज अंकुस सुख केरौ।
'तानसेन' प्रभु तुम हो नायक, इन तरवन पर फेरौ।।

प्रबोध— [७२] रागिनी टोड़ी, चौताल

ए मन, तू जो अपनौ सुख चाहत है,
घरी-घरी, पल-पल, छिन-छिन सुमिर लै श्री राम नाम ।
जो जग जप-तप नैंम-धर्म ब्रत-संजम,
ज्ञान-ध्यान गहैं दृढ़ हरि चरनन बिस्राम ।।
और उपाव नाँहीं कलिजुग में, कृष्ण-कृष्ण कहत होय आराम ।
'तानसेन' प्रभु की चरन सरन गहि लै, जासौं पावै वैकुंठ धाम ।।

[७३] रागिनी टोड़ी, चौताल

सर्व ही माँगत जो हौं री माई, आगम भयौ आवन परस ।
जपत ही सर्व दुख-दारिद गयौ जो तानसेन,
पिया हियरा हुलसाये अरस-परस ।।
राम ही नाम हिरदैं धरौ प्रगट है अष्ट जाम,
'तानसेन' पिया नित धरौ ।
षरज-रिषभ-गांधार, मध्यम-पंचम-धैवत-निषाद,
श्री राम नाम सुमिरन करौ ।।

[७४]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताला

भक्ति-ज्ञान भक्तन की सेवा करि रे,
जब तेरी भगताई, सुमिरन करि हरि कौ ।
कौन भरम भूलौ, भटकत फिरत अष्टयाम,
याद रख राम-कृष्ण कौं, पारब्रह्म परमेश्वर कौ ।।
निरंजन औ निराकार, अखल जोति, जगतपति,
भक्त-वत्सल गिरवरधर कौ ।।
'तानसेन' के प्रभु कौ ध्यान धर निस-दिन,
घड़ी-घड़ी छिन-छिन वा विश्वंभर कौ ।।

[७५] रागिनी टोड़ी, चौताल

मेरे मन माँहि हरिनाम, जिन रच्यौ अखिल धाम,
काम-क्रोध-मोह-लोभ बह्यौ जात संसार।
जिन रच्यौ स्वर्ग, मर्त्य और पाताल,
निरंजन सोई साकार, निसदिन जपले श्री मुरार॥
दीनबंधु दीनानाथ काटत दुख द्वंद-फंद,
ताही घरी पल-छिन न बिसार।
'तानसेन' कहै निरमल रहियै भजियै भगवान,
मानुस जनम नहीं बारंबार॥

[७६] राग मलार

दृगन मेरे जौलौं सुख होय, तौलौं देखिबौ करौं तिहारौ आनन।
एक पल अंतर, होय अँधियारौ, सूझत न रैन-दिन,
बोल न सुहाय काहू कौ आनन॥
तुम्हारौई ज्ञान-ध्यान, तुम्हारौई स्मरन,
तुम बिन मेरें और कोऊ मान न।
'तानसेन' के प्रभु, तिहारी मया तें, सब कोऊ लागे मोहि जानन॥

[७७]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

ए ईश्वर! मो हिय की जानत,
गति जो बीतति, विना देखें तुव दरस।
एक निमिष जु पै नाँहिन निरखत मैं,
साँस अकुलात, कछु न सुहात, मन-नैंन दोऊ जात तरस॥
भव-भंजन, मन-रंजन, काटत दुख-द्वंद,
ऐसौ जग में व्यापि रह्यौ सरस।
तुही आदि, तुही अंत, तारनतरन, 'तानसेन' तुही अरस-परस॥

[७८]

जनम यौंही गँवायौ बावरी, अब गहै न हरि के चरनन।
हौं जान्यौ प्रिय जोबन थिर रहैगौ, भूली याही भरमन ॥
लख चौरासी भटकत-भटकत, सरन सुमेरु पायौ मनुष्य धरमन।
'तानसेन' के प्रभु सुमिरन करिलै, सुद्ध चित्त करमन ॥

[७९]

तेरी गति-औगति मो पै वरनी ना जात नारायन निरंजन,
निराकार परमेश्वर सप्तदीप शिवशंकर।
शिवशंकर अवतार कौं लेवत हरत भरत बित,
देखत तेरी विडंबना सबही, सकल स्त्री-पुरुष, नारी-नर ॥
तूही जल-थल, तुही पसु-पंछी, तुही पवन-पानी, तुही धरती-अंबर,
तुही चंद्र, तुही सूर्ज, बसौ जो जल-थर।
'तानसेन' के प्रान उड़त हैं, जानत हैं सब घर-घर ॥

कृष्ण भजन— [८०] राग भैरव, चौताल

प्रथम उठि भोर ही राधे-कृष्ण कहो मन,
जासौं होवै सब सिद्ध काज।
इहलोक परलोक के स्वामी, ध्यान धरौं श्री ब्रजराज ॥
पतित उद्धारन, जन प्रतिपालन,
दीनदयाल नाम लेत जाय दुख भाज।
'तानसेन' प्रभु कौं सुमिरौ प्रात ही, जग में रहै तेरी लाज ॥

[८१] राग विभास, ताल रूपक

कन्हाई दै दरसन तू आपुनौ, ये संसार रैन कौ सपुनौ।
तुही दाता, तुही भोक्ता, तेरौ नाम मोहि जपनौ ॥
दुनियाँ द्वंद फंद सब कीने, लागत है जेतौ ये जगत सब खपुनौ।
'तानसेन' पिया विनती करत हौं, साहब नाम मोहि रटनौ ॥

[८२]

कृष्ण केशव कमलनयन केसीदलन कान्हर करतार,
सुरन के भरन करुनानिधि कुंजबिहारी कामकंदन किसोर।
जोगी ध्यानी अरु जनार्दन मुकुंद माधौ रंगनाथ,
रागी के सरन छोर ।।
पारब्रह्म परमेसुर पुरुषोत्तम प्रहलाद उाबरन,
महाबली जोधा नहीं और।
'तानसेन' प्रभु भक्त रच्छा करौ, अनंत अकोर जन चितवत कोर।।

[८३] रागिनी टोड़ी, ख्याल तिताला

गोविंद गोपाल गरुड़गामी, गोपीनाथ गोवरधनधारी गोप-मनरंजन।
बंसीधारी गिरधारी कुंजबिहारी बहुरूपधारी,
कंसारी मुरारी गर्व-प्रहारी दुष्ट-गंजन ।।
मधुसूदन माधव मथुरापति मुक्तेश्वर, मनभावन दुखन भंजन।
बासुदेव बिट्ठल बनवारी बदरीनाथ,
बौद्ध रूप विष्णु 'तानसेन' भक्त मन-मंजन ।।

[८४] राग भैरव, चौताल

मोहन सृष्टि के आधार, जन कों अब राखि लीजै गोपाल।
नैन प्रान-सुख दीजै, तन तैं दुःख दूर कीजै,
इतनी विनती मेरी सुन लीजियै हाल ।।
पतित-पावन करुना-सिंधु, दीन दुख-भंजन,
अनेक रूप-लीलाधारी, भक्त-वछल, जुग-जुग भए कृपाल।
मदनमोहन, मधुसूदन, मुरारी, गज-सुदामा-द्रौपदी सहायकारी,
'तानसेन' प्रभु भक्त-प्रतिपाल ।।

वस्तु श्रेष्ठता— [८५] रागिनी टोड़ी, चौताल

प्रथम शब्द ओंकार, वर्ण प्रथम आकार,
जाति प्रथम ब्राह्मण प्रनाम करि लीजियै ।
देव प्रथम नारायण, ज्ञानी प्रथम महादेव,
क्षमा प्रथम धरिनी, तेज प्रथम भानु लिखि लीजियै ।।
नदी प्रथम गंगा, पर्वत प्रथम सुमेरु,
साज प्रथम बीना, भक्तन प्रथम नारद कहि दीजियै ।
गीत प्रथम संगीत, नर में प्रथम स्वायंभू मनु, राजन प्रथम-
राजा राम, तानन प्रथम 'तानसेन' उनंचास कूट रस पीजियै ।।

[८६] रागिनी खंबावती, चौताला

मंदिर मनि दीपक, काया मनि जीव,
रजनी मनि चंद, दिन मनि है जु भान ।
फूल मनि पंकज, वृक्ष मनि कल्पवृक्ष,
विद्या मनि भोज, विक्रम जनन मनि जान ।।
वेदन मनि सामवेद, राजन मनि राजा राम,
आनंद मनि सुख-निधान ।
सरिता मनि गंगा, वीर मनि हनुमान,
गुनियन मनि 'तानसेन', गुरुन मनि ज्ञान ।।

[८७]

सर्व मनि ब्रह्म ताकौ रच्यौ है संसार,
पुरुष मनि पुरुषोत्तम अवतार ।
बरन मनि ब्राह्मण, नाम मनि राम नाम,
पुरान मनि भागवत, ज्ञान मनि गीता कर विचार ।।
भक्त मनि प्रहलाद, पंछिन मनि गरुड़,
बनन मनि वृंदाबन, रसिक मनि मुरार ।
तानन मनि प्रभु 'तानसेन', ज्ञानिन मनि महादेव,
प्रेमिन मनि नारद, बालक मनि सनतकुमार ।।

[८८]

रागिनी मालश्री, ताल सुर फाक्ता

सर्व मनि अल्ला, बड़ेन मनि खुदाई, जोत मनि नूर,
थिरता मनि आकास, कारन मनि करता,
भोगन मनि भुक्ति सृष्टि करन ॥
वेदन मनि सामवेद, मारन उच्चाटन मनि अथरवन।
नाद मनि अनहद पंचमवेद, कौल मनि कलमा,
पुरान मनि भागवत, भाषा मनि अरबी,
बनन मनि बृंदाबन ॥
आसन मनि अरस कुरस, नर मनि नारायन,
बृक्षन मनि कल्पबृक्ष, रसिक मनि रासबिहारी,
भूषन मनि कौस्तुभ मनि।
सुख मनि संतोष, लाभन मनि हरिनाम,
जात मनि ब्राह्मण, धर्म मनि ईमान,
तानन मनि 'तानसेन' अखिल मनि भगवान ॥

[८९]

एक बल निरंकार, दूजे बल चंद-सूरज,
तीजे बल लोक, चौथौ बल प्रकास।
पंच बल भूत आतम, छठयें बल नारायन, सप्त बल सागर,
अष्ट भुजान बल, नवये बल नाग, दसये बल अवतार प्रकास ॥
ग्यारह बल रुद्र एकादस, बारह बल बामन,
तेरह बल त्रैलोक, चौदहवौं बल दै विद्या प्रकास।
पंद्रह बल तिथि, सोरह बल सिंगार,
सतरह बल सत्यवती, अठारह बल बनस्पति,
उन्नीस बल पिनाकधर, बीस बल लक्ष्मी,
इकईस बल 'तानसेन' प्रकास ॥

३—राज-प्रशंसा

राजा मानसिंह— [९०] राग विहाग, चौताल

छत्रपति मान राजा, तुम चिरंजीव रहो, जौलौं ध्रुव मेरु तारौ।
चहुँ देस तैं गुनी जन आवत, तुम पै धावत,
पावत मन इच्छा, सबहिं कौ जग उजियारौ ॥
तुम से जो नहीं और, कासैं जाय कहूँ दौर,
वही आजिज कीरत करै, मो पै रच्छा करन हारौ।
देत करोरन, गुनी जनन कौं अचाजक किये, 'तानसेन' प्रतिपारौ[1]॥

राजा रामचंद्र— [९१] राग गंधार, चौताल

सुंदर अति प्रवीन महा चतुर अचल राज करो,
रवि-ससि जौ लौं भूमि पर।
चिरंजीवी रहो जौलौं ध्रुव धरनि तरन पवन पानी,
राजन-मनि राजा रामचंद्र रघुवर ॥
तो सौ तुही और दूजौ नाँहीं, मेरे जान सब जग कौ विस्वंभर।
'तानसेन' तेरी अस्तुति कहाँ लौं बखानै,
भक्त-वत्सल तोहि ध्यावत सुर-नर-मुनिवर ॥

[९२]

गये मेरे सब दुःख, देखे तैं आप दरस।
अष्ट सिद्धि नव निधि देत हौ पलक में,धन-जन-कंचन जात बरस॥
एकन कौं गज-तुरंग, एकन कौं भूषन, एकन कौं बस्तर देहौ सरस।
'तानसेन' कहै राजा राम सकल काज पूरन,
गुनियन के दारिद्र जात परस ॥

[1] यह ध्रुपद रागकल्पद्रुम भाग १, पृष्ठ ३२१ पर छपा है। 'कवि तानसेन और उनका काव्य' पृष्ठ १०८ पर 'छत्रपति मान राजा' का पाठांतर 'छत्रपति राजा राम' छापा गया है।

[६३] रागिनी टोड़ी, चौताल

प्रथम ही आनंद रच्यौ, नीकौ घरी-महूरत पंचौ सब्द बजाये।
देस-देस के जाचक जेते आवत ते-ते पावत,
गज-तुरंग-नग-दाम-मुक्ता बरसाये ।।
अष्टौ धरन, मध्य नाम जोति,
अरिन के मारवे कौं विधि नैं बनाये।
'तानसेन' कहै जुग-जुग चिरंजीव रहौ,
राजा राम तेरौ जस तिहुँ लोक छाये ।।

[६४] रागिनी टोड़ी, चौताल

साके कौं विक्रम, दैवे कौं बलि-करन, वेद सम नहीं ज्ञान।
बल कौं भीम, पैज कौं परसुराम,
बाचा कौं जुधिष्ठिर, तेज प्रताप कौं भान ।।
इंद्रसेन राज कौं, मूरति कौं कामदेव, प्रभा कौं मेरु समान।
'तानसेन' कहै सुनौ साह अकबर,
राजन में राजा राम नंदन विरहभान ।।

[६५] राग षट्, ताल धीमा

तुम राजा राम, कहा जानत काज अरु कान।
एक घर गावत, रवि-ससि गावत, मध्यम पंचम रे करत विनान।।
एक घर गावत, एक समझावत,
एक नाँचत गति ऐसी सदा रहत विनान।
ससि-बरन राजन-पति, धरा-पति, हिंदूपति,
'तानसेन' केरी अरब-खरब भूषन कैं, तो समान को करत विनान।।

[९६] रागिनी देशी, टोड़ी

ए तुम सजि-सजि दल चढ़त जब भूमि पर भार होत,
थरथरात देस-देस के गढ़पती सुनि धाक धरहरात ।
जाके चढ़े तें खुर रेंनु उड़त, गगन छिपि जात,
खलबल परत सिह हू पै, बाजत निसान जब सब्द घहरात ।।
देव-दानव और राव-राना भाज गये,
सेस पाताल लौं कमठ पीठ कलमलात ।
सहस-सहस फनि कटि-कटि चूरि-चूरि भयौ थरहरात ।।
महाराजन-मनि राजा राम रामचंद्र की सवारी होत,
अस्वदल, गजदल, पयदल सुनि-सुनि अकबकात धकधकात ।
ऐसौ सूरौ-पूरौ वासौ वोही दूजौ नाँहि,
मेरे जान 'तानसेन' गुनीजन कौं अचाजक कीन्हौं,
वाकी सूरत-मूरत पर बलि-बलि जात ।।

[९७] राग मेघेन्द्र, झपताल

मगन रहौ रे दालिद्र हरैं, क्यों नाँ भजै निरंजन,
जाके मन में ज्ञान धरैं ।
चौदह रतन के कोटन देत दस्तार,
या बात की कौन सरबर करैं ।।
कहा भयौ जो भये छत्रपति नरेस,
राजा राम कौ प्रसाद पायौ न, विपत-सागर कौन तारौ तरै ।
जब भये हातिम-हरिचंद और बलि-करन,
उनहूँ कौ तीरथ कोउ करैं ।।
ये राजा राम ऐसी करैं, तौ सकल ब्रज की मरजाद टारी टरैं ।
वीरभान कौ नंदन काटत दुख-फंदन, बिनती करै 'तानसेन' उरैं।।
पूरब दिसा तें पश्चिम हू रिझायवे कौं,
राम दैवे कौं सब्रन आनंद करैं ।।

शाहंशाह अकबर— [९८] रागिनी टोड़ी, चौताल

चढौ चिरंजीव साह अकबर साहनसाह,
बादसाह-तखत बैठौ छत्र फिरै निसान।
दिल्ली-पति तुम नबी जी के नायब, अति सुंदर सुलतान॥
चारौं देस लिये कर जोरि कमान,
राजा-राव-उमराव सब मानत तोरी आन।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनियो महाजान,
तुमसे तुम्हीं और नाँहि दूजौ, गुनी जनन के राखत मान॥

[९९] राग विहाग, चौताल

कासी, कास्मीर, कामरू, करनाटक, बूँदी, बुंदेलखंड।
मालवा, मुल्तान, मेवाड़, खुरासान, बलख, बुखार, गोकुल मंड।
बीजापुर, बंग, बदखसान, रूम, स्याम भरत सम दंड॥
कहत 'तानसेन' सुनो हुमायू के नंदन जलालदीन अकबर,
जाके डर डरात ब्रह्मंड॥

[१००]

तखत बैठौ और नर–जग कौं कीनौं निहाल।
छत्र-चँवर ढुरि ढारे मन मोती लगाये दिन दुलहा लाल॥
बीजापुर भागनगर सेतबंध करनाटक लंका लाहौर,
'तानसेन' कहैं ए हो जलालदीन, जग कीन्हे प्रतिपाल॥

[१०१] श्रीराग, तिताला

ए आयौ, आयौ रे बलवंत साह, आयौ छत्रपति अकबर।
सप्त द्वीप और अष्ट दिसा नर नरेन्द्र, घर-घर थर-थर डर॥
निसि-दिन कर एक छिन पावै, बरन न पावै लंका नगर।
जहाँ-तहाँ जीतत फिरत सुनियत है, जलालदीन महम्मद कौ लस्कर॥
साह हमायूँ कौ नंदन चंदन, एक तेग जोधा तकबर।
'तानसेन' कौं निहाल कीजै, दीजै कोटिन जर जरी नजर कमर॥

[१०२]

राग़िनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

ए आयौ,आयौ मेरे गृह छत्रपति अकबर,मन भायौ करम जगायौ।
पाछिलौ पुन्य मेरौ प्रगट भयौ, यातें अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष,
मन चायौ चारौं फल पायौ॥
काहू की न इच्छा रही तेरे दरस देखें,
पाप तजि धर्मराज अचल कर पढ़ायौ।
'तानसेन' कहै यह सुनो छत्रपति अकबर,
जीवन जनम सुफल कर पायौ॥

[१०३] रागिनी टोड़ी, चौताल

ज्ञानपति महेस, विद्यापति गनेस,
पृथ्वीपति नरेस, बलपति हनुमान।
सरितापति सागर, गिरवरपति सुमेरु,
राजनपति इंद्र, धर्मपति दान॥
बाजेनपति मृदंग, पत्रनपति पान,
पंछिनपति गरुड़, भक्तनपति कान॥
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह,
'तानसेन'पति अकबर, अर्जुनपति बान॥

[१०४] राग भैरव, चौताल

मुरारे त्रिभुवनपते, इंद्र सुरपते, शेषनाग है फनपते।
छीर उदधि सलिलपते, कौस्तुभमनि रतनपते,
दिनकर दीननपते कमलापते॥
ससि-उड़गनपते, हनुमान बलिनपते,
नारदादि भक्तनपते, साजन बीन मृदंगपते।
चिरजीवौ साह अकबर नरपते, 'तानसेन' तानपते॥

[१०५] रागिनी टोड़ी, चौताला

धीरे-धीरे-धीरे मन, धीरे ही सब कछु होय।
धीरे राज,धीरे काज,धीरे योग,धीरे ध्यान,धीरे सुख-समाज जोय॥
धीरे तीरथ, धीरे ब्रत-संयम, धीरे ही करै सत्संग,
साधुन मैं बैठ मन कौं धीरै राखोय।
'तानसेन' कहै सुनौ साह अकबर, एतौ बड़ौ राज,
एती बड़ी बादसाही, धीरे ही तैं पाई सोय॥

[१०६] राग भैरव, चौताल

केते रतन जगत में उद्यम तैं प्रगट किये,
प्रथमहि कामधेनु-सुरतरु विधि ने बनाये।
पुनि कीने बिष, बारुनी, अमी और सुधाकर,
चारौं खान चिरावानी, परवाजी रविरथ तैं पाये॥
धनुष धनवंतर ढरन-मुरन गज श्रीमनि रंभा,
छुंद धारु धुरपद गायन लै बसाये।
'तानसेन' कहै कंबु कंठ तैं हुमायू कौ नंदन,
कल्पवृक्ष अकबर पारस पाये॥

[१०७]

रचि-पचि विरंच साह अकबर कीनौं,
दीनौं त्रैलोकनाथ माथैं भाग भरौ अभार।
यै री अवनी धारन अधार, निरा नाम निरा अदभुत,
सोई प्रतच्छ धन-दीदार, पायन पर करै संसार जुहार॥
गरीब-निवाज, साहन-सिरताज, छाजत सब राज-काज
कोऊ नाँहीं संसार में कियौ बिचार।
'तानसेन' कहै उनंचास कूट सुधार करै करतार,
और करि कौन सकत,
जलालदीन महम्मद कौ फिर अब अवतार॥

[१०८] राग भैरव, चौताल

सुभ नखत तख़त बैठौ राजन-मन।
छाजत है सब मुलक खलक जे विधना किये,
सब छत्र धरे तें लागे सब सेवा करन ॥
धग-धन चक्रवर्ती नरेस अकबर दुखहरन,
'तानसेन' ऐसौ सुरपुरी नर नरेन्द्र नर न ॥

[१०९] रागनी भैरवी, तिताला

तखत बैठौ महाबली ईश्वर होय अवतार।
देस-देस के सेवा करत हैं, बकसत कंचन-थार॥
जोई आवत, सोई फल पावत, मन इच्छा पूरन आधार।
'तानसेन' कहै साह जलालदीन अकबर,
गुनी जनन के काज करन कौं कियौ करतार॥

[११०] रागिनी आसावरी,ताल रूपक

चटक चित्र मित्र हू मिलत अमल नवल,
चित्त चढ़त रूप रंग भरत, जगत मन हरत।
प्रथम ही आतमा दरत, पुनि अरि-तन टूक करत,
बड़ी-बड़ी बार परत ॥
रस ढरत लटपटात थरथरात, बे होस भट है लरत।
एक मारत मरत, एकन दरत बिसरत,
हेरत रौर दारिद्र इनके दरत ॥
वही ज्ञान जी में धरत, परसत संसार नित,
धीर मन में यातें भूल न परत।
'तानसेन' कहत अकबर अल्ला सुमरि कैं नाम गाये,
एक दरसन ही सुरत निरत[1] ॥

---

[1] पाठ की गड़बड़ी कुछ ठीक की गई है।

[१११] राग मालव, चौताल

नवरंगी तेई अंग कीनौं,गुनी-कवि साधे-आराधे जो जानैं अकबर ।
कौन विद्यापति पूरौ नर ऐसौ, कौन कौं पूरी सरस्वती,
दृढ़ सर्व अंगी, वृषभ बाहन, सीस जटा,
कर डमरू-त्रिसूल-खप्पर, चंद्र ललाट बाघंबर ।।
गंग अरधंग गवरी,हिएँ मुंडमाला सोहै,त्रईलोचन तुही है हर-हर ।
और सुर-नर-मुनी गुनी-गंधर्व ते तोहि जपत हैं,
ईश्वर तन सतबल पाय, भ्रमना बिसार, तापर हित निवाजवौ,
बात 'तानसेन' कौं देहु इच्छा भर[1] ।।

[११२] राग भैरव, तिताला

इत भानु, उत साह अकबर, दो दरस जो देखै,
सोई होत पवित्र, मंद समीरन के बर पावै, आवै गुपत आनंद ।
वे तिमिर-हरन, ये दुख-भंजन,
ताके सौहैं करियत साह दुनी मकरंद ।।
वो सहस किरन प्रकास कीन्हौ, ये बुधि श्रेष्ठ मयाधर जगबंद ।
'तानसेन' कहाँ लौं अस्तुति करै, काटन हार विकार दुख-द्वंद ।।

[११३] रागिनी धनाश्री, चौताल

जल-थल में और जहाँ-तहाँ इत-उत जित-तित,
नित-नित तुही भर रह्यौ साहनसाह सत्तार रब ।
तोसौ और नाँही दूजौ, तो सौ तुही नरेस,
तुही दीन, तुही दुनी, तुही धनी, तेरौ ही सरन ।।
नाँ मोमैं जप-तप, नाँ संयम, नाँ तीरथ, नाँ लुवधौं धन-दरब ।
'तानसेन' साहब दुखियन कौ दुख दूर करन हार,
भंजन गरबिन कौ गरब ।।

---

[1] पाठ की गड़बड़ी कुछ ठीक की गई है ।

४— उत्सव

मंगल बधाई— [११४] रागिनी गुर्जरी, चौताल

एरी आली ! आज सुभ दिन गावहु मंगलचार ।।
चौक पुरावौ, मृदंग बजावौ, रिझावौ, बधावौ, बाँधौ बंदनवार ।।
गुनी-गंधर्व-अप्सरा-किन्नर. बीन-रबाव बजैं करतार ।
धन घरी, धन पल-महूरत, 'तानसेन' प्रभु पर बलिहार ।।

उत्सव धूम— [११५] रागिनी टोड़ी, चौताल

सब समूह करि हितू नर-नारी हरषित लैं,
चले करन लाड़िले के मंगन की ।
सहनाई कर लियैं और टंकोरन, बीन-रबाब-नगारेन की,
झाँझ झनकारन की ।।
बाजत ए धूमधाम, धावत याके अनेक दल,
गजदल पगदल अश्वदल संगन की ।
'तानसेन' सब नगर नर-नारी प्रफुल्लित भए,
गुनीजन गावत छिरकत अतर गुलाब, सुबास आवत सुगंधन की ।।

[११६] राग कान्हरा, चौताल

अकबर आयौ री आली श्रवन सुनत यौं,
बाजी नौबत, बहु बाजे तान ।
असुर-संहारन अपबली, तपन कौ जो मार्‌यौ,
विधना रच्यौ जैसैं इंद्र के समान ।।
कैई जंग जोधा जीते आये गिरवर सुमेर,
मन मेरे भाये अपबली तपवान ।
कहैं 'मियाँ तानसेन' तेरौ राज जौलौं गंग-जमुन पवन-पानी—
कल्पवृच्छ, कीजै मेरी छाँह अकबर सुजान ।।

[११७]

मदन महोत्सव— रागिनी मुलतानी धनाश्री, तिताला

घर-घर तैं ब्रज बनिता जो बन निकसीं आज,
कंचन-थार भरि-भरि नग नौंछावर करन लाल की ।
सप्त सुर लै गावत, कंठ कोकिला लाजत,
उपजत अति रसाल गमक तान-ताल की ॥
मदन महोत्सव साज समाज गोपी वृंद,
मिलि चलत चाल मराल की ।
'तानसेन' प्रभु रस बस कर लीने, तिरछी चितवन मदनगुपाल की॥

[११८]

दशहरा— रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

आनंद भयौ आज, आयौ विजय कर, घर-घर मंगलचार ।
अनेक गज-तुरंग साजे, नौवत-नगारे बाजे, गज-तुरंग साजे सवार ॥
तनवीतन घनसिखर नाना विधि बाजत, सुरपति के द्वार ।
ब्रह्मा वेद पढ़ैं, नारद मुनि गावैं, राजा रामचंद्र जी के आगार ॥
'तानसेन' कहै सुनौ साह अकबर, दसहरा सुफल भयौ तिथि-बार॥

ईद मुबारिक— [११९] रागिनी टोड़ी, तिताला

ईद मुबारिक होवैं जुग-जुग नित-नित, तुमकौं महरबान ।
सकल विद्या-गुननिधान अति ही आनंद करौ,
देत गुनीन कौं आदर-मान ॥
जुग-जुग जीवौ कोटि बरस लौं, दैवौ करौ नित दान ।
'तानसेन' कहै सुनौ साह अकबर,
चहुँचक राज करौ मरदन महा मरदान ॥

मद्य पान— [१२०] रागिनी आसावरी,तिताला

ए दारू पिलाउ कलाली, 'तानसेन' कौं खुमारी भयी अंत बिहाली ।
दुहाई साह जलाल की, प्याला भरि-भरि पिवाउ,हो लाल दुलाली॥

५—संगीत-विवेचन

संगीत उत्पत्ति— [१२१] रागिनी टोड़ी, चौताल

ओंकार ब्रह्मा उचारयौ चारौं आनन, तार करन सप्त प्रमान।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना,
बाईस सुरति उनंचास कूट तान ॥
आरोही अवरोही अस्थायी संचारी, अंस न्यास गृह जान।
औडव षाडव सुर सम्पूरन, 'तानसेन' गुरु ज्ञान उर आन ॥

अनहद नाद— [१२२] दरबारी देशी, टोड़ा

अनहद शब्द उपज्यौ मो घट में, ताकौ ध्यान धरूँ अष्टयाम।
खडज रिषभ गांधार, मध्यम पंचम धैवत,
निषाद पावै ज्यौं अति अभिराम ॥
बर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारौं पदारथ पाये,
अब प्रगट्यौ नाद ब्रह्म सहस रूप आनंद-धाम।
धन-धन जोति स्वरूप अचरज कर,
और परसैं 'तानसेन' कंठ धाम ॥

नाद विद्या— [१२३] रागिनी भैरवी, चौताल

नाद अगाध बहुत गये है साध, सुर-नर-मुनि-गंधर्व,
रचि-पचि गये सिद्ध सम हार।
काहू न पायौ पार, करि-करि थाके विचार,
कमलासन हरि, शिव-श्रवनधार, अंजनीनंदन कहै उचार,
सरस्वती तरन लागी हिय में दो तूंबा डार ॥
सप्त सुर, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना, बाईस सुरति,
उनंचास कूट तान, अंश न्यास विकृति धार।
छै राग, छत्तीस रागिनी, औडव-षाडव के भेद, सुद्ध मुद्रा,
सुद्धबानी, 'तानसेन' करयौ विनान, जाको सूझत न आरपार॥

[१२४] श्रीराग, चौताल

प्रथम नाद-सुर साधै आराधै, सोई गुनियन में गावै।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना, तिनके ब्यौरे कछू पावै।।
आरोही अवरोही उलट पुलट के होत, द्रुति मध्य बिलंवित आवै।
'तानसेन' के प्रभु महा वाक्‌बादिनी-प्रसाद तैं गान कंठ करावै।।

[१२५] रागिनी मालश्री, सुर फाक्ता

नाद अगाध संपूरन सोध साध, समझ सोच ताल विस्तार ओंकार।
सुर सँवार सप्त चलित सुर, सुर सौं संगत नाद विस्तार।।
स्वराध्याय, रागाध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय,
प्रकीर्न, प्रबंध, मृदंगाध्याय सप्ताध्याय विचार।
गुनी-गंधर्व, सुर-नर-मुनि पचि हारे,
तौहू न पायौ पार, 'तानसेन' अपरंपार।।

[१२६] रागिनी भीमपलासी, चौताल

ए ही सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना,
गीत छंद धोवा माठा प्रबंध त्रेवट तान।
आरोही अवरोही अस्थायी संचारी बादी बिवादी,
संवादी अनवादी जान।।
खरज रिषभ गंधार मध्यम पंचम धैवत निषाद तान आन।
सा रे ग म प ध नि सा नि ध प म ग रे,
'तानसेन' कह्यौ ग्रंथ प्रमान।।

[१२७] राग भैरव, चौताल

आ गुनी सोध, सप्त स्वर तीन ग्राम,
उरप तिरप लाग डाट भेस।
अतीत अनाघात सम विषम लेस,
'तानसेन' तब गुनी कहावै बरेस।।

[१२८] रागिनी टोड़ी, चौताल

नीके नीके सुर गाय, राग दिखाय,
प्रथम कपट तजि, रंग-जुगत लाय।
बुद्धि सरसाय काव्य बनाय, खुली-मुंदी मुद्रा तान सुनाय॥
उरप-तिरप लाग-डाट दिखाय,
सप्त सुर इकईस मूर्छना ताकौ व्यौरौ जनाय।
और 'संगीत रत्नाकर' के सप्त अध्याय समुझाय,
'तानसेन' के प्रभु कौं रिझाय, संगीत विद्या दरसाय॥
गुनीन सौं गुन-चरचा कर, परमेसुर के धरियै पाय॥

संगीत साधना— [१२९] राग भैरव, सुर फाक्ता

रंग जुगत सौं गाय सुनावै, ताल मूल सुर संगत आवै।
दुगुन तिगुन चौगुन सों भेद बजावै,
जब लाग-डाट परमान दिखावै॥
अपुने मुख तैं न गुनी कहावै, ताल मूल कौ व्यौरौ पावै।
'तानसेन' कहै होवै गुनी जन, छत्रपति अकबर कौं रिझावै॥

गुरु-महिमा— [१३०] रागिनी टोड़ी, चौताल

जो गुनी जन गुरु पावै, गावै नीकी तान, गुन सौं रिझावै॥
जब बजावै बीन आच्छी-नीकी परमान सोच-समझ,
तान लेत ध्यान धरत जिया मैं जब सुर संगति पावै।
ढुरन मुरन सौं वाकी समझ आवै॥
सप्त तीनि इकईस बाईसौ लाग डाट खुली मुँदी दरसावै।
सप्ताध्याय संगीत मत करि कैं, तब 'तानसेन' प्रभु कौं रिझावै॥

गुण समुद्र— [१३१] रागिनी टोड़ा, झपताल

पार नहीं पाइयै गुन-समुद्र अथाह,
कौन विधि तरियै, कहा करियै, कवन भाँति जानियै ।
मन ज्ञान नेत्रन असूझ लागें सुर-तान-ताल,
कौन तरह घट में आनियै ॥
जब उठत है ध्यान अति प्रान डरौ जाय,
चरन धरौ धायि-धायि कैसें गर ठानियै ।
कहै गुरु ज्ञान 'तानसेन' सरसुती ध्यान धर,
गुन ये अगस्त अँचवन पानियै ॥

[१३२]

गुण साधन— रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

जे गुन विवेक कर साधै, ते चतुर अति प्रवीन, ह्वै रहत नीकौ ।
तिनमें सुद्ध संगीत अति बहुत पाइयत,
है तार-तान की गहन ही कौ ॥
सप्त सुर, तीन ग्राम, मूर्छना, सुरति,
कूट तान औडव-षाडव संपूरन ही कौ ।
वादी, संवादी, अनवादी, विवादी,
अंस न्यास 'तानसेन' समझ जी कौ ॥

बानी के चार भेद— [१३३] राग भैरव, चौताल

बानी चारौं के व्यौहार सुनि लीजै हो गुनीजन,
तब पावै यह विद्या-सार ॥
राजा गुबरहार, फौजदार खंडार, दीवान डागुर, बकसी नौहार ।
अचल सुर पंचम, चल सुर रिषभ,
मध्यम, धैवत, निषाद, गंधार ॥
सप्त तीन, इकईस मूर्छना, बाईस सुरति,
उनंचास कूट तान, 'तानसेन' आधार ॥

भैरव राग— [१३४] राग भैरव, चौताल

सघन बन छायौ, द्रुमबेली माधौ भवन,
अति प्रकास बरन-बरन पुष्प रंग लायौ।
कोकिला-खंजन-कीर-कपोत अति आनंद कारि,
चहुँ ओर झर बरसायौ॥
सप्त सुरन, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना,
उकति-जुगति, लाग-डाट कर दिखायौ।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनो साह अकबर,
प्रथम राग भैरव गायौ॥

टोड़ी रागिनी— [१३५] रागिनी टोड़ी, चौताल

टोड़ी रागिनी अलापत गावत,
बीन बजावत, उपबन मिरग रिझावत।
गांधार स्वर गृह प्रथम मूर्छना, संपूरन तान सुनावत॥
सब तान इकईस बाईसौ,उनंचास कूट तान,ताकौ ब्यौरौ जनावत।
उज्वल बसन पहिर, केसर-कपूर चर्चित,
रतनन आभूषन 'तानसेन' तान साजत॥

नाद रूपक— [१३६]

नाद नगर बसायौ, सुरपति महल छायौ,
उनंचास कूट तान-अक्षर विश्राम पायौ।
गीत-छंद तत बीतत घन सिखर-कंचन ताल,
काल के किंवाड़, अलाप ताली हीरा पैठायौ॥
पाट नग लगे, खरज जंजीर, त्रैवट कुंजी,
तामैं ध्रुपद सौ नग छिपायौ।
आरोही, अवरोही, अस्थाई, संचारी जबार,
अरब-खरब औ करोर मन मिलाय कंठ लायौ॥
जौहरी 'मियाँ तानसेन' गाहक जलालदीन,
जिन याकौ मोल कीनौं, अकबर पारखी पायौ॥

नाद नगर— [१३७] रागिनी टोड़ी, चौताल

नगर नाद मधि, चक्रमत चौपर हाट बसायौ ।
सुरहाटी अक्षर जिन्स लेत, सुघरन हाथ बिकायौ ।।
सुर कोतवाल, सुरति लै प्यादा, गमक गस्त फिरायौ ।
सुनत भाव सब गुनियन मिलिकैं, 'तानसेन' निरख मँगायौ ।।

नाद गढ़— [१३८] रागिनी गुर्जरी, चौताल

नाद गढ़, मन राजा राज सजत, छहौ राग उमराव,
बैठे बुरजन पर नीके रच्छा करत ।
नाना राग-रागिनी छत्तीस तुपक,
भर-भर धर सोई इकईस मूर्छना गत ।।
ताल धारु धोवा माठा परमाटा चतुरंग,
जंबू राग जलवैंत पारसी छंद रचत ।
सत जंजाल जेवट रामचंगी संगत,
दारु तानन गज बाँस ढाँस झुमरा गोला धरत ।।
सप्तसुर सप्त पौर, औडव-षाडव किंवाड़,
आरोही-अवरोही खाई भरत ।
कौल-तिलाना कोतवाल, ध्रुरपद वजीर,
प्रबंध कौ निसान आय, लरिबे कौं धाय, विद्या लराई लरत ।।
'तानसेन' कहै ऐसौ अगम अथाह, जाको पार न पायौ परत ।
रचि-पचि हारे कहूँ न लाग लगी, कान पकरि-पकरि धरत ।।

नाद समुद्र— [१३९) राग भैरव, चौताल

संगत समुद्र सौ, भेद उक्ति युक्ति साधै पानी ।
प्रथम आकार भूमि साधै, सप्त सुर तीन ग्राम,
स रि ग म प ध नि कंठ वर्ण बनाये 'तानसानी' ।।

[१४०] रागिनी टोड़ी, चौताल

नाद समुद्र अपरंपार, काहू न पायौ पार, अपार भेद।
केते गुनी-गंधर्व, यक्ष-किन्नर रचि-पचि हार रहे,
सुर-नर-मुनि गुनि चारौं वेद॥
सप्त सुर, सब्द ब्रह्म, निरंजन, निराकार,
निरभय भेष रचि-पचि कर थाके खेद।
'तानसेन' जन आरत विनय करत,
धन-धन नाद अलख अभेद॥

[१४१] रागिनी आसावरी, तिताला

नाद समुद्र अथाह सुनियत हैं,
ताकी सहल करन कौं लागे गुनियन के मन।
अकार कौ जहाज कीनौं, तीन ग्राम सप्त सुर लै लै,
ताल मूल तें बैठौ सौदागर बन॥
इकईस मूर्छना, बाईस सुर ते-ते हू मल्लाह भये बन-ठन।
औढ़व-षाड़व संपूरन कौ ध्यान, बिवादी अंग रज्जू सन॥
अलाप की धमकि सौं उनंचास कूट तान तुपक,
छूटन लागीं 'तानसेन' बजन।

[१४२]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

नाद-समुद्र कौ पार न पायौ, सुनियत गुनी कहायौ।
प्रबंध-छंद, धारु-धुरपद, मार्गी-देशी द्वै विधि गायौ॥
ब्रह्मा वेद उचरायौ, सारंग बौरायौ, भरत मत–
कल्लिनाथ-हनुमत मत, सप्ताध्याय गायौ।

अनेक सृष्टि रचि-पचि गये ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र,
महामुनि प्रसन्न भये, सारंग बौरायौ ॥
सप्त प्रगट, सप्त गुपत, नायक गोपाल ध्यायौ,
'तानसेन' ताकौं बैजू पाषान पिघलायौ ॥

[१४३]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

नाद-समुद्र कौ पार न पायौ, सीखत पंडित कहायौ,
धारु-धुरपद चार जुगन ठगायौ ।
सप्त गुपत, सप्त प्रगट नायक गोपाल ध्यायौ,
ब्रह्मा वेद उचरायौ, सारंग बौरायौ,
गायन-भाव तैं री चंद्र गगन ठहरायौ ॥
जित-तित सृष्टि गुनी, ब्रह्म-भेद रुद्र मुनी,
मतौ उपजिकैं गायौ, पाषान पिघलायौ ।
कहै प्रभु 'तानसेन' जिनही रचि-पचि गायौ, तिनही रिझायौ ॥

नाद जहाज— [१४४] कान्हरा, दरबारी, चौताल

गुन समुद्र में तन जहाज मन सौदागर,
लै चल्यौ सो सुरभि मन के जोर ।
सप्त सुर लंगर कैं बादवान बाँधे तीन ग्राम,
लाय-लाय मोड़ैं बादी की ओर ॥
चार चरन कोठे हीरा-मोती-मानिक,
बानिक गुनी जोरे भोर ।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनो हो साह अकबर,
तुम जियौ बरस करोर ॥

नाद युद्ध— [१४५] रागिनी टोड़ी, झपताल

यह लराई लरौ रे गुनी-ज्ञानी, सुर समसेर, मजलिस मैदान।
अलापचारी तुरंग चढ़िकैं, ध्रुपद नंगी तरबार,
तारसी परिकर, रसना कटारी, काढ़त जब मुख ज्ञान ।।
छहौ राग उमराव, नाद गढ़ कौ परीक्षक,
छत्तीस भार्या तुपक भर धरान।
धारू बान, धोवा-माठा जंबू सरदार,
'तानसेन' यह प्रमान ।।

नाद मंदिर— [१४६] रागिनी गुर्जरी, चौताल

अदभुत अनूप रचि-पचि कर विचार, नाद-मंदिर बनायौ।
अनेक भाँति बहु प्रकार औदेव मिलि ता मधि,
उनंचास कूट तान अच्छर अस्थान पायौ ।।
सप्त सुर सीढ़ी, तीन ग्राम खंड कीने, मूर्छना झरोखे राखे,
ढुरन-मुरन ताकबंदी, सुरति सायबान आगैं,
ज्ञान खंभ अचल अस्थल करि जमायौ।
औढ़व-षाड़व पूर्न पुस्तिवान, रंगत अस्तरकारी,
तान गरदश हाता सुर ताल सुभ दरवाजे लगायौ ।।
उकत-जुगत कुफल कुंजी, सब्द की जंजीर लागी,
लाग-डाट चौकीदार, कंठ राग राजा राज करायौ।
रागिनी पटरानी, उपराग खबास आसपास,
मुरछल-पंखा हिलावते राग रूप रंग कौ समाज,
'तानसेन' सुघर ध्रुरपद सुद्ध मुख गायौ।

संगीत-महिमा— [१४७] रागिनी मालश्री

षरज साधें गाऊँ, मैं श्रवनन सुनहु सुनाऊँ।
बेद पढ़ाऊँ; जोई-जोई कहै सोई-सोई उचराऊँ॥
भैरव-मालकोष-हिंडोल-दीपक, श्रीराग-मेघ सुर ही लै आऊँ।
'तानसेन' कहै सुनौ हो सुघर नर, यह विद्या पार नहीं पाऊँ॥

[१४८] राग गंधार, चौताल

गावत सुघर गुनी-गंधर्व, सुद्ध मुद्रा संगत सौं नाद।
श्रुति कला ध्वनि मूर्छना पूरन लगै, तब राग कौ सबाद॥
रंग लिप्त रस रूप लय ताल काल लव समान,
थिर रहै इतकाद महा नाद॥
'तानसेन' कहै ग्राम-तान-अलंकार,
सब समझि कै कीजै गुनियन सौं संवाद।

[१४९] रागिनी सोरठी, ध्रुपद चौताल

पढ़ि-पढ़ि पंडित भए, पचि-पचि नाँचन लागे,
और रचि पचे तें गायवौ कठिन अति।
साधू भये बजाई बीन, नृत्यकारी कीन,
और हू सकल विद्या किनहू नाँ जानी नाद ब्रह्म गति॥
सप्त सुर के व्यौरे न्यारे कर दिखलावै,
जो गुनी अपनी-अपनी मति।
'तानसेन' यही प्रसाद माँगत है,
उनंचास कूट तान जो सुद्ध कर सकै जलालुद्दीन की सत॥

[१५०] रागिनी परज, चौताल

नाद विस्तार किनहू नाँ पायौ पार,
पीछैं-पीछैं थक हारौ संसार।
कौन मूल, कौन धूल, कौन फूल, कौन फल,
कौन पत्र, कौन डार॥
त्रै देव करौ उचार, तिनहू न पायौ पार,
जिन कीनौ अभिमान, तें बूढ़े मझधार।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनौ हो गोपाललाल,
नाद-सागर नाद-समुद्र अपार॥

संगीत-प्रतियोगिता— [१५१] रागिनी मालश्री, सुर फाक्ता

मैं तोहि पूछूँ गायन-बजायन कौन गुरु ज्ञान संगी,
कौन मूर्छना, कौन सुर, कौन ग्राम-विस्तार।
कौन मूल, ताल कौन, प्रथम उचार कौन, गुरु कौ प्रकार॥
कहाँ राग बसत, कहाँ रंगत संगत, कौन नाड़ी में पवन-धार।
कहाँ तीख-चोख नेम-बरस, उरप-तिरप,
लाग-डाट, आतक-खातक, औढ़व-षाड़व संपूरन,
'तानसेन' तत बीतत घन सिखर तार॥

[१५२] राग लाछसारव

तेरे मन में कितौएक गुन रे, जो तोपै आवै सो प्रकास कर रे।
सप्त सुर, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना,
जोई सुर आवें तो पै, सोई सुर भर रे॥
हिरन बुलाये, पगन पराये, मेहा बरसाये, तोकौं सरस्वती वर रे।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनौ रे गुनी जन,
सब गुनियन के पाँयन पर रे॥

६—रूप, शृंगार और नायिकाभेद

रूप वर्णन— [१५३] राग विलावल चर्चरी

तुव मुख और चंद्रमा विरंच तुलाकारी तोल्यौ,
ओछौ अकास गयौ, झुकि धरनी रह्यौ-
निकाई कौ भारौ भरयौ री पला।
याही तैं ससि घटत-बढ़त है, देखि-देखि तेरौ बदन निरमला ॥
तो सम नाँहिन पूजियै, सब मिलि कलंकी नाम धरयौ,
निसि भ्रमत फिरत, न रहै अचला।
'तानसेन' प्रभु सरस बस करि लियौ, रूप-आगरी रूप-कला ॥

[१५४]

धन-धन रूप तेरौ विरंच गुरु रच्यौ, घेरदार घूँघट में चंद्रबदन,
घूमि-घूमि पग धर चलत गज-गति धरन कौं।
घटाटोप घूंघट, गरैं सोहै मुक्त-माल, कटि किंकिनी,
सुंदर बरनी, घायल होत लागत कुच कठोर श्रीफल से,
जंघ कदली मन मोहत संचरन कौं।
घिर आईं चहुँओर सभी सहेली रंभा सी,
लागत भुज मृनाल मगनैंनी मानौं निसिकर-किरन कौं ॥
'तानसेन' प्रभु मन हर लीनौं, घायल करत रसिकन कौं,
राजा-महाराजा बस कर लीनौं गिरधरन कौं ॥

[१५५] रागिनी टोड़ी, तिताला

बाजत नीकैं घुँघरियाँ, ठुमकत चाल सहेली।
अनुपम चाल चलत मतंग गति, मानौं पग परत परेली ॥
ज्यौं जल में प्रतिबिंब देखियत, चंद-किरन तैसी जेहर बेली।
तैं रस बस कियौ 'तानसेन' प्रभु, खानखाना पिय पाकै अकेली ॥

[१५६]

हिंदनी कबहू जनन कहौ रे, तुरका संग तुरकानी भयेली।
अनुपम चाल चलत मतंग-गति, मानौं पग परत पवेली॥
ज्यौं जल में प्रतिबिंब देखियत, चंद-किरन तैसी जेहरबेली।
तैं रस बस कियौ 'तानसेन' प्रभु, खानखाना पिय पाकै अकेली॥

[१५७]

रागिना मुलतानी धनाश्री, चौताल

सोहत भीने बार, चंद्रबदन, धनक सी बनी-ठनी,
श्रवन कुंडल, सीस फूल, कपोल-लोचन रतनारे।
नेत्र कमल, नासिका सुंदर, अधर विद्रुम, दसन दाड़िम,
चिबुक सुंदर सुघर, कंठ कोकिला के सब्द सौं प्यारे॥
भुज भाय ऐसे उतारे, कुच कंचन के बनाये, साँचे में ढारे।
उदर अलप, लंक छीनि, कटि केहरि, कदली जंघ,
'तानसेन' ऐसी प्यारी पर सर्वस वारि डारे॥

[१५८]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

सोहत बनी बाल, भाल चंद्र, भ्रू धनुस, नेत्र कमल,
श्रवन कुंडल, सुंदर कपोल विलोकत रंभा री।
नासिका कीर, विद्रुम अधर, दाड़िम दसन,
चमक सुंदर बीजुरी सी कौंधत, स्वरन मानौं कंठ कोकिला री॥
ग्रीवा कपोत, कुच श्रीफल, नाभि कटि केहरि,
कदली-खंभ जाँघ रचिकैं धरे री।
'तानसेन' निरखि मैंन-रति लज्जित भए,
आवत गज मतवारी चाल, मन कौं हरे री॥

[१५६]

राग्निनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

इंदु से बदन, नैंन खंजन से, कंठ कोकिल बचन सुहाई ।
नासा कीर, अधर विद्रुम, दाड़िम दसन दमकाई ।।
श्रीफल उरोज, ग्रीव कपोत, बेनी नाग सी झुकी सुखदाई ।
कटि केहरि, कदली जंघ, पद सरोज, पद्मा सी,
'तानसेन' ऐसी पै बलि-बलि जाई ।।

[१६०] राग विलावल, चर्चरी

अहो टेढ़ी पागरि नागरि नारि सीस धरैं जैसैं,
टेढ़ी पाग कौं राखैं रहत चिकनियाँ ।
ढुरि-ढुरि मुरि-मुरि बतियाँ करत अगलो-पिछलीन,
सो दोऊ कर तारी मारति, एकन सौं नैंन सैनन नवनियाँ ।।
लाही कौ लँहगा, पचरंग चूनरि, कंठ छरा और ताबीज मनियाँ ।
'तानसेन' प्रभु रीझ चकित भए, तुही सबन में धनि धनियाँ ।।

[१६१] राग विलावल

तेरे कच बिथुरे री, मानौं जलधर उनिआये,
दसन जाति दामिनि दरसानी ।
भौहें धनुष बूंद, सायक स्रम-कन बरसत पानी ।।
अलकावलि बिच हरत मनोहर,
सुमन-माल बीनी, बीच बोलत अमृत-बानी ।
या छवि पर रीझे 'तानसेन' पिय,
अंग-अंग सरसानी ।।

[१६२] राग विभास, ताल चर्चरी

तेरे नैन लौने री, जिन मोहे स्याम सलौने।
अति ही दीरघ-विसाल, विलोल कारे भारे,पिय रस रिझये कौने ।।
बदन-ज्योति चंद्र हू तैं निरमल, कुच कठोर अति ठौने-बौने।
'तानसेन' प्रभु सौं रति मानी, कंचन-कसौटी कसौने ।।

[१६३] राग विहाग, रूपक

नैन सलौने री तेरे, नैनन हो हरि बस कियौ, हरि बस कियौ।
दीरघ जमाल विमल विलोल कटाक्षन भर रहे,
ता पर कजरा दियौ ।।
भौहैं धनुष औ चंद सौ बदन और कंचन सौ तन,
तेरौ कमल कली सौ उठौ हियौ।
'तानसेन' प्रभु जान बूझ कर, बोलिवे कौ नैंम लियौ ।।

[१६४]

मोहि लेत पिय कौ मन, तेरे नैना प्यारे।
खंजरीट-मृग-मीन हीन तैं, बिन काजर कजरारे ।।
भौंह धनुष, तिरछी चितवन, नासिका सुक वारी,
चंद्र बदनी, कटि केहरि रंभा गंध सम्हारे।
'तानसेन' प्रभु प्यारे कौं रस बस कर लीनौं, जोबन-भार सम्हारे ।।

[१६५] राग विहाग, चौताल

रुम-झुम भरि आये री नयना तिहारे।
बिथुरी सी अलकैं स्याम घन सी लागत,
झपकि-झपकि उघरत मेरे जान तारे ।।
अरुन बरन नैंना तेरे, तामैं लाल डोरे,
ता पर अंबुज बारि-बारि डारे।
कहै 'मियाँ तानसेन' सुनौ साह अकबर,
उपमा कहाँ लौं दीजै, बिन अंजन कजरारे ।।

शृंगार वर्णन— [१६६]

मंजन कर गृह चौकी चंदन की दई बिछाय, ता पर बैठी प्यारी।
अलक ढिग कपोल डारि कच बिथुर रहे, मानौं फुलबारी॥
जोति दिपै प्यारी किरन हू कर जूथ,
ता ढिग मुक्ता की जोति चंद हू तें उजियारी।
रचि-पचि बिरची बनाय विधना सँवारी,
लाहे की अँगिया, ऊदी सारी॥
उँगरिन की छवि न्यारी, अनबट बिछुआ—
सब्द बोलत झनन-झनन झनकारी।
बाजूबंद-पहुँची अमोलक हीरे जटित,
ता मधि मोती मानौं लेत हस्त रंग,
चंपक कौ चंदहार, कजरारौ सुभेष बन्यौ, तिय कौ सिंगार॥
पान खाए पीक डार, लै दरपन मुख निहार,
आई है इंद्रबधू अनरित बसत सिंगार।
सर्ग चली गरें हार अंगन रिझायवे कौं,
'तानसेन' प्रभु लैहैं करि कृपा बलिहार॥

[१६७) राग भैरव, चौताल

प्रथम मंजन कर, पहरि चीर चार।
अल्हम्दु लिल्लाह कौ लव लाये हू आभूषन,
रुकुसुजूद कंठमाल रतन और मुक्तन के हार॥
याही अति भायौ दादरूप कटाक्ष,
सलाकन ले कमरहत अलापिय प्यार।
रबना आतना फिर दुनियाँ हसन तन,
'तानसेन' कहै गीत-सागर भयौ अपरंपार[1]॥

---

[1] पाठ ठीक नहीं है।

[१६८]

प्रथम मंजन-अंजन कर, पहरि चीर चार।
आलिमो दिल लेले, कमल बहुते हु आभूषन,
रूप सुधा, कंठ माल, रतन मुक्तन के हार॥
याही अति भायौ दादरूप, कटाक्ष सलामुल,
अलकैं कर चाहत सो पिय प्यार।
'तानसेन' नग-रतन जटित सोरह सिंगार किये,
नरलोक, इंद्रलोक हू नहीं नार॥

[१६९] रागिनी टोड़ी, तिताला

एक कर दरपन, एक कर कजरा, अँचरा गहैं सुधारत।
ललना रेख काजर सो दूरि करन उठत भोर,
मुख कमल परत सीसफूल अति बिराजत॥
गगन नखत की उपमा जिय भई मेरे,
मेरे जान वेहू दुरि रहे सकुचात लाजत।
ये कहियत है मानौं सुरतरु विकसत ही,
'तानसेन' देखत दुःख भाजत॥

[१७०] राग मालव, चौताल

हार-हमेल सौं नीकी लागत, और गोरे हाथन चुरी हरी।
कंठ पोति, बदन जोति, कानन बारी औ बेसर,
केसर की खौर ता पर लटपटात लटकत लट सुथरी॥
भुज मृनाल, श्रीफल से कुच, कटि केहरि, जंघ कदली,
चंद्र बदनी, सावक नैंनी, बोलत अमृत बैंन धज री।
'तानसेन' प्रभु रिझाय लायौ,
सोलहो सिंगार बत्तीस आभरन सज री॥

[१७१]

मानौं बिधु घूँघरवारे बार, डारि छतरी बनाये हैं।
टीका कीने जान चारौ विधि खंजन नैंन,
मीन-मृग कौं लजाये हैं ।।
नासा कीर, दसन दाड़िम, कुच श्रीफल से दरसाये हैं।
'तानसेन' प्रभु कौं रस बस कर लीने, चंद्र बदन दिखाये हैं ।।

[१७२] राग भैरव, चौताल

सोहत कामिनि उत्तम रूप पहिरत सम्हार,
चीर ओप बढ़ाय कुंदन अंग ।
टीके कौ कियौ उदोत तातें तिमिर फटौ, सरन परे पाछें–
सीसफूल जुत असमान, श्रवन कुंडल कवरी अचक कटाक्ष–
आप जोत, बनि रह्यौ दोऊ अनंग ।।
दृग अंजन दिये, खंजन बस करि लिये,
कर दर्पन हार सुख देत सुख पैयै,
अन निरखैं उड़िजात यौं बरनन गुनी गावैं,
मानिक हीरा कपोल, मुक्ता-लर मुक्त-माल,
भुज विसाल, कर कमल, बाजूबंद फुंदन,
लटकि-लटकि अलि युग संग ।।
राम किरन उपज्यौ नवल विचित्र,
कंचुकी मधु अतंक अधर सुंदर त्रिवली,
तेरे वाट रनन झनन ठनन अमृत नाभि,
और नलिन लीला रस लेत अनजान,
'तानसेन' के प्रभु साह अकबर बन रहे,
जैसे महादेव पारवती अरधंग ।।

[१७३] रागिनी गुर्जरी, चौताल

कटाच्छ चोट देत कर पल्लव बस्तर लायें, अंजन सुधार।
अंजन दियौ चाहत, एक कर दरपन लियें बदन निहार॥
कटि केहरि, कदली जंघ, सुक नासा पै बार।
'तानसेन' के प्रभु ऐसी प्यारी, सुंदरी निरख बलिहार॥

महादेव-पूजन— [१७४] राग भैरव, चौताल

चंद्र बदनी, मृग नयनी, हंस गमनी, चली है पूजन महादेव।
कर लिए अग्रथार, पहुँपन के गुंथे हार,
सुख दियरा जराए, देवन में देव महादेव॥
सोरह सिंगार, बतीसौं आभरन, सज नखसिख सुंदरदाई,
छबि बरनी न जाय, है निरमल कर मंजन सेव।
'तानसेन' कहै धूप-दीप-पुष्प-पत्र-नैवेद्य लै,
ध्यान लगाय, हर-हर-हर आदि देव॥

स्वकीया बर्णन— [१७५]

रागिनी धनाश्री, चौताल

धन-धन भाग सुहाग तेरौ, तू पिय के मन भाई।
धन जोबन तेरौ री चतुर सुघर नारि,
जो पिय करै तेरी मुख सौं बड़ाई॥
धन जनम जीतब, धन तरुनाई,
तैं रस बस कर लिये पिय सुखदाई।
धन-धन 'तानसेन' प्रभु कौं रिझाय लीनौं,
तुही सबन मैं देत दिखाई॥

[१७६] रागिनी खंवावती, चौताल

एरी तू अंग-अंग रंगराती अतिही सयानी री तू,
पिय मन मानी री तू ।
सोलह कला समानी, बोलत अमृत बानी,
तेरौ मुख देखें चंद-जोति हू लजानी री तू ॥
कटि केहरि, कदली जंघा, नासिका पर कीर वारौं,
श्रीफल उरोजन की छवि आनी री तू ।
'तानसेन' कहै प्रभु दोऊ चिरंजीव रहो,
तेरौ नेह रहै जोलौं गंग-जमुन पानी री तू ॥

[१७७] रागनी पूर्वी, तिताला

तेरौ आली रूप, पिय के तन कौ खिलौना, निस-दिन लिए रहत संग ।
कबहू बागौ बनाय, कबहू बीरा खवाय,
कबहू निरखि रीझि दिन-दिन बढ़त तरंग ॥
तूही तन, तूही मन, तूही कर रही पिय-मन अरधंग ।
'तानसेन' प्रभु प्रवीन के चित्त चढ़ी, ऐसैं जैसैं ईस-सीस बसत गंग ॥

प्रिय दर्शन की लालसा— [१७८] रागिनी टोड़ी, चौताल

वा दिन की बलि जइयैरी, जा दिन पीतम सौं होइ री मिलन ।
तन-मन-धन सब वारूँगी उन चरन-कमल ऊपर,
पाँवड़े बिछाऊँगी नयन-पलन ॥
मिलत मोहन अपनौ ही गरैं डारि देहैं, सरस रस ललित आभरन ।
कहै 'मियाँ तानसेन' कब धौं मिलैं आय, दरस-परस इन संयोगन ॥

[१७९] रागिनी टोड़ी, चौताल

वा दिन की बलि-बलि जैयेरी, जा दिन पीतम सैं होइ री मिलन ।
तन-मन-धन नौछावर करि हौं चरन कमल,
पाँवड़े बिछाऊँगी नयन-पलन ॥
अनेक दिनन में प्यारे मोहि मिलि है, लैऊँगी बलैयाँ दोऊ करन ।
'तानसेन' के प्रभु सुधा की दृष्टि करौ, मोर मुकट की हलन ॥

[१८०] रागिनी पूर्वी, तिताला

दीदार पुरनूर ऐसौ, जाके दरसन कौं तरसत,
नैंना मेरे लुब्ध रहे, जैसें चंद्र-किरन पर चकोर।
एक पल अंतर सहि न सकौं, रहौं तुव पाँयन समीप,
तन-मन-धन जोबन दै कोर॥
जाकौ अमृत बचन श्रवन सुख होत, मेरे प्रान लेत झकोर।
ऐसौ जो है 'तानसेन' प्रभु, सो दिन-दिन सौतिन मुंह बकोर॥

[१८१]

ताही बदौं चतुर और जीवन गुन रूप,
जो बस करै प्रानपति प्यारे कौं।
जौलौं न देखौं एक घरी आली, 'तानसेन' प्रभु दरस भारे कौं॥

[१८२] राग देसी, तिताल

सुनत ही बुलावन की बातैं आँखिन कौं जोर,
धाई हौं आगें जो रजा।
मन की फूलन सौं अंग-अंग फूले,
अंक की मिलन मिलाय हौं आगें जावजा॥
सूरत दिखाई, मन लाई चाही, राखो आभरन सजा।
मन बस करि लीनौं 'तानसेन' प्रभु, रस बस कर लैं री लजा॥

[१८३] रागिनी धनाश्री, चौताल

लाल मया कै बुलाई, सौतिन दुख पायौ।
जे मेरी हितू तिनकैं आनंद भयौ,
मृदंग बजायौ, मनभायौ मंगल गायौ॥
पिया की मया मो पै कही नाँ परत है,
सब तियन छाँड़ि मेरे गृह आयौ।
'तानसेन' के प्रभु पलकन सौं मग झारौं,
जीवन-जनम सुफल करायौ॥

आगमपतिका— [१८४]

पिय के आवन कौ सौ अब मैं आगम पायौ री माई, री माई।
कुच-भुज फरकाने और आँख बाँई, कगवा सगुनवा सुनाई॥
नीके सगुन सबही होत हैं, मन-इच्छा पूजूँ मैं,
'तानसेन' मिले मोहि सुखदाई।

[१८५]

पीके आवन की सुनी प्रथम अस्नान करि,
मानौं सकुच बादर से बरसि उघर गये,
ता मधि बदन चंद्र सौ निरखि री पूरन सेत बर,
यह मानौ चाँदनी निसि खेल रही।
फुलेल सने वार मानौ रैंन भीनी सी,
लागत माँग मुक्ताहल और आभूषन उड़गन से,
लागत इंद्र अप्सरान की सोभा,
इन आगै नाँ हियैं एक तिल रही॥
मुरि मुसकाइ देखत भुज बदन हरिन की सी,
मंजन दसन चमकत, अधर पान लाली,
प्रतिबिंब देखियत ता मधि मानौं रत ह्वै गये,
काम मूरति की चोप में आय रास मिलि रही।
तिलक दामन किनारी चंदन रस सौ लागत,
अंजन नैंन नेह स्याम प्रगटी,चरन महाबर मानौं कमल पंखुरी सी,
लागत एड़ी मानौं कुंज कोमल पराग,
कंचन पायल की, कला कंठ 'तानसेन' गाय रही॥

प्रिय मिलन— [१८६]

एरी अब आनंद भयौ री, लालन आये री मेरे महल।
तात वितत घन सिखर मृदंग बजावौ तार,
'तानसेन' की गावौ, करौ री सहल॥

[१८७] रागिनी धनाश्री, चौताला

धन भाग मेरौ, धन आवन, धन-धन प्रीति, प्रेम भयौ मन,
दरस देखत इन आँखियन सौतिन,
इन अंग संग तें विरह गयौ टर।
इन आनंदै आनंदी, बाँदी भई हौं इन चरनन,
कहन कहत गरब गारि अगसर॥
जनम जीतब सुफल सखी, मदनमोहन मया कीनीं,
लीनीं री रस बस कर।
'तानसेन' प्रभु सुख के सैंन, नैंन-सैंन हाव-भाव,
कटाच्छ सौं मोहि लीनीं, जब मिटौ दुःख-डर॥

पारस्परिक प्रीति— [१८८] रागिनी भैरवी गणेश,ताल नव

मनमोहन मनमानी, यातैं तू प्रवीन सयानी।
सुंदर बदन, चंद्रकला हू लजानी॥
तोसी तुही तिया और नाँहि तिहुँ लोक सानी।
'तानसेन' चिर-चिरजीवौ, ऐसी प्रीति रहौ, जोलौं जमुन-गंग पानी॥

[१८९]

परस्पर दंपति मिल करत सिंगार,
एक अँगौछा लै पौंछत मुख, एक सुधारत पेच पाग।
सब निसि जागे, प्रेम-रूप रस-मद छाके,
तातैं झुकि-झुकि गरैं लाग-लाग॥
लै दर्पन आपुस में निरखत प्यारी—
प्यारौ लै बीन बजावत, गावत राग।
'तानसेन' प्रभु दोनौं चिरंजीव रहौ,
देत दरस भक्तन कौं धन-धन-धन भाग॥

युगल बिहार— [१६०] राग सारंग

उसिर-महल बैठे पिय-प्यारी, गावत तान-तरंग।
सा रे ग म प ध नि अलाप करत सुर,
तीन ग्राम, इकबीस मूर्छना संग॥
कंठ बाँह जोरि, नवल घूंघट खोलि, नैनन-सैनन बहु रंग।
'तानसेन' के पिय हैं बहुनायक,
रीझ-रीझ वार देत, मानिनी मान भंग॥

वर्षा बिहार— [१६१] मलार

नाँचत चपल चंचल गति, घन मृदंग रस-भेद सौं बाजत।
कोकिला अलापत, पपैया उरप लेत, मोर सुघर सुर साजत॥
दादुर तार धार धुनि सुनियत, रुन-झुन धुनि पर बाजत।
'तानसेन' के प्रभु बहुनायक, कुंज महल दोऊ राजत॥

[१६२] राग ईमन

देख सखी पवन पुरवैया, ठौर-ठौर रूखन कौ हलवौ।
आछी-नीकी कारी-पीरी घटा घुमड़ आईं,
ता मधि कृष्ण-स्यामा जू कौ चलिवौ॥
कुंज-लता द्रुम-लता सखी री, मंद कुसुम नीके कर खिलवौ।
मीन अचल ह्वै जल जमुना कौ,
'तानसेन' के प्रभु कौ कबहुँक मिलवौ॥

झूलनोत्सव— [१६३] राग मलार

रमकि झूलत हैं री, लाल-बाल रहसि-रहसि संग।
डरपति प्यारी त्यौं-त्यौं कर गहत मोहन आली,
मोहि अति रस बाढ्यौ, तातें भेंटत भुज भरि अंग॥
सावन तीज सुहावनी लागति, झुलवति सहचरि करत रंग।
'तानसेन' पिय-प्यारी की छबि पर, वारौं कोटि अनंग॥

[१६४] राग कान्हरौ,

झूलत फूल भई, पिया के सुख की सरानी।
मंद-मंद झोटा देत, लेत राग कान्हरे की तान,
हँसत-हँसत बात करत मृदु बानी॥
अहो राधे! सहचरी सबैं जुर आईं, कुमुदनी फूली,
लाल सारी, लाल लहँगा, अँगिया सौंधे सानी।
'तानसेन' प्रभु कौ मुख निरखत,
भूल्यौ ब्रह्मा, भूल्यौ इंद्र, रति-पति रह्यौ है लजानी॥

[१६५]

सुरतांत— रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

सोवत उठी रैंन-रस लेत अति, सुंदर सोहत बदन प्यारी कौ।
लै दर्पन मुख देखत, अपने मन में सोच-सकुचि रही,
नैंन होत लजौहै नारी कौ॥
सु कमल बदनी, मनहरनी, मोहनी मूरत,
पिय रस बस कर काम आतुर चितहारी कौ।
'तानसेन' प्रभु संग, रंग रात जागी, पागी आलस,
जँभात गात, तिरछे नैंन निहारी कौ॥

[१६६]

एरी हो रीझि देख, भोर ही उठिकैं प्यारी,
कजरा दृग दोऊ कर सौं लागी मलन।
पुनि या छवि सौं ऐंड़त-जँभात, नीर बह्यौ,
मानौं कमल मधि तैं अलि-सुत छुटन लागे चलन॥
चंद्रबदनी मृगनैंनी बिनु देखैं, घरी-पल कल न।
'तानसेन' देखि रीझि मगन भए, सुंदर नारी अबलन॥

लक्षिता— [१९७] राग भैरव, चौताल

सु नजर भई अपने प्यारे की, काहे कौं चिह्न दुरावत मोतैं,
तब ही जानी मैं चतुराई ।
रात जागि, पागि पीतम संग, मोसौं छिपावत गात,
नैंन उनींदे तेरे लेत जँभाई ॥
सुंदर मृगनैंनी बोलत पिकवैंनी प्यारी, रंग भरी मूरति मन समाई।
'तानसेन' पिय बस कर लीन्हौं, धनि-धनि महारानी सुखदाई ॥

धीरा— [१९८] रागिनी भैरवी, चौताल

आज मेरे भाग जागे, पिय भोर ही सुधि लई ।
इतनी भई निहाल, पिय तुम पै बलि-बलि गई ॥
तन-मन-प्रान तुमहीं, निस-दिन तुमरे रंग रँगई ।
'तानसेन' प्रभु तुम चतुर-सिरोमनि, रस बस तिहारे भई ॥

[१९९] रागिनी परज, चौताल

आइयै जु कैसैं आवन पाये, भले ही आये, मेरे नवल लाल ।
तुम हौ चतुर सुजान, बूझत सब गुन-निधान,
महाज्ञान मूरति हौ अति रसाल ॥
हम सौं अवधि बदि अनत बिरमि रहे, ऐसी न कीजै दीनदयाल ।
'तानसेन' प्रभु तुम बहुनायक, दीजियै दरस कीजियै निहाल ॥

[२००] रागिनी टोड़ी, धमार

मोहन मैं बारी, बारि डारी, नागर जिन करौ कपट की बातैं ।
रहत ज्ञान-ध्यान तिहारे नाम कौ, सुमिरत हैं दिन-रातैं ॥
घरी-पल-छिन रह्यौ न जात मोपै, करत रहत तेरी बातैं ।
'तानसेन' प्रभु कृपा करौ मोपै, नैंक चितवौ तौ चहा तैं ॥

[२०१] राग सारंग

भले ही मेरैं आये हो पिय, ठीक दुपहरी की बिरियाँ।
सुभ दिन, सुभ नक्षत्र, सुभ महूरत, सुभ पल-छिन,सुभ घरियाँ॥
भयौ है आनंद-कंद, मिट्यौ विरह दुख-द्वंद,
चंदन घिस अंग लेपत, और पाँयन परियाँ।
'तानसेन' के प्रभु मया कीनीं मो पर,
सूखी बेल कीनीं हरियाँ॥

[२०२] राग टोड़ी

ए आज कौन बन चराई एती गैयाँ, कहाँ धौ लगाई एती बेर।
बैठे अब कहा, सुधि लेहौ नैन औसेर॥
एक बन ढूँढ़ि सकल बन ढूँढ़ी, तोऊ न पाई गायन की नेर।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, देहौ कदम चढ़ि टेर॥

[२०३] राग गौड, सारंग

हौं नीके जानत री आली, बहुनायक कौ नेह।
कहूँ धूप कहुँ छाँह जनावत, कहुँ बादर कहूँ मेह॥
बृंदाबन बिहरत गोपिन सँग, कोऊ न जानत भेह।
'तानसेन' के पिय तुम'बहुनायक, छिन आँगन छिन गेह॥

[२०४] राग सूहा

परौसिन मेरी, काहे कौं करत बड़ाई, अपने नगर की।
कहा जु भयौ, दिन बारे के बिछुरे, हम-तुम दौनों एक नगर की॥
भलेई आये, मो मन भाये, लेहुँ बलैयाँ वाही सुघर की।
'तानसेन' के पिय बहुनायक, आवत बास बगर की॥

धीराधीरा— [२०५] राग विहाग, चौताल

आज कहा तजि बैठी हौ भूषन, ऐसैंई अंग कछू अरसीले।
बोलत बोल रुखाई लिएँ, तुम काहै कुढंग किये ये हँसीले॥
क्यौं न कहौ दुख प्रान-प्रिया, अँसुअन रहे भर नैंन लजीले।
'तानसेन' सुख होवें तिनकैं, जिनके मन भावन छैल छबीले[1]॥

अधीरा— [२०६] राग भैरव, तिताला

अनत रति मान, आये पिय भोरहिं मेरै।
मोहि तौ सुधि-बुधि गई री, मोहन मुख हेरै॥
जिय की और सौं, मुँह की हम सौं, कहत हैं टेरै।
'तानसेन' के प्रभु ताही पै सिधारियै तुम,
मन रह्यौ जिन तन नेरै॥

खंडिता— [२०७] राग भैरव, चौताल

धन-धन मोरे भाग, भोर भए आये लालन,
सब निसि कहाँ जागे प्यारे।
आलसवंत जँभात जात, मलिन गात, साँची कहौ बात नंददुलारे॥
लटपटी पाग खुलि रही पेचन सौं, अधरन पीक-लीक धारे।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, साँचे बोल साँझ के तिहारे॥

---

[1] प्रायः इसी प्रकार का एक सवैया छंद मतिराम का भी है—

आज कहा तजि बैठी हौ भूषन ? ऐसेंहि, अंग कछू अरसीले।
बोलत बोल रुखाई लिऐं, 'मतिराम' सुने तैं सनेह सुसीले॥
क्यों न कहौ दुख प्रान-प्रिया ! अँसुआँन रहे भरि नैंन लजीले।
कौन तिन्हैं दुख है, जिनके तुससे मन-भावन छैल-छबीले॥

[२०८] राग भैरव, चौताल

ए मेरे भाग जागे, पिय भोर ही सुधि लई।
मैं इतनौ भलौ मनावत हूँ, बलमा ! हौं तुम पर बलि गई॥
अधरन अंजन महाबर भाल, मति-गति औरें भई।
'तानसेन' के प्रभु ठाड़े रहौ, बलैया लै हौं, कहाँ गई तिय नई॥

[२०९] रागिनी गुर्जरी, सुर फाकृता

मोसौं अवधि बदि गये गुसाँई, रहे कवन भाँत।
रैन-दिना मग जोवत जात, ऐसी कौन तिय,
जेहि रिझाय कीनौ मात॥
अंजन अधर, भाल महावर, नवल तिया ललचात।
'तानसेन' प्रभु वहीं पै सिधारौ, जहाँ जागे सारी रात॥

[२१०] राग भैरव, चौताल

मोसौं ज्यौं अवधि बदि गए साँझ कौं, यह आए भोर भये।
ऐसी को चतुर-सुघर नारि, जिन तुम बिरमाए, ऐसे सुख जु दये॥
अधरन अंजन कहूँ पीक पलक-लीक,
औरन सौं चित-हित बहु भाँतिन लये।
'तानसेन' के प्रभु वहाँ ही पग धारौ, जहाँ किये नेह नये॥

[२११]

मोसौं जे अवधि बदि गये, साँझ के भोर ही आये।
ऐसी काहू चतुर नारि, तुम रस बस किये ऐसे नेह नये॥
अधरन अंजन भाल महावर, तिल तिलक ठये।
'तानसेन' प्रभु जावो जी जावो, नई नारि रँगये॥

[२१२] रागिनी टोड़ी, तिताला

अति अलसाने मैं जाने,पिय अनत रँगे, रंगे जू,रँगे हो रंग-राग के।
रिझवत काहू पै, रीझि बसे बदि जानत,
रस के बस भये, आज भँवर काहू बाग के ॥
दोस तिहारौ नाँही, दोस काहू तिया कौ,
तुम्हैं सिखाई सीख अनुराग के।
'तानसेन' प्रभु तुम बहुनायक,
बात कहा बनावौ, सुधारौ पेच पाग के ॥

[२१३] राग टोड़ी

आये अलसाने लाल, जोये हम सरसाने,
अनत जगे हो रंग-राग के।
मेरें आये भोर, काहू और कें रमे हो,
रस के चखैया भ्रमर काहू बाग के ॥
जहीं तें जु आये लाल, तहीं क्यों न जाओ जू,
जाही के भाग जागे, परम सुहाग के।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक,
बातें तौ बनाओ, पै सँभारौ पेच पाग के ॥

[२१४] रागिनी सिंदूरा परज

बरसाने तें आये अरसाने हम जाने जू, लच्छिन तिहारे पहिचाने।
कहूँ काजर,कहूँ पीक-लीक, अनगन सुभाव,न मोपै जात बखाने ॥
नैंनन नींद, ध्यान मन, हिरदै बसत तीय,
ताही के लागत गुन गाने ॥
धन्य तेरौ नेह 'तानसेन' के प्रभु,
ऐसे नट नागर कौं छल करि नाँच नँचाने ॥

[२१५] राग मालकोष

प्यारे ! हौं बात कहत, बिलग जिन मानौं,
तुम मोसौं दूर जाय, अनत रति मानी।
तुम हू जो मेरैं आये, भलौ जु मनावत, सो तौ ही हम जानी ॥
नख-छत चिह्न देखियत हैं, यह बात मेरे मन हू न मानी।
'तानसेन' के प्रभु न्यारे ह्वै रहे, क्यों याही तैं सौतिन जानी ॥

[२१६] रागिनी टोड़ा, चौताल

बागे बनाये आये हौ पिय लटकि, पाग की चटकि अटकति मन।
लटकि-लटकि चलत चाल, मटकि-मटकि मुसकन ॥
अरसाने सरसाने नैंना री नींद न आवै,
निपट सौत नैंक छवि छत तन।
'तानसेन' प्रभु तुम बहुनायक, रस बस कर लीनौं तन-मन-धन ॥

[२१७] रागिनी भैरवी, चौताल

रैन विहाय गई, भोर भयौ, होरी कहाँ खेले प्यारे।
कौन नवल तिय पिय बिलमाये,गिनत बीते मोहि सब निसि तारे ॥
कहुँ काजर, कहुँ पीक-लीक, अधरन अंजन, भाल महावर धारे।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, साँझ के गये हौ सिधारे ॥

[२१८] रागिनी टोड़ी, चौताल

सौंहैं खात तोतरात, बात करत अरसात,
आये भएँ प्रात, डगमगात गात।
ऐंड़ात जँभात धकधकात मुरझात, थरथरात भरभरात ॥
जावो जी जावो, जहाँ नवल तिया संग जागे रात,
याही तैं मुसकात, मेरौ मन मनात, बात कहत हँसात।
मोहि नाँ सुहात, तहाँ ही सिधारियै, जाकौ मन ललचात ॥
'तानसेन' के प्रभु मीठे बचनन बतरात,
झूँठी-झूँठी सौंहैं खात, तेरी सौं, तेरी सौं, अब नहीं जात।

[२१६] रागिनी टोड़ी, चौताल

मरगजे बागे रात के जागे, छूटे बंधन अरसात जँभात,
बहियाँ गहन आगै आवत, सकुच न लावत।
छियौं नाँ, छाँड़ौ अँचरा, मोर मुकटई पैंयाँन आनि झुकावत॥
लाख जो जत्रन करौ, तौऊ नाँ बोलिहौं लाल,
ये तुम बातैं कब की लावत।
'तानसेन' प्रभु रमनी-रमन तुम, मोहि खिजाए कहा पावत॥

[२२०] राग भैरव, ताल धमार

लाल अरसाने भोरहिं आये।
कौन बाम हित-चित सौं चाहे, सिगरी रैंन जगाये॥
ढिग-ढिग काजर फैल रह्यौ है, जावक अधिक सुहाये।
'तानसेन' के प्रभु वहाँ ही सिधारौ, नवल तिया मन भाये॥

[२२१] राग भैरव, चौताल

कौन सौं रति मानी, साँची कहौं मन-भावन।
निसि के जागे अनुरागे आये हौ, अँखिया झुकनि लागीं,
तब झूमि-झूमि आये हौ, मोहि रिझावन॥
वचन बनावत बन नहीं आवत, कहैं देत नैंन, बैंन दरसावन।
'तानसेन' के प्रभु वहाँ ही सिधारौ,
जहाँ सारी रैंन रहे रति-रन जगावन॥

मान-मनावन— [२२२] रागिनी टोड़ी, चौताल

जेई-जेई बचन कहत हौं री तोसौं,
तेई-तेई बचन तू मान लै सयान।
मेरे कहैं तू उठ चल री ललना,
धरे ही रहेंगे तेरे जिय के गुमान॥
कल न लागै और तैं तेरी, तेरौ है जीवन-प्रान।
'तानसेन' तेरी कहाँ लौं अस्तुति करै, क्यौं तू जान है रही अजान॥

[२२३] रागिनी खंबावती, चौताल

समुझि-समुझि आली, प्रान जात प्यारे मोहन बिन ।
बहुरि न यह रंग, बहुरि न यह रूप, बहुरि न रहै आली यह दिन॥
अंजुरिन जल घटत छिन-छिन, तेरौ री मान बढ़ै चौगुन ।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, मान न कीजै आली यह छिन ॥

[२२४] रागिनी टोड़ी, चौताल

मन ही मन तू रार रही धरि, आपु अपबस करिकैं,
सबन तैं दुराय विराय कर रही सो,
अरघट परघट नैंन बताय देत ।
प्रानेसुर की प्रीति अति गुपत कियौ चाहत री,
तेरे हगपाल तैं अब जान-जान लेत ॥
जौलौं मैं न सिखाई, तौलौं आई,
नेह नजर जनम-जनम हित समेत ।
'तानसेन' प्रभु के रंग रँगे जे, अरुन बरन सेत-असेत ॥

[२२५] रागिनी खंबावती, चौताल

जोबन के जोर तोर कैसै समझाय राखूं,
मेरौ कह्यौ मान प्यारी, आज तेरौ दाव री ।
तन-मन-धन नौंछावर करि हौं,
बीत गई रैन, तासौं छूटि गयौ चाव री ॥
लाल मनावत, तू नहीं मानत,
उठ री गँवार नारि, घने समझाव री ।
'तानसेन' कहै प्रभु से तजौ मान,
हाथ सौं गँवाय लाल, फिर पछिताव री ॥

[२२६] राग नायकी

अरी तोमैं समझ नाहिंन, उठि चल री प्रिये, पहरि गहैनौं।
कब की ठाड़ी मनावत तोकौं, चल री सखी,तोहि नाँहिन रहैनौं।।
यह तेरौ ज्ञान-ध्यान, यह नयौ जोबन,
यह ससि-मुख तें 'नाँहिन' कहैनौ।
'तानसेन' के प्रभु वे बहुनायक, सब सखितन में तेरौ री लहैनौं।।

[२२७] राग ललित

धन तू धन, धन-धन तेरौ जोबन, धन तेरौई जनम-करम गुन।
राजदुलारी रूप-साँचे ढरी, सब सखियन में, उठ चल बन-बन।।
हौं जो मनावत, तू नहिं मानत, छाँड़ अब दै री आली ठन-गन।
'तानसेन' के प्रभु वे बहुनायक, तोहि बुलावत हैं री छिन-छिन।।

[२२८]

लाल मनावै, तू नहीं मानै, मान री मेरौ कह्यौ तू, मान रहैगौ।
प्यारे के जिया में तू रोम-रोम रमि रह्यौ,
तेरौ ही दृगन जल भरौ ही रहैगौ।।
सुनौ 'मियाँ तानसेन' इतनौं समझ लेहु,
जोबन गयें तोसौं कौन कहैगौ।।

[२२९] राग विहाग, चौताल

अरी अब लुकि भजि जावौ, सनमुख होइ प्यारे सौं,
सु रंग भरी कीजियै बतियाँ।
मान सीख मेरी, काहू की कुमति न लीजियै,
छाँड़ यह हठ, चल लिपट प्यारे गुपाल की छतियाँ।।
देख तू ऐसी फुलवारी सी ह्वै रही,
कर अपबस सुंदरी मैं मनाय रही रतियाँ।
कब को जोवत बाट प्रानेसुर प्यारौ, जान बूझ कें काहे कौं—
करत है, 'तानसेन' प्रभु सौं धतियाँ।।

[२३०] रागिनी पूर्वी, चौताल

अरी या तन कौ मति कर मान,
मन मैं नहीं चाहै, मनावन करत हौ मान।
मानौं मेरी मति मोहिनी मानिनी,
मो मति मन में मानौ, मति करौ मोहन सौं मान ॥
मुरि-मुरि चितवत मनही मनभावन कौं,
माधौ मुकुंद वे हैं, मथुरापति मुरारि नंद-दान।
मान री मान, मैनका सी माधुर्यता,
'तानसेन' प्रभु मनमोहन की मान ॥

[२३१]

साह अकबर कौं रिझाय लै री, मान किये तैं कहा पावैगी।
पिय की चौंप में तू उठि, चलि है तौ दिन ही भावैगी ॥
होत मेरे कहैं कहा देखै री, नातर सौत हँसावैगी।
'तानसेन' पी कौ मन मोहै,
तासौं तू हठ निवार, नहीं फेर पछितावैगी ॥

[२३२] राग सूहा

बरसि उघर गयौ मेह, टपकत पात-द्रुम बेली।
झमकत झार, नीर भरे देखियत, उपमा कहा कहूँ हेली ॥
लाल मनावत, तू नहिं मानत, तोसौं प्रीत नवेली।
'तानसेन' के प्रभु, तुम बहुनायक, याही तैं गर्व गहेली ॥

[२३३] राग भैरव, चौताल

तोकौं प्यारे पठई, किधौं तू आपु तें आई मनावन।
प्रानेसुर के सुख की बतियाँ ये न होवैं री,
हौं नीके जानत, जैसी तू मोसौं री लागी बनावन ॥

या मुख की अब कान न करत हौं, अनमिल पिय सौं–
कह्यौ न परत, तेरी भौंहैं तनावन।
कहा कहौं राजा राम सौं, तोसी री पठावै,
हमारे गृह बनावन ॥
'तानसेन' कहै आवत अपनी ओरन कौं,
चित लावत मुख की बात कहलावन ॥

[२३४] राग पूर्वी

अरी जिन तू पठई, जाही पै फिर जाउ,
उन मोसौं अकथ कथा नाँधी।
तोहि पठावत, वे क्यों नहिं आवत,
उनके पाँयन कछु मँहदी बाँधी ॥
मो ढिग आवत, बचन सुनावत, बात कहति आधी-आधी।
'तानसेन' के प्रभु वे बहुनायक,
प्रीति के फंदन कर हौ फाँदी ॥

[२३५] राग कल्याण

सखी री, तोहै कहा परी, पर घर की बातन सौं,
पिया मेरें आयें, कै न आयें, न आवेंगे।
हौं उनकै जाऊँ, कैधौं वेही मेरें आवेंगे,
हौं उन्हें मनाऊँ, कैधौं वे मोही कौं मनावेंगे ॥
हौं उन प्यारी, कैधौं वेही मेरे प्यारे लागें,
आप रस लै लै लाल, वे ही रस लावेंगे।
'तानसेन' के प्रभु वे बहुनायक,
हौं उन्हें रिझाऊँ, कैसौं वे मोही कौं रिझावेंगे ॥

[२३६] रागिनी पूर्वी, तिताला

है यह मानिनी मनायवे कौं अति ही हुलास जिय,
मन हू न मानै, पिय कैसे कै मनाइयै।
बहुत ही सौंह दई उठि चल फिर प्यारी,
वाके पाँय पर धरि सीस नवाइयै॥
मानै न मनाई नैंक, मैं पचिहारी,
कैसै कर वाकौं समुझाइयै।
'तानसेन' प्रभु प्यारे आप नैंक चलियै,
चलि पाँयन में सिर नाय बिनती कराइयै॥

[२३७] राग भैरव, चौताल

जिन करौ मोसैं झूंठी-झूंठी बतियाँ,
तिहारी प्रतीति मोहि नैंक नाँहि आवत॥
वे तौ लंगर कान, नहीं छाँड़ैं अपनी बान,
वह सौतिन के घर जावत॥
मेरे परतच्छ आय लाखन सौंहैं खावत-मनावत,
पग परसि-परसि चूक छिमा करावत।
बार-बार कौ रिसावन-मनावन, 'तानसेन' नाँहो जू सुहावत॥

[२३८] राग बिहाग

सखी री, माननी मान गढ़ कर लीने, बैठी री ताकी ओट।
नैन बंदूक, तामैं सकुच दारू भर्यौ,
बोल गोली चलावै, जैसै झटाझोट॥
भौंह कमान, तामैं अंजन पनच दीयें,
बरुनी बान मारै तिरछी चोट।
निसि धाय जागे जाय, 'तानसेन' के प्रभु,
उरज गुरज लीजै, छूटयौ हठ, टूटयौ री काम-कोट॥

[२३९] रागिनी आसावरी, चौताल

नील बरन पहरि दुकूल रही घटा सौ,
कामिनि दामिनि लगत माधौ रैंन ।
जाकी पचरंग किनारी सोई मेरे जान धनक भई,
बूंद स्रम-जल की और बोलत कोक-कला बैंन ॥
पुहुपन के हार छूटे, रमि रहे सोई बक-पाँति,
ऐसी लागी मेरे नैंन-सैंन ।
यह छवि देखि रीझे 'तानसेन' के प्रभु,
ऐसी लागत मानौं मूरति मैंन ॥

वियोगिनी— [२४०] रागिनी आसावरी, चौताल

माई री, महा कठिन भई मिलि बिछुरे की पीर ।
घरी-घरी पल-छिन जुग से बीतन लागे,
नैंनन भरि-भरि आवत नीर ॥
जब से प्यारौ भयौ है न्यारौ, कल नाँ परति मेरी बीर ।
'तानसेन' के प्रभु बेगि आवन कीजे, जियरा धरत नाँहीं धीर ॥

[२४१] राग गँधार, ताल रूपक

कठिन माई पिय कौ री नेहरा, गेहरा नहीं भावै रहौं नित उदास ।
अब नाँ सँमात मेरे जान आली, अरध ऊरध दोऊ सांस ॥
बीतै जागत रैन, चैंन नहिं नैनन,
तातैं सपने हू में कहा, सो रही सपने नहीं आस ।
'तानसेन' प्रभु समझि-समझि कियौ, भोग-बिलास ॥

[२४२] राग गन्धार, तिताला

मोहि जागत भएँ चैन न रहै नैंनन,
तामैं तें सपने में कहा समाइयै ।
'तानसेन' प्रभु समझ कीजै कैसैं भोग बिलास,
कठिन सुधि-बुधि लैरी पुनि अमृत भेंट, सौना दै रतन जड़ाइयै ॥

[२४३]

वा दिन तैं लगत हमकौं आली री सूनौ भवन,
जा दिन तैं पीतम परदेस गमन कीनौं।
घरी-घरी पल-पल छिन-छिन बरस से बीतत,
उन बिन विरह अति दुःख दीनौं॥
सुंदर स्याम मनोहर मूरति, वानैं मेरौ मन हर लीनौं।
'तानसेन' प्रभु बेगि दरस देहौ, तिहारे रंग में निस-दिन भीनौं॥

[२४४] राग विभास चर्चरी

सपने हू न बिछुरियै हो, हरि सौं मन यों वाँछै।
स्यामसुंदर बहुनायक, सुखदायक सबहिन कौं,
मोहि कबहू न पूँछै री आछै॥
नंद-नंदन जु अनत रस कीन्हौ, काम जरावत री,
सौतिन-साल दूजें ताछै।
'तानसेन' प्रभु के बिछुरे जरद भई,
मोहि निहोरन आवै री, जो कोऊ पूछै-पाछै॥

[२४५]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

तन की तपन तब ही मिटैगी मेरी,
जब प्यारे कौं दृष्टि भर देखौंगी।
जब दरसन पाऊँ प्रान-प्रीतम कौ,
जीतब जनम सुफल अपनौ लेखौंगी॥
अष्टयाम मोहि कौं ध्यान रहत वाकौ, आली! कौलौं भेटौंगी।
'तानसेन' प्रभु कोऊ आन मिलावै, ताके पाँयन सीस टेकौंगी॥

[२४६]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

कौन दिसा हैं, अजहू न आये। सखी री ! हरि न आये ।।
और जो जान, जिय ध्यान मेरैं, रसना नाम लियौ री,
मानौं उनही सौं मिलाये ।
मृगमद-घनसार-पुहुप- चंदन नहीं सो लाये,
ऐसी कृपा करौ प्रभु, तुम हमहू कौं करन मंगल छाये ।।
मलया चंदन छुद्र घंटिका, इनहीं लै बतराये।
'तानसेन' प्रभु वेग दरस दीजै, हम हौं हू मंगल गाये ।।

[२४७]

चल्यौ नहीं जात, अंग भीजे जात प्रसेद माँझ,
पुलकित गात, जानी-समझी न बात है ।
पिया बिन जात जरौ अंग, तन थहरात सब,
आन कौ रंग कछु आन भयौ जात है ।।
आँसू चले जात, प्यारी खीन सी दिखात,
ए री तेरी दसा देखि, मेरौ हियौ हरहरात है ।
नैक निहारें मनमोहन कौ रूप आली,
'तानसेन' प्रभु रोम-रोम हरसात है ।।

पावस वियोगिनी— [२४८] राग भैरव, चौताल

बादर उन्हिआये, सो पिय बिन लागें डराये ।
एक तौ अँधियारी कारी लागत डरावनी,
दूजै अबधि बीतन लागी, अजहू न आये ।।
दादुर-पिक-मोर सोर हू करन लागे, बिरही तन लागत डहाये।
'तानसेन' के प्रभु तुम नीके जानौ,
भली सुधि लीनीं, सो भोरैं भरमाये ।।

[२४९]

सावन आयौ आली, मोकौं विरह सतावन।
चहुँ ओर तैं घन उमड़ि-घुमड़ि आये, मन न भावन॥
बोलत चातक-मोर-पपीहा, पिउ-पिउ रटत बिरह-बढ़ावन।
'तानसेन' प्रभु के बिना, कैसै कटैं दिन-रातन॥

[२५०] राग गौड़, धीम ताल

मेरी आली री, सावन की रैन।
रैन अँधेरी कारी, बिजुरी चमकै, विरहा सतावत मैन॥
दादुर-मोर-पपैया बोलैं, कोयल बोलै मधुरे बैन।
'तानसेन' प्रभु बेगि दरस दीजै, तुम बिन नाँहिन चैन॥

[२५१] राग विहाग, चौताल

बादर आए री, लाल पिया बिन लागे डरपावन।
एक तौ अँधेरी कारी, बीजुरी चमकत, उमड़ि-घुमड़ि बरसावन॥
जब तैं पिया परदेस गबन कीन्हौं,
तब तैं बिरहा भयौ मो तन तावन।
सावन आयौ, अति झर लायौ, 'तानसेन' न आये मन-भावन॥

[२५२] राग विहाग, चौताल

इन अँखियन विरह की बेलि बई।
सींचि-सींचि जल अँसुअन-पानी री,
दिन-दिन होत नई।
उलहत पातन नये-नये, सो बूँद पताल गई॥
'तानसेन' प्रभु तुम्हरे दरस बिन,
सब तन छीन भई॥

७—कृष्ण-लीला

पलना-झूलन— [२५३] रागिनी टोड़ी, तिताला

हमरे लला कैं सुरंग खिलौना, खेलत कृष्ण कन्हैया।
अगर-चंदन कौ पलनौ बन्यौ है, हीरा-लाल-जवाहर जरैया॥
भँवरी-भँवरा, चट्टा-बट्टा, हंस-चकोर अरु मोर-चिरैया।
'तानसेन' प्रभु जसोमति झुलावै, दोऊ कर लेत बलैया॥

बाल-क्रीड़ा— [२५४]

कैसे आछे सोहत लाल, कैसौ मुकट सीस,
कटि किंकिनी नूपुर रुनक-झुनक, ठनकन चाप धरत,
चाल चलत गति गयंद की।
काछि कटि, काँधै कामरि, गल सोहै बैजंती माल,
मृगमद तिलक ललाट, कोटि काम लज्जित भये,
अधर मुरली बजत चित फंद की॥
साँवरे सलौने गात, सोभा कछु कही न जात,
चितबन नैंनन विसाल, रवि-ससि की जोति भई मंद सी।
'तानसेन' के प्रभु अँगना में खेलत, सब ब्रज-जन आनंद मुदित,
जय बोलत बृंदाबन-चंद की॥

गो-चारन— [२५५] रागिनी श्री गौरी, चौताल

धौरी-धूमर पीयरी-काजर कहि-कहि टेरै।
मोर मुकट सीस, स्रवन कुंडल, कटि में पीतांबर पहिरै॥
ग्वाल-बाल सब सखा संग के, लै आवत ब्रज नेरै।
'तानसेन' प्रभु मुख रज लपटानी, जसुमति निरखि मुख हेरै॥

[२५६] राग गंधार, तिताला

ग्राज हरि लियैं ग्रनहिलीं गैयाँ, एक ही लकुटि हो हाँकी।
ज्यौं-ज्यौं रोकीं मोहन तुम सोई,
त्यौं-त्यौं ग्रनुराग हियू भर देखत मुखाँ की ॥
हम जो मनावत कहुँ तुम मानत, वे बतियां गढ़ बाँकी।
तृन नहीं चरत, बछरा नहीं चौंखत,
हम कहा जानैं, को हैं कहाँ की ॥
'तानसेन' प्रभु बेगि दरस दीजै, सब मंतर पढ़ि ग्राँकी ॥

उपालंभ— [२५७]

ग्ररी,हम जात रहीं डगरी-डगरी। यहि गगरी सीस धरैं मग री ॥
हमहिं देख दौरौ एकटक गोरी, ग्रनैंट कीनीं सगरी ॥
जमुना जान देइ नहिं जल कौं, नाहिन फिरन देइ नगरी।
ग्रचगरी बातैं करत हँसी की, मुरली ग्रधर धरैं ठाड़ौ पग री॥
ग्रहो जसोदा! सुनौ कान्ह की, लोक-लाज-कीरति बिगरी।
'तानसेन'प्रभु सबन में ग्रगुवा,ऐसौ ढीठ कोऊ नाँहिन या जग री ॥

दानलीला— [२५८] राग टोड़ी, चौताल

तैं कहुँ देख्यौरी ग्राली, नंद-नंदन कुँवर कान्ह,
मटुकी झटकिकै पटक गयौ री।
माखन-चोर चोरि चित लीनौ, कीनौ नैकहु न डर,
नट ज्यौं उलटिकैं पलटि गयौ री॥
मारग रोकि कहत खोरन में, नैन-सैन दै सटक गयौ री।
'तानसेन' के प्रभु बहुनायक, रस गोरस लै गटक गयौ री ॥

कृष्ण प्रेम— [२५६] रागिनी टोड़ी, चौताल

तें कहुँ देख्यौरी बनमाली आली, बंसी बजाय मन लै गयौ।
धुनि सुनि कल न परत निसि-दिन उन बिन,
नैन तरसत बिन देखें, टौना सौ जंत्र-मंत्र कछु करि गयौ ।।
जब नहिं देखत छिन न सुहावत, भावत नहिं गेह,
मेरे नैनन में अटक गयौ।
'तानसेन' मैनन की मूरत कोटि बारि डारौं,
साँवरी सूरत जिय बसि गयौ ।।

[२६०] रागिनी आसावरी, तिताला

मेरौ मन बौराइ राखौ, इन गोविंद के बैनन।
हौं पाछै पछिताइ रही, वे तो अंतरजामी–
स्वामी कहियत हैं, मन बस कीन्हौ मैनन ।।
सूरत ठगौरी मोहि ठगि जो चले पीर हरन,
चितये मो तन, सूधे इन नैनन।
'तानसेन' के प्रभु सुखसागर सुनौ, उन्न देखें ही निहचैं चैनन ।।

[२६१] रागिनी जैतश्री, चौताल

मेरौ मन मोहि लीनौ सुंदर-नैन, रैन चैन परत नाँहीं बनवारी।
मेरै तौ एक ध्यान तुम्हारौ, तुम्हारी गति,
तुमही जानौं, अविगत गति गिरधारी ।।
जप-तप-नैम कछू नहिं जानूं, नागर नंद किसोर,
अब तौ कोटिन जतन कर हारी।
प्रान-प्यारे दरस दीजै, सुख-संपति-आनंद कीजै,
'तानसेन' सरन तेरी, एहो कुंज-बिहारी ।।

[२६२]

रागिनी मुलतानी, धनाश्री, चौताल

ए सखी ! नंदकुमार बालापन में मेरौ मन हर लीनौ।
जिय अकुलात और नैंनन तें नीर जात, मेरे हिय कौं दुःख दीनौ ।।
साँवरौ सलौनौ स्याम बाट रोक ठाड़ौ भयौ,
मोकौं बुलाय पास, अधरन कौ रस लीनौ।
नैन सौं नैन मिलाय, हृदय सौं हृदय लगाय,
'तानसेन' बंसी बजाय जादू सौ कीनौ ।।

[२६३] राग सोरठ, तिताला

हेली, चलौ देखौ री चित चोर।
रैंन अँधेरी कारी, बिजुरी चमकत, मोर करत अति सोर।
ब्रज गोपिका सब सुख मदमाँती, कित रजनी कित भोर ।।
बृंदाबन की कुंज गलिन में, मदन जग्यौ चहुँ ओर।
नंद महर कौ ढीठ साँवरौ, हम सौं भयौ कठोर ।।
मन व्याकुल बिन दरस स्याम के, चंचल चितवन जोर।
'तानसेन' कौं दरसन दीजै, श्री बल–नंदकिसोर ।।

[२६४]

सुंदर छवि छाजत राजत मोहन, कहा कहौं रूप की निकाई,
मोसौं बरजौ न जाई, आली ! ऐसौ स्याम कन्हाई।
स्रवन कुंडल मकराकृत, कटि पीत बसन,
हाथ लकुटिया, मुरली मुख, मधुर धुनि गावत सुहाई ।।
सप्त सुर और तीन ग्राम लै बाईस सुरति,
उनंचास कूट तान लाग-डाट सकल छाई।
औढ़व-षाड़व संपूरन आतक-खातक स्वरांतक,
बादी बिवादी संवादी अनुवादी 'तानसेन' लै रिझाई ।।

[२६५] राग पूर्वी, चौताल

मोर मुकट पीत बसन सोहत, मोहन नवल छैल नंदलाल ।
जमुना के तट-तट नट ज्यौं नाँचत, गावत तान रसाल ।।
तन-मन-धन नौंछावर करि हौं, बारूँ मोतिन-थाल ।
'तानसेन' प्रभु तिहारे दरस कौं, सुंदर रूप गोपाल ।।

[२६६] रागिनी गुर्जरी, चौताल

ए आज भोर ही आये हैं कान्ह रे, गुर्जरी के धाम ।
सप्त सुर सौं गावत तानन मुरली में गुर्जरी नाम ।।
उरप-तिरप लाग-डाट आतक-खातक स्वरांतक,
औड़व-षाड़व सौं रिझावत बाम ।
'तानसेन' प्रभु नित-प्रति आनंद देत, घर-घर गोकुल गाम ।।

बंशी-वादन— [१६७] रागिनी आसावरी, ताल रूपक

आज बजाई मुरली मनोहर नें, सुधि न रही कछु मो तन-मन में ।
मैं जमुना जल भरन जात ही, कान्हा ठाड़ौ री बृंदाबन में ।।
सुधि न रही कछु, ठगी सी अंगन में,
भूली काम-काज सबहिं घरन में ।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक,
मेरौ मन मोह्यौ आली, मदनमोहन में ।।

[२६८] राग भैरव, चौताल

एरी आज बाँसुरी बजाई बन मध्य, कौन ढंग, कौन रंग फूंकि-फुंकि ।
सुनत स्रवन सुधि रही नहीं तन की, भई हौं बावरी,
बृंदाबन दिसि हेरि झुकि-झुकि ।।
ब्रह्मा वेद पढ़त भूले, सिव समाधि माँहि डोले,
सुर-नर-मुनि मोहे, देवांगना देखें लुकि-लुकि ।
सप्त स्वर तीन ग्राम, इक्कीस मूर्छना लै,
'तानसेन' प्रभु मुरली बजावत, बोलत मोर, कोकला कुहुकि-कुहकि ।।

[२६९] रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

आज कान्ह बृंदावन, मुरली बजाई सुखदाई है।
स्वर्ग लोक नरलोक पताल लोक, सब धुनि सुनि सुधि बिसराई है ।।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना बाईस सुरति,
उनंचास कूट तान रंध्रन में छाई है।
'तानसेन' के प्रभु रस बस कर लीने,
ब्रजबधू घर छोड़ स्याम जू पै आई है ।।

[२७०] रागिनी गुर्जरी, चौतात

आज बन-बन मुरली बजावत, सूधी-सूधी तान के लिवैया।
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया,
टेढ़े ही टेढ़े आवत नंद कौ कुँवर कन्हैया ।।
सांवरी सूरत माधुरी मूरत, बृंदावन के बसैया।
'तानसेन' प्रभु बनवारी गिरिधारी, ब्रजबिहारी बल जू के भैया।।

[२७१] रागिनी पूर्वी, चौताल

मुरली बजावौ रिझावौ मनमोहन, मधुर-मधुर स्वर तान।
सप्त तीन इकईस बाईसौ, लाग-डाट और मान ।।
ठाट भेद विलंवित आतक-खातक,
स्वरांतक औड़व-षाड़व पूरन आन।
'तानसेन' प्रभु संगीत गति लै, निरतत करि लास्य-गान ।।

[२७२] रागिनी पूर्वी, चौताल

मुरलिया कैसे बाजै रस सानी, गरजि धौं करै अमृत-बानी।
अति ही नाद प्रवाह ताल मूल जिय धारै,
ऐसौ रस कहाँ तें उपजत ऐसी सुहानी ।।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकईस मूर्छना, यह गावत सब गानी।
'तानसेन' के प्रभु मुरली अधर धरैं, जाकी त्रईलोक रजधानी ।।

[२७३] श्रीराग ताल धीमा, तिताला

मुरली की धुन सुन चकित भई सब ब्रज की नारी,
सुधि न रही कछु आपन तन-मन-घर की।
छक-छक करि, रीझि-रीझि करि, लेत बलैयाँ कान्हर हरि की।।
ऐसे सुर तैं बजावत, जामैं नीके सात सप्तक,
तान विरह भरी सुर की।
जिनहिं सुन्यौ तिनहू सुख पायौ, 'तानसेन' प्रभु तान राधाबर की।।

[२७४] राग भैरव, तिताला

कान्हा तैं अब घर झगरौ पसारौ, कैसैं होय निरवारौ।
यह सब घेरौ, करत हैं तेरौ, रस अनरस कौन मंत्र पढ़ि डारौ।।
मुरली बजाय कीन्हीं सब बौरी,
लाज दई तजि अपने-अपने में बिसारौ।
'तानसेन' के प्रभु कहत तुमहिं सौं, तुम जीते हम हारौ।।

[२७५] रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

दीजियै जू हमैं ब्रज बसिवौ, बाँसुरी न बसै,
बाँसुरी बसाय कान्ह हमैं बिदा दीजियै।
बाँसुरी की टेर सुनत रह्यौ नाँ परत मौपै,
कान सुनि-सुनि बन बसेरौ कीजियै।।
जेते उन सुर गाये, तेते हम भेद लीने,
जहाँ राग तहाँ दाग, रोम-रोम छीजियै।
'तानसेन' के प्रभु दया कीजै मो पर,
अंग-अंग चीर-चीर सिंदूर माँग दीजियै।।

[२७६] राग भैरव, चौताल

भोर ही भैरव राग अलाप्यौ, हो प्यारे ! बंसी में आन।
षरज-रिषम-गांधार-मध्यम-पंचम-धैवत-निषाद सप्त सुर गान ।।
आरोही-अवरोही-अस्थायी-संचारी, ताल काल और मान।
उरप-तिरप, लाग-डाट, देसी-मारग
'तानसेन' कहै सुनौ साह अकबर, यह विधि मुरली में कीने गान ।।

[२७७] राग भैरव, चौताल

भोर भयें भैरव गावत भर मुरली में, श्री बृंदावन मधि बनबारी।
सप्त स्वर, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना, लाग-डाट, उरप-तिरप धारी ।।
मधु माधवी-भैरवी-बंगाली, बरारी-सैन्धवी ये भैरव की संग नारी।
'तानसेन' के प्रभु तानन-मानन, मोहि लीनीं ब्रज-नारी ।।

[२७८] राग भैरव, चौताल

मुरली बजावै, आपुन गावै, नैंन न्यारे नँचावै,
यह सबही तियन के मन कौं रिझावै।
दुरि-दुरि आवै पनघट, काहू के घटन दुरावै, रसना प्रेम जनावै ।।
मोहिनी मूरति साँवरी सूरति, देखत ही मन ललचावै।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, सबहिन के मन भावै ।।

[२७९] रागनी जैतश्री, चौताल

ब्रजराज साँवरे मुरली में गावत नीकी तान।
धुनि सुन थकित भये सुर-नर-मुनि,
देव-गुनी गंधर्व चकित हैं जू विमान ।।
उरप-तिरप, लाग-डाट, ढुरन-मुरन सुर प्रमान।
'तानसेन' नैन-सैन बैन-दैन, गायन करत राग-रंग बंधान ।।

होली-लीला— [२८०] रागनी सिंद्रा, परज

श्री नंद कौ नंदन खेलै जी हो-हो होरा।
ग्वाल बाल सब संग सखा लै, ब्रज की बीथिन हिंडोरा॥
ताल-पखावज-आवज बाजत, ढोलक और तंबोरा।
बीन-रबाब-मरज-ढफ-मुरली, मधुर-मधुर ध्वनि थोरा॥
कुंकुम-केसर चंदन-बंदन, अबीर-गुलाल भर झोरा।
'तानसेन' प्रभु फाग रच्यौ है, खेलत किसोरी-किसोरा॥

[२८१] रागिनी भैरवी, धमार

लंगर बटमार खेलै होरी।
बाट-घाट कोऊ निकसि न पावै, पिचकारिन रंग बोरी॥
मैं जु गई जमुना जल भरिवे, गहि मुख मींजी रोरी।
'तानसेन' प्रभु नंद कौ ढोटा, बरजी न मानत गोरी॥

[२८२] रागिनी सिंदूरा परज

चलौ तुमहू देखौ कैसी मची होरी, गावत रंग महल में नारी।
एक गावत एक मृदंग बजावत, एक नाँचत दै-दै तारी॥
अबीर-गुलाल-केसर पिचकारी तकि-तकि मारत,
गावत हैं सब गारी।
'तानसेन' प्रभु खेल रच्यौ है, फगुबा लीन्हौ भारी॥

[२८३] रागिनी सिंदूरा, परज

ओढ़ें सारी प्यारी, केसर के रँग छिरकी-छिरकी।
चितवन में बस कीन्हौं मोहन, यातें फिरत थिरकी-थिरकी॥
अबीर-गुलाल लिएँ भरि झोरी,
रंग की कमोरी सिर ढिरकी-ढिरकी।
'तानसेन' सौं फगुवा लीन्हौं, यातें डोलत हिरकी-हिरकी॥

[२८४] रागिनी देशी टोड़ी

कहौ जी तुम कौन हौ, कहाँ तें आये,
कहाँ कित हो जाओगे सबेरे।
हम तुमकौं पहिचानत नाँहीं, न मेरे घर आवत दरे रे॥
लाल पाग पीतांबर सोहत, और बनमाल गरे रे।
'तानसेन' के प्रभु नैक जो ठाड़े रहे, सब सखियन मिलि हेरे॥

[२८५] रागिनी गुर्जरी, चौताल

एरी गँवारि ग्वारि, तू कहा जानै री गोपन कौ मरम।
काँधें कामरी और हाथ लकुटि लिएँ,
ताकौ जिय कहा होत नरम॥
कटि सोहै पीत बसन, बिडारौ फिरत,
याही तें जान्यौ जात याकौ धरम।
'तानसेन' कहै सबरी कौ जूँठौ खायौ,
ताके जिय कहा होत सरम॥

कुब्जा— [२८६]

कुबिजा तें काहे न मंगल गावै, मंगल गावै।
त्रैलोक कौ ठाकुर सो तेरे द्वारें आवै॥
धन तेरौ भाग सुहाग री नारी,
तोही सौं चित्त चावै।
'तानसेन' के प्रभु पूरब पुन्यन तें,
रस बस करि अपनावै॥

[२८७]

कुबिजा कौ राज री न्याव ये, जासौं गोबिंद बोल बोलै।
त्रैलोक नाथ हितकर चाहैं, सो क्यों न ऐंड़ी-बैंड़ी डोलै ॥
जग-जीवन के सुहाग माँती री माई,
तातें बतियाँ गढ़ि-गढ़ि छोलै।
वाकौ उत्तर बूझत जासौं 'तानसेन',
विरह कबहू हिय डोलै ॥

उद्धव-संदेश— [२८८]

चलौ जाय पूछियै, हरि के समाचार,
जसोदा के आँगन कछुएक लगी है री भीर।
पिया तें पाती आई, बाँची हू न परै,
उनकौं कहा हमारी पीर॥
आवन कहि गये अवधि हू बीती,
अब कैसें जिय धरियै धीर।
'तानसेन' प्रभु मधुबन कौं बिरमि रहे,
कबधौं मिलि हैं जे हरे हैं चीर॥

संगीत-सार

ॐ

दोहा

सुर-मुनि कौं परनाम कर, सुगम कियौ संगीत ।
'तानसेन' रस सहित हित, जानैं गायन प्रीत ।। १ ।।
गीत, वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम संगीत ।
'तानसेन' मत सहस गनि, भरत मतहिं मन-मीत ।। २ ।।
द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जान ।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसि समान ।। ३ ।।
गीत, वाद्य अरु नृत्य के, रस सर्वस गुन जोय ।
'तानसेन' उपजत नहीं, सो संगीत न होय ।। ४ ।।

१—नाद

द्वै प्रकार कौ नाद है, राखौ सुर-नर-मुनि जान ।
'तानसेन' सो कहत है, बहु विधि तिनहिं बखान ।। ५ ।।
एक नाद सो मुक्ति देइ, दूजौ रंजक जानि ।
'तानसेन' मन गुन कहै, सुंदर नाद बखान ।। ६ ।।
अनहद बाजत आपुही, आहत दियौ बजाय ।
'तानसेन' संगीत मत, इनकौं कहौं सुभाय ।। ७ ।।
नाद अनाहत कौ सदाँ, सुर-मुनि करैं जो ध्यान ।
गुरु-प्रसाद सौं मुक्ति देइ, यह जानौ परमान ।। ८ ।।
पवन-अगिन संजोग तैं, प्रगट अनाहत आदि ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सुरन ब्रह्मादि ।। ९ ।।
जिव टारत है चित्त कौं, चित टारत है अग्नि ।
टारत अग्नि सो वायु कौं, ब्रह्म ग्रंथि ह्वै मग्न ।। १० ।।

ता छिन ऊरध चलत है, ब्रह्म ग्रंथि की वाय।
सूछम धुनि हिय नाभ धुरि, सो मध्यम कहिवाय ॥ ११ ॥
होत अपुष्ट जो सीस में, विक्रांतिहि मुख आय।
पंच स्थान जो फिरत हैं, 'तानसेन' सो भाय ॥ १२ ॥
कही जो उतपति नाद की, शास्त्र कहे परमान।
'तानसेन' संगीत मत, जानहु चतुर सुजान ॥ १३ ॥
गीत, वाद्य अरु नृत्य कौं, कह्यौ ज्यौं आतम नाद।
'तानसेन' संगीत मत, जामै उपजत स्वाद ॥ १४ ॥
तीनौं मत सिव नाद कौ, कह्यौ जो मुनिन प्रमान।
ताहि हिए महँ जान लैं, 'तानसेन' सुभ ग्यान ॥ १५ ॥
वरन बात व्यवहार में, मिलौ रहत है नाद[1]।
'तानसेन' बस गान है, और कहत है बाद ॥ १६ ॥
नाद सुविद्या बर लहै, सरसुति कौ परसाद।
काव्य, लास्य अरु नाद है, फलित भयौ सो नाद ॥ १७ ॥
सुर-नर-खग-म्रिग मुदित ह्वै, सुनै सब्द जो नाद।
'तानसेन' सब नाद कहिं, कहत भरत मरजाद ॥ १८ ॥
नाद उदधि के पार कौं, केतिक करे उपाय।
मंजन के भय सरसुती, तूँबी उर गहि लाय ॥ १९ ॥
बीन वाद्य सुर ताल में, निपुन पुरुष है जोइ।
बिना परिस्रम जात है, मोक्ष पंथ कौं सोइ ॥ २० ॥
इड़ा-पिंगला-सुषमना, तीनौं नारी नाम।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ आवैं काम ॥ २१ ॥
इड़ा बाम कहि पिंगला, दक्षिन मन में जान।
हृदय रहत है सुषमना, ब्रह्म ग्रंथि ज्यौं मान ॥ २२ ॥

[1] यह पंक्ति रागमाला दोहा संख्या १७ से ली गई है।

इड़ादि लक्षण—

ता ऊपर जिन प्रान जो, चढ़ौ रहत है नित्त।
अध ऊरध कौं गत्ति है, ज्यौं नटवा रहै चित्त ॥ २३ ॥

ब्रह्म-ग्रंथि—

द्वै अंगुल आधार पर, ह्वै अंगुल युग नीच।
षड़ै सुनै स्वर जो कोऊ, अंगुल तेहि-तेहि बीच ॥ २४ ॥
सूछम सिखा जो अगिन की, ताहि रहत जो जान।
ता ऊपर नव अंगुली, चतुर रहै तोहि मान ॥ २५ ॥
ब्रह्म ग्रंथि कौं कह्यौ सब, सुर-मुनि कह्यौ निरंध।
तामैं अंगुल चार जो, तरी रहत है कंध ॥ २६ ॥

२—तान

शुद्ध तान विवेक—

षाड़व-औड़व भेद जब, सुद्ध मूर्छना होय।
उपजत षरज कि मूर्छना, सुद्ध तान कहि सोय ॥ २७ ॥
सकल सुरन तें जो छुटै, जोरि प ध नि सुर चार।
षरज ग्राम की मूर्छना, ताकौं लेहु विचार ॥ २८ ॥
षरज रिषभ गंधार जो, मध्यम पंचम जान।
धैवत और निषाद क़ौं, 'तानसेन' सु बखान ॥ २९ ॥
अर्चिक कहियैं एक स्वर, ग्रंथिक द्वै सुर जान।
स्वामिक कहौ सु त्रै स्वरैं, मंद्र सुर अंत बखान ॥ ३० ॥
मध्य हृदय में होत है, गरे होत ही आइ।
मुख तैं निकसत तार कौ, व्यौरौ स रि ग म पाइ ॥ ३१ ॥

सोरठा

स रि ग म प ध नि नाम, द्वितीय भेद यातैं कहत।
सुर तीनौं कौ काम, 'तानसेन' ये मत सुने ॥ ३२ ॥

ग्राम लक्षण— दोहा

स्वर समूह कौं ग्राम कहि, 'तानसेन' परवीन।
जाके आश्रय मूर्छना, रहत सदाँ लवलीन ॥ ३३ ॥
एक मूर्छना सौं मिलैं, षाडव इकइस तान।
सप्त स्वरन स रि ग म छुटे, या षाडव परिमान ॥ ३४ ॥

शुद्ध तान—

शुद्ध तान उनचास हैं, षाड़व की यह बान।
कह्यौ मतौ संगीत कौ, 'तानसेन' सुख मान ॥ ३५ ॥

औड़व लक्षण—

सप्त सुरति द्वै रिद्धि सम, येऊ उपजै ज्ञान।
षरज ग्राम औड़व वहै, इकइस वह परमान ॥ ३६ ॥
मध्यम ग्राम की मूर्छना, त्रय है षट प्रति हीन।
औड़व चौदह तान हैं, 'तानसेन परवीन ॥ ३७ ॥
तानैं औड़व की कहीं, इकइस चौदह जान।
'तानसेन' सो कहत हैं, कहि संगीत मत मान ॥ ३८ ॥
षाड़व औड़व दोउन की, होत चौरासी तान।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ अनेक प्रमान ॥ ३९ ॥

कूट तान—

असंपूर्न पूरन दोऊ, कह्यौ करम तैं हीन।
कह्यौ मूर्छना कूट जेहि, 'तानसेन' है लीन ॥ ४० ॥
पूरन सुर आरोपि जहाँ, पूरन कूट पुजाहिं।
'तानसेन' संगीत मत, सुर यह कही सराहि ॥ ४१ ॥
पंच हजार चालीस हैं, संपूरन की तान।
मत संगीत करिकै कहै, सब सूर कौ सो ग्यान ॥ ४२ ॥
एक-एक जो तान में, छप्पन-छप्पन तान।
कह्यौ मतौ संगीत यह, युक्तौ करिकै ग्यान ॥ ४३ ॥

दोय लाख व्यासी सहस, दोइसै अरु चालीस।
कूट तान परिमान यह, कह्यौ सुरन सौं ईस ॥ ४४ ॥

षाड़व संख्या—

कही सात सौ बीस है, षाडव की जो तान।
इन तानन में कह्यौ है, अड़तालिस परमान ॥ ४५ ॥
चौंतिस हज्जार पाँच सौ, साठि षाडव तान।
संख्या कहि संगीत मत, 'तानसेन' सुर जान ॥ ४६ ॥

औड़व भेद—

औड़व एक सौ बीस है, तान कह्यौ सो जान।
'तानसेन' संगीत मत, यह उक्तौ करि ग्यान ॥ ४७ ॥
चौ हजार औ आठ सौ, संख्या जानौ लोइ।
आदिहि सुर-मुनि यह भष्यौ, मति संगीत कौ होइ ॥ ४८ ॥

३—स्वर

स्वर अंतर—

सुर अंतर की तान ज्यौं, चौबिस कही बखान।
बत्तिस-बत्तिस एक में रहें, कूट तान लै जान ॥ ४९ ॥
ताकी संख्या कहत हौं, सात सौ अढ़तालीस।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है सुर-मुनि ईस ॥ ५० ॥
स्वामिक उपजत तान षट, एक-एक चौबीस।
ताकी संख्या ये कही, एक सौ चौआलीस ॥ ५१ ॥

ग्रंथिक—

जाती-जाती तान द्वै, सुर हैं सोरह तान।
इक-इक में संख्या कही, बत्तिस-बत्तिस मान ॥ ५२ ॥
अर्चिक-अर्चिक तान जो, एक में ताकौ सार।
'तानसेन' संख्याहि तें, वे करि राखत पार ॥ ५३ ॥

साधारण--

सुर साधारन चार हैं, जाति साधारन दोय।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है पंडित लोय॥ ५४ ॥
साधारन स्वर काकली, अंतर मध्यम जान।
'तानसेन' संगीत मत, चौथे षरजहि मान॥ ५५ ॥
निषाद दोइ श्रुति षरज की, गहत काकली होय।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है सुर-मुनि लोय॥ ५६ ॥
विविध सुर गहै गांधार जब, मध्यम ही की भाँति।
'तानसेन' संगीत मत, अंतर-अंतर जाति॥ ५७ ॥
लै निषाद श्रुति षरज की, षरज बचै ज्यौं अंत।
कह्यौ षरज साधारनहि, 'तानसेन' सुर जंत॥ ५८ ॥
साधारन मध्यम कछू, सूछम श्रुति है जाहि।
बहुरि असंग्रह होत है, 'तानसेन' जो ताहि॥ ५९ ॥
कह्यौ जाति साधारनहि, कह्यौ राग सम ग्यान।
'तानसेन' संगीत मत, पंडित करहिं बखान॥ ६० ॥
बादी संवादी कह्यौ, और बिवादी ग्यान।
'तानसेन' संगीत मत, अनुवादी हू बखान॥ ६१ ॥
वादी अनुवादीहि कहँ, वैवादी रिपु होय।
अनुवादी जो मित्र सम, जानि लेह नर लोइ॥ ६२ ॥
वाद करे तैं कह्यो है, वादी ताकौ नाम।
बराबरी संवादी है, जानौं आवै काम॥ ६३ ॥
अर्चिक के गावै सुरन, जब संपूरन होइ।
'तानसेन' संगीत मत, थिति स्थाई सोइ॥ ६४ ॥
अस्थाई आदिक कहौं, मिलि अवरोहि आरोहि।
संवादी मत 'तानसेन', इनकौ कहयौ गिरोह॥ ६५ ॥
गाये तैं इक ठौर जब, वरन चारि जो होत।
'तानसेन' संगीत मत, इन चारहु कौ गोत॥ ६६ ॥

अवरोह-आरोह—

अवरोही सुर बढ़त है, उतरत सुर आरोहि।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है बहु विधि जोहि॥ ६७॥

ग्राम भेद—

स्वर्ग लोक में ग्राम जो, प्रगट भये हैं तीन।
द्वै स्वर राख्यौ भूमि मे, एक सुर राख्यौ बीन॥ ६८॥
गंधार नाम ताकौ कह्यौ, सुर मुनि राख्यौ जाहि।
षरज ग्राम मध्यम कह्यौ, भूमि गावते ताहि॥ ६९॥
सुर समूह कौ ग्राम कहैं, मूर्छनादि जा संग।
'तानसेन' संगीत मत, जामैं उपजत रंग॥ ७०॥

४—राग

राग लक्षण—

जो धुनि सुनि सुर वरन कहँ, करुना होत विशेष।
जन चित हरन सुनिय कहैं, तान राग सुन शेष॥ ७१॥

राग अंग—

राग अंग जो भाषई, क्रिया अंग जो जान।
'तानसेन' संगीत मत, बहुरि ऊपजहि मान॥ ७२॥
राग अंग वाकों कह्यौ, छाया परै देखाय।
'तानसेन' संगीत मत, सुनहि सु स्रवनै भाय॥ ७३॥

भाषा अंग—

भाषा अंग वाकौं कह्यौ, जो गावै भाषाहि।
'तानसेन' जो सब कह्यौ, है संगीत मत भाहि॥ ७४॥

क्रिया अंग—

दै हुलास हर्षित कही, ये है क्रिया ज्यों अंग।
'तानसेन' संगीत मत, जा करि गावै संग॥ ७५॥

उपांग—

कछु-कछु छाया जो करै, कहियै ताहि उपंग।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जे इनके अंग॥ ७६॥

श्रुति विवेक—

तीव्रा अरु कामोदनी, मंद्रा जाहि विचारि।
छाँड़ौती कहि षरज जुत, 'तानसेन' श्रुति चारि॥ ७७॥
दयावंती अरु रंजनी, रतिका श्रुति हैं तीन।
रिषभ लगें जेतिक कहैं, तानसेन परवीन॥ ७८॥
रौद्री क्रोधा द्वै यहै, श्रुति गंधार की होय।
'तानसेन' संगीत मत, जानै गायन लोय॥ ७६॥
कह्यौ श्रुति जो बज्रिका, श्रुति प्रसारिनी जान।
प्रीति सुमार्जनि चार श्रति, मध्यम की यह मान॥ ८०॥
कही महंती रोहिनी, रंभा श्रुति हैं तीन।
ये तौ धैवत की कही, सुर-मुनि राखौ बीन॥ ८१॥
द्वै श्रुति उग्रा छोमिनी, लगी निषाद सो जान।
'तानसेन' संगीत मत, श्रुति कौ यह परमान॥ ८२॥

श्रुति लक्षण—

करत उचार जो होत है, सुच्छम कौ अनुमान।
'तानसेन' संगीत मत, श्रुति कौ यह परमान॥ ८३॥

मूर्छना विवेक—

उत्तर-मंद्रा रंजनि हु, उत्तरायिनी नाम।
सुद्ध षरज समलंकृता, जानौ आवै काम॥ ८४॥
कहियै मौरवी हर्षिका, सप्त मूर्छना होय।
ये तौ मध्यम ग्राम की, जानौं गायन लोय॥ ८५॥
सौवीरी अरु हरिनति, कौलोइनी ता नाम।
मधु मध्या अरु मारगी, जानौं आवै काम॥ ८६॥

चक्रवती अविरुंदता, कहीं मूर्छना सात।
षरज ग्राम सौं ये रहैं, जानौं धीर गवात ॥ ८७ ॥
नंदा कहौ विशाल अरु, सुमुखी चित्रा जान।
चित्रावति अरु सिष्य जो, ताकौ हित ज्यौं मान ॥ ८८ ॥
आलापा सोमूर्छना, ग्राम गंधार की लेख।
'तानसेन' यौं कथि कह्यौ, मत संगीत कौ देख ॥ ८९ ॥

मूर्छना लक्षण—

तेरह लच्छन कौ कह्यौ, जामैं होत प्रकार।
'तानसेन' संगीत मत, जानि लेहु यह सार ॥ ९० ॥
ग्रह अरु अंस जो न्यास है, मंद मध्य अरु तार।
अलप बहुरि मारग कह्यौ, अंतर है यह सार ॥ ९१ ॥
असंन्यास संन्यास है, न्यास कह्यौ विन्यास।
'तानसेन' संगीत मत, ये तेरह ही आस ॥ ९२ ॥
गावै जो उच्चार सौं, ग्रह सुर कहियै ताहि।
ता ऊपर विस्तार है, सोई अंस जिय पाहि ॥ ९३ ॥
असन्यास सुर तजनि पुनि, सन्यासन सुर जाय।
विन्यासै सुर जोरिवौ, 'तानसेन' उपजाय ॥ ९४ ॥
मध्य हृदय में होत है, गरैं होत है बुद्ध।
गनिय षरज जो तार है, 'तानसेन' कौ सुद्ध ॥ ९५ ॥
करि विस्तार पूरन कह्यौ, भाव सहित करि मानि।
द्वै सुर मध्यांतर कह्यौ, मारग गुनियै जानि ॥ ९६ ॥
करि विस्तार पूरन कह्यौ, न्यास लहत सुर जान।
'तानसेन' संगीत मत, जो जिय में पहिचान ॥ ९७ ॥
षरज रिषभ गंधार सुर, मध्यम पंचम जानि।
'तानसेन' धैवत कही, बहुरि निषादहि मानि ॥ ९८ ॥

अलंकार प्रस्तार—

सरि सरि गरि गरि गम गम, पम पम पध पध नी नी सा।
अर्थन के प्रस्तार में सो, सरिरि गमम पधध नीनीसा ॥ ६६ ॥

सप्त स्वर—

जानौं षरज मयूर तैं, चत्रिक रिषभहि मान।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो जिय में जान ॥ १०० ॥
सप्त सुरन व्यौरौ कह्यौ, स रि ग म प ध नि नाम।
द्वितिय भेद ज्यौं कह्यौ है, सुरवर्तिन कौ काम ॥ १०१ ॥
कंठ स्थान तैं षरज है, रिषभ सीस तैं जान।
नासिका तैं गंधार है, मध्यम उर तैं मान ॥ १०२ ॥
पंचम सुर है नाभि तैं, धैवत भाल स्थान।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ यह परमान ॥ १०३ ॥
कहे हैं सुर अस्थान जे, जेते निषाद स्थान।
'तानसेन' संगीत मत, इहै तान सो जान ॥ १०४ ॥
षरज गंधार जो सुर कह्यौ, तालु कंठ अस्थान।
कह्यौ है मत व्याकरन तें, 'तानसेन' सुभ गान ॥ १०५ ॥
धैवत निषाद हैं दसन तैं, ओठन मध्यम जान।
पंचम हू को कह्यौ है, मत व्याकरन कौ मान ॥ १०६ ॥
रिषभ सीस तें जानियै, करिकै देखौ मान।
'तानसेन' संगीत मत, सो जानौ परमान ॥ १०७ ॥

स्वर जाति—

षरज मध्यम पंचम कह्यौ, विप्र बरन जो होइ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है सुर-मुनि लोइ ॥ १०८ ॥
रिषभ धैवत क्षत्रिय कहे, 'तानसेन' सो भाँति।
कह्यौ निषाद गंधार जब, सुर हैं वैश्य सो जाति ॥ १०६ ॥
काकली है जू अंत सुर, यह सुर है जू शूद्र।
'तानसेन' एतौ कहै, मथि संगीत-समुद्र ॥ ११० ॥

छै प्रकार आलाप हैं, राग रूप कहि जान।
'तानसेन' जो कहत है, यह संगीत मत मान॥ १११॥

आलाप—

कंठ तारु रसना कछू, दंत सहित हैं चार।
अलापन के अस्थान हैं, 'तानसेन' सो धारि॥ ११२॥
अचल षरज मध्यम सुरहि, थाई कहियै जाहि।
आलापी सुर चाल सो, थिर ह्वै कढ़िता आहि॥ ११३॥
चौथे सुर आलापि कै, चौथे ही पर आय।
द्वितिय भेद रूपक कह्यौ, 'तानसेन' सो गाय॥ ११४॥
अर्ध दुगन के मध्य सुर, अर्धहि करत निवासु।
'तानसेन' संगीत मत, आलापक छप्पन जासु॥ ११५॥
द्वितीय षरज अलापिकै, फिर अस्थाई होइ।
'तानसेन' संगीत मत, अंतर जानहु सोइ॥ ११६॥
राग आलापहि रूपक, आलंविताई सो जान।
प्रतिग्रहनिका मंजनी, दुइ प्रकार सो मान॥ ११७॥
प्रतिग्रहनिका यह कही, जो विधान कौ गान।
'तानसेन' संगीत मत, जानहु अरथ सुजान॥ ११८॥
द्वै प्रकार है मंजनी, थाई रूपक मान।
'तानसेन' तासौं कह्यौ, है संगीत मत जान॥ ११९॥
जैसौ रूपक श्रोत्रि कौ, तैसौ गावै जान।
अस्थाई मंजनि कह्यौ, 'तानसेन' सु बखान॥ १२०॥

रूपक—

वह जो मान वादिवरन है, सुरन कियैं अस भाँति।
कह्यौ जो रूपक मंजनी, 'तानसेन' वह जाति॥ १२१॥
युक्ति सरस रस योग तैं, उपजे हैं सब राग।
मोह बढ़ै तिनके सुनें, उपजत है अनुराग॥ १२२॥

नृत्य समैं मुख पंच तैं, उपजै पायौ राग।
गिरिजा के मुख सौं छुट्यौ, भयौ राग बहु भाग ॥ १२३ ॥
प्रथमहि मुख जाती सुन्यौ, श्रीरागहि उपजाइ।
वामदेव मुख दूसरे, कह्यौ बसंत बनाइ ॥ १२४ ॥
तीजौ मुख सो अधर है, सो भैरौं की ठौर।
चौथौ मुख तत्पुरुष है, तातैं पंचम और ॥ १२५ ॥
मेघ राग प्रगटौ बहुरि, पंचम मुख ईसान।
नटनारायन छठे भयौ, गिरिजा मुखहि प्रमान ॥ १२६ ॥
एक समय पूंछन लगीं, पारवती सिव देव।
रागन की विधि सो कहौ, मोसौं कछु यह भेव ॥ १२७ ॥
समय कहौ अरु रितु कहौ, और रूप अनुहार।
होइ प्रसन्न मोसौं कहौ, जिय में दया विचार ॥ १२८ ॥
तब सिव जू लागे कहन, मंद-मंद मुसकाइ।
सुभ इस्त्री श्रीराग की, जो मुनि भेष गनाइ ॥ १२९ ॥
पहिलै कही विकास की, भूपाली पुनि होइ।
करनाटी बड़हंसिका, मालश्री अनि जोइ ॥ १३० ॥
पटमंजरी बसंतिका, ये छै पंचम तीय।
नित्तहि ताके संग रहैं, उपजावैं सुख जीय ॥ १३१ ॥
विलावल अरु भैरवी, मल्लारी ये ही भाय।
स्याम-गुर्जरी और हैं, बंगालीय गनाय ॥ १३२ ॥
मालसिरी सु घनासिरी, मेघ रागिनी अंत।
देसकार अरु पंचमा, भैरव ललित बसंत ॥ १३३ ॥
कौसिक बहुरौ गुनकरी, सांचेरी सुख भाइ।
देशी अरु पटमंजरी, बहुरि गुनकरी गाइ ॥ १३४ ॥
रामकली अरु सोरठी, बहुरि भैरवी जोइ।
वैराटी अरु टोड़िका, प्रथम पहर में होइ ॥ १३५ ॥

कामोदी कुंडाइका, नाग-सब्दिका गान।
देस संकराभरन सो, बहुरौ कहैं सुजान ॥ १३६ ॥
अब सुन तिसरे पहर की, तिनके करौं बखान।
मालव अरु श्रीराग पुनि, सब रागन कौ ज्ञान ॥ १३७ ॥
केदारौ करनाटियौ, आभीरी एहि दाइ।
सारंग पुनि सो देस है, औ कामोद गनाइ ॥ १३८ ॥
अर्ध रात्रि चौथे पहर, सोरठ कान्हर आइ।
खंभावति पुनि षरज की, जैजैवंती गाइ ॥ १३९ ॥
कलिंग सोहनी विदित निसा, कौसिक अति सुखदाइ।
'तानसेन' संगीत मत, समुझि खुसी है जाइ ॥ १४० ॥

५—वाद्य

ताल राग को मूल है, वाद्य ताल कौ अंग।
वाद्य ताल दोऊ मिलैं, नृत्यत उठत तरंग ॥ १४१ ॥
तत कौं पहलौ कहत हैं, वितत दूसरौ ठान।
तीजे घन, चौथे सिखर, 'तानसेन' परमान ॥ १४२ ॥
तार लगे सब साज हैं, सो तत ही तुम मान।
चरम मढ्यौ जाकौं मुखर, वितत सु कहैं बखान ॥ १४३ ॥
काँसि ताल के आदि लै, घन जिय जानहु मीत।
'तानसेन' संगीत रस, बाजत सिखर सुनीत ॥ १४४ ॥
बीना बीनक रबाब है, सुरमंडल सारंगि।
चारतार तंदूर पुनि, 'तानसेन' सु उपंग ॥ १४५ ॥
अमृत-कुंडली चंग औ, डमरू और अनेक।
'तानसेन' संगीत मत, जानैं बुद्धि विवेक ॥ १४६ ॥
मृदंग ढोलकी दुंदभी, दारा बंजरि जान।
चंग लोहरे अनेक हैं, 'तानसेन' उर मान ॥ १४७ ॥

काँसि ताल श्रौ झाँझ पुनि, कहे गुनी कठतार।
बाजत नीके 'तानसेन', यह घन समझ विचार ॥ १४८ ॥
बेनु बाँसुरी नाद है, सुरताई करताल।
तुरही नृसिहा सिखर हैं, श्रौर सुरचंग रसाल ॥ १४९ ॥

कवित्त

बीना बेनु करतार सारंगी रबाब श्राछौ,
उपंग हू तार सुरमंडली सुहाई है।
अमृत की कुंडली तमूरा टोली मृदंग,
दुंदभी ढफ खंजरी बनाई है ॥
झाँझ साज सिखर नरसिंघा मुरचंग तैसी,
तुरही नफीरी सुर बहुतै मन भाई है।
ताल के तरंगन सौं 'तानसेन' ये वाद्य,
सुर रंगी बहु गुनवारेन गाई है ॥१५०॥

दोहा

वाद्य भेद के नाम कहे, सुनि हो चतुर सुजान।
सिव कौ भाषित है सबै, मत संगीत प्रमान ॥ १५१ ॥
वाद्य भेद संछेप तैं, बरनन किये विचार।
ताल नाम बरनन करौं, जिय में निश्चय धार ॥ १५२ ॥

६—ताल

शिव श्रौ शक्ति संयोग तैं, प्रगट भये सब तार।
मारग देसी द्वै कहे, 'तानसेन' उर धार ॥ १५३ ॥
नृत्य समै में पाँच जे, उपजे मारग तार।
देसी गिरिजा नें कहे, 'तानसेन' निरधार ॥ १५४ ॥
रतनाकर संगीत मत, श्रतिहि विकट मति मान।
'तानसेन' यह भरत मत, श्रौर कहे हनुमान ॥ १५५ ॥

सोमेश्वर कलिनाथ मत, रागार्नव मत मान।
औरौ बहुत अनेक मत, 'तानसेन' परमान ।। १५६ ।।

ताल अंग—

प्रथम ताल अंग कहत हौं, जानहु चतुर सुजान।
'तानसेन' संगीत मत, सुर-मुनि कहे बखान ।। १५७ ।।
सप्त अंग सब तार के, भिन्न-भिन्न तुम जान।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो जिय में जान ।। १५८ ।।
प्रथम अनू, द्वितीय दुत, तृतीय कह्यौ दविराम।
चौथे लघु, विराम पंच, 'तानसेन' अभिराम ।। १५९ ।।
षष्ठम गुरु, सप्तम पुलित, ये सब तार के अंग।
'तानसेन' संगीत मत, गावत उचित तरंग ।। १६० ।।
लघु कौ चौथौ भाग है, ताकौ तुम अनु ठान।
'तानसेन' संगीत मत, द्वै दुत लघू प्रमान ।। १६१ ।।
छै लघु गुरु द्वै होत हैं, गुरु लघु पुलितहि जान।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो ग्रंथ प्रमान ।। १६२ ।।
दुत-दुत अनू विराम लघु औ गुरु पुलित विचार।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो उर में धार ।। १६३ ।।

ताल मात्रा—

तीतुर अनु कौं कहत हैं, दुतहि नकुल उच्चार।
बक जाती लघु कौं कहत, कोकिल गुरू विचार ।। १६४ ।।
अथ उतपति सब कहत हौं, मत संगीत विचार।
भिन्न-भिन्न बरनन करौं, 'तानसेन' परकार ।। १६५ ।।
पवन तें अनु उत्पन्न भौ, दुत उत्पन्न भयौ नीर।
'तानसेन' दविराम ही, प्रगटौ सलिल समीर ।। १६६ ।।
बड़वानल तें लघु भयौ, व्योम तें गुरु प्रगटाय।
पृथी पुलित उत्पन्न कहि, 'तानसेन' मन भाय ।। १६७ ।।

अब सब के स्वामी कहौं, मत संगीतहि मान ।
'तानसेन' यह भरत मत, जिय में नीके जान ।। १६८ ।।

मात्रा स्वामि—

अनु कौ ससि है देवता, दुत कौ महेस बखान ।
सिखी देवता दविराम है, 'तानसेन' यह जान ।। १६९ ।।
लघु की सिवा प्रमान है, दविरामैं गुरु ठान ।
गौरी सिव सुरु देवता, 'तानसेन' परमान ।। १७० ।।
गनपति पुलित कौ देव है, जानहु चतुर सुजान ।
'तानसेन' संगीत मत, ताकौ करत बखान ।। १७१ ।।
अनुदुत सूछ्म घात कर, परन लघू कर घात ।
हस्त भ्रमन गुरु घात है, द्वै कर पुलित समान ।। १७२ ।।

ताल स्वरूप—

अर्ध चंद्र आकार अनु, विंदू दुत ही लेख ।
लंबकार लघु होत है, मत संगीतहि देख ।। १७३ ।।
अर्ध वक्र गुरु होत है, पुलितहि शृंगाकार ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो जिय में धार ।। १७४ ।।

ताल भेद—

पंच ताल में देसीय, सो मुख तैं प्रगटाय ।
'तानसेन' संगीत मत, सब ही कह्यौ गिनाय ।। १७५ ।।
चच्चुट पहिलै कहत हैं, चाचपुटहि पुनि जान ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ ग्रंथ परमान ।। १७६ ।।
ताल द्विताल कह्यौ पुनि, त्रितिय चतुरथै होय ।
पंचम निसंकलील है, सिंहविक्रम कहियै सोय ।। १७७ ।।
रतिलीलहि सिंहलील है, कंदर्प वीरविक्राम ।
रंग श्रीरंग औ चर्चरी, 'तानसेन' सुख-धाम ।। १७८ ।।

प्रत्यंग यति लग्न कहि, हंसलीन गजलील।
बरनौं भिन्न-भिन्न कहि, 'तानसेन' सुन सील।। १७६ ।।
राजताल स्वर्नताल, सिंहविक्रीडित सो जान।
दरपन विश्रुत वर्नहि, 'तानसेन' परमान।। १८० ।।
जय बनमाली ताल है, हंसनाद सिंहनाद।
काक तुरंग लिलताल है, सरसलील है स्वाद।। १८१ ।।
सिंहनंदन त्रिभंग पुनि, रंभा भारगव मंठ।
... ... मुदित, 'तानसेन' कर कंठ।। १८२ ।।
कोकिलप्रिया निसारकी, राजविद्याधर जान।
'तानसेन' जयमंगला, विजयानंद बखान।। १८३ ।।
मल्लिकामोद क्रीड़ाविजय, मकरंद कीरत नाम।
श्रीकीर्ति अतिताल पुनि, 'तानसेन' अभिराम।। १८४ ।।
विजय बिंदुमाली द्रु मैं, नंदन मढ़ी कामंठ।
दीपकंठ की विषम पुनि, 'तानसेन' श्रीकंठ।। १८५ ।।
अभिनंदन अनंग पुनि, नांदी मल्ली ताल।
'तानसेन' पूरन कह्यौ, पुनि अखंड कंकाल।। १८६ ।।
विषम लघू सेखर कहैं, चतुर्धान द्वै काल।
कट्टक राका कुमुद पुनि, 'तानसेन' चतुस्ताल।। १८७ ।।
प्रताप-सेखर झपताल लहि, गजरूपा पुनि होय।
चतुर्मुखी रतितान्र है, मदनताल है सोय।। १८८ ।।
अतिमंठ वा प्रतिमंठ है, पार्वतीलोचन लोय।
लीलाकरन यति ललित है, 'तानसेन' है सोय।। १८६ ।।
रागबर्धन षटताल हंस, अंतरक्रीड़ा मान।
उत्सव विलोकित वर्नपति, 'तानसेन' सिंहज्ञान।। १६० ।।
करनसार साँचा उदै, चंदकला लय जोय।
रंक धद्र-ताल द्वंदकत, 'तानसेन' यह होय।। १६१ ।।

कुमुद कुविद कलधुनी पुनि, गौरीताल समेत ।
राजमृगांकताल है, मगनताल पुनि लेत ।। १६२ ।।
रामचंद्र प्रसिद्ध है, विपुला पूज मन मान ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो जिय में जान ।। १६३ ।।
इंद्रलोक कुंडलि कह्यौ, पतत कुंडलीकार ।
'तानसेन' संगीत यह, जिय में लेहु विचार ।। १६४ ।।
विद्युतलावनी तारिका, रूपनिकाम उपाय ।
'तानसेन' उद्धव पुनि, कनकमेरु चलवाय ।। १६५ ।।
कनकमेरु कौचक्र पुनि, चक्रमंठ उरुताल ।
संक संयोग चतुरस्त्र है, 'तानसेन' रससाल ।। १६६ ।।
विद्याधरमंठ त्रितिय है, चतुरमंठ श्रीविघ्नु ।
गदनारायन नर्तक, 'तानसेन' परधिघ्नु ।। १६७ ।।
मंठताल तालंक पुनि, सरसमंठ प्रतिमंठ ।
कीर्तमंठ रविमंठ कहि, 'तानसेन' हरिमंठ ।। १६८ ।।

सवैया

जनमंठ जैमंठ कहैं प्रियमंठ, श्रीमंठ बिसीरन राजिय आनों ।
रंग स्वान गीर्वान कल्यान कहे,कमला रवि सैल औ बांधव मानौं ।।
कलाप विचित्र मुद्रीत गंभीर, श्रीरंग सुधानक वर्नहि जानौं ।
संकीर्न कलिंग विलोकिय राजप,ये सब मंठ के नाम बखानौं ।१६६।

दोहा

इंद्रताल कूरमपती, कच्छपताल बखान ।
'तानसेन' कहै सरसुती, कंठाभरन प्रमान ।। २०० ।।
नारद सारद तुंबरू, किन्नरताल विचार ।
'तानसेन' या तरह कौं, कोऊ न पावै पार ।। २०१ ।।

कलावंत द्वादश ताल—

एक ताल द्वै ताल पुनि, त्रितीय चतुर्थ सो होय ।
अैवट अठताली कहैं, सुधिक ताल कहैं लोय ।। २०२ ।।

मठताली सो धमारि की, झप मद्धिमान थान ।
'तानसेन' बरनन करै, जानहु चतुर सुजान ।। २०३ ।।

गमक लक्षण—

कह्यौ गमक सुर कंद कौ, स्रवन चित्त सुख देत ।
मत संगीत कौ होत जब, 'तानसेन' करि लेत ।। २०४ ।।
डमरू धुनि सी होय लय, द्रुत चौथाई मान ।
तिरिय गमक सो कही है, 'तानसेन' श्रुति जान ।। २०५ ।।
अयौ अंस दुति होत जब, ताकौं लीजै जान ।
कही गमक अस्फुरित वह, 'तानसेन' विज्ञान ।। २०६ ।।
आधी दुति की सीघ्रता, पीत गमक जो होय ।
द्रुत के बेग जो कंप होइ, नील गमक है सोय ।। २०७ ।।
लघु के वेग जो कंप होइ, गमक अंदोलित जान ।
'तानसेन' यौं कहत है, मत संगीत कौ मान ।। २०८ ।।
क्रम तैं आगम सुर बरन, गति चित्रित यह आदि ।
'तानसेन' यौं कह्यौ है, हुलसित गमक सुहाहि ।। २०९ ।।
पुलित सभी जो कंप हैं, प्रालंवित सो नाम ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ आवै काम ।। २१० ।।
ह्रिद पै सुर उपजत इकौ, हिय हुंकार गंभीर ।
हुंकित गमक सो कही है, 'तानसेन' सुरवीर ।। २११ ।।
सुखमन तैं सुर होत जौं, मुदित गमक कहि जान ।
'तानसेन' यौं कहत है, यह संगीत मत मान ।। २१२ ।।
सकल गमक कौ भेद जो, एक ठौर जब गाय ।
निश्चित गमक सो जानियै, 'तानसेन' उपजाय ।। २१३ ।।

मार्ग ताल—

सिव के पायौ बदन गति, तभी भिन्न भये ताल ।
'तानसेन' संगीत मत, गावत अति ही रसाल ।। २१४ ।।

चच्पुट ताल—

प्रथम दोय गुरु पुनि लघू, रहै पुलित में जोय।
'तानसेन' चच्पुट कहै, गावै विरला कोय॥ २१५॥
प्रथम गुरू द्वै लघु पुनै, अंत गुरू जो होय।
'तानसेन' संगीत मत, चाचपुट कहै सोय॥ २१६॥
पुलित लघू द्वै गुरु पुनै, लघू पुलित पुनि होय।
षट सो पिता पुत्र कही, 'तानसेन' मत जोय॥ २१७॥
प्रथम पुलित त्रिगुरु कहै, वहै पुलित कौं जान।
संपकेष्टा कहत हैं, 'तानसेन' परमान॥ २१८॥

वेशी ताल—

लघु दुत लघु दो दुत लघू, त्रैदुत पुनि लघु होय।
'तानसेन' संगीत मत, ब्रह्मताल है सोय॥ २१९॥
द्वै दुत लघु दुत लघु पूनै, द्वै दुत त्री लघु होय।
अंतर मिलि हैं तहाँ पुनि, रुद्रताल कौ जोय॥ २२०॥
त्री दुत एक लघु द्वै दुतै, द्वै लघु द्वै दुत जोय।
विंध्यताल तासौं कहैं, बूझै विरला कोय॥ २२१॥
द्वै दुत द्वै लघु दुत पुनि, अंत लघू पुनि होय।
'तानसेन' संगीत मत, कच्छपतालहि जोय॥ २२२॥
दोय पुलित द्वै गुरू लघु, निसंकताल सो जोय।
'तानसेन' संगीत मत, बूझै विरला कोय॥ २२३॥
प्रथम दोय दुत होत हैं, अंत सगुरु ज्यों होय।
'तानसेन' दर्पन कहै, जानौ बुद्धि बिलोय॥ २२४॥
तीन गुरु लघु पुनि तहाँ, लघु गुरु पुलित प्रमान।
सिंहविक्रम कहात है, 'तानसेन' मन मान॥ २२५॥
द्वै दुत लघु द्वै द्वै गुरू, ताल कंदरप होय।
'तानसेन' संगीत मत, जानैं कवि गन लोय॥ २२६॥

प्रथम लघु दुत द्वै पुलित, अंत गुरू कौ लेष।
वीरविक्रम सो 'तानसेन', जानहु बुद्धि विशेष॥ २२७॥
प्रथम चार दुत होत हैं, गुरू एक है अंत।
रंगताल ताकौं कहैं, 'तनसेन' बुधिमंत॥ २२८॥
द्वै लघु पुनि गुरु लघु पुलित, ताल कहत श्रीरंग।
'तानसेन' जे चतुर नर, गावत उक्त तरंग॥ २२९॥
षोड़स दुत सब अंत लौं, एक-एक जब होय।
'तानसेन' चर्चरी कहैं, जानौ बुद्धि विलोय॥ २३०॥
गुरु-गुरु-गुरु जहाँ होत है, इक लघु बहुरी जान।
प्रत्यंगताल ताकौं कहै, 'तानसेन' परमान॥ २३१॥
पहिलें दुति बरनन करै, अंत लघू पुनि धार।
पत्तिलगन ताकौं कहैं, 'तानसेन' हि विचार॥ २३२॥
लघु-लघु-लघु-लघु होत है, अंत लघू विश्राम।
गजलीला ताकौं कहैं, 'तानसेन' अभिराम॥ २३३॥
द्वै गुरु पुनि लघु और पुलित, पुलतहि में अवसान।
रंग प्रदीप ताकौं कहैं, 'तानसेन' परमान॥ २३४॥
गुरू पुलित द्वै गुरू लघु, पुनि पुलितै उर धार।
राजताल तहाँ होत हैं, 'तानसेन' के तार॥ २३५॥
गुरु लघू द्वै दुति पुनी, अंत गुरू ज्यौं होय।
चतुरसुवरनी कहत हैं, 'तानसेन' उर जोय॥ २३६॥
गुरु लघु द्वै दुत-दुत कह्यौ, अंत पुलित पुनि जोय।
'तानसेन' जयताल कहि, सकै सो विरला कोय॥ २३७॥
चार दुत पुनि एक लघु, द्वै दुत गुरू बखान।
बनमाली ताकौं कहत, 'तानसेन' परमान॥ २३८॥
लघु पुलित द्वै दुत कहे, अंत पुलित ही लेख।
'तानसेन' संगीत मत, हंसनाद ही देख॥ २३९॥

एक लघू पुनि गुरू लघु, पुनि द्वै गुरु ही जान।
सिंहनाद ताकौं कहैं, 'तानसेन' परमान ।। २४० ।।
प्रथम द्वै द्रुत द्वै लघू, कुड्डुल सो ताल विचार।
'तानसेन' बरनन करै, लै हिरदे में धार ।। २४१ ।।
प्रथम द्रुत-द्रुत विराम पुनि, द्वै द्रुत अंत ज्यौं होय।
'तानसेन' संगीत मत, तुरंगलोल सो जोय ।। २४२ ।।
प्रथम दोय लघु चतुर्द्रुत, द्वै लघु अंत विचार।
सरमलील ताकौं कहै, 'तानसेन' निरधार ।। २४३ ।।
द्वै गुरु लघु पुलित लघु, गुरू द्रुरित है देख।
द्वै गुरु लघु पुलित पुनि, सिंहनंद तेहि लेख ।। २४४ ।।
प्रथम दोय लघु द्वि गुरू, तिरभंगी बतराय।
'तानसेन' संगीत मत, नीके गान कराय ।। २४५ ।।
द्वै गुरु द्वै लघु पुलित पुनि, रंगाभरन बखान।
'तानसेन' नव मात्र है, जानहु चतुर सुजान ।। २४६ ।।
दोय लघु पुनि गुरु कहे, चतुर लघु सो विराम।
'तानसेन' वामंठ कहै, सुनहु ग्रंथ परमान ।। २४७ ।।
प्रथम गुरु द्वै लघु पुनि, तीन लघु सो विराम।
मुद्रितमंठा कहत हैं, 'तानसेन' अभिराम ।। २४८ ।।
चार लघु अरु गुरु कहे, दोय लघु पुनि जान।
'तानसेन' मंठा कहै, जानहु चतुर सुजान ।। २४९ ।।
प्रथम लघु गुरु हैं तहाँ, द्वै द्रुत पुनहि विचार।
राजविद्याधर कहत हैं, 'तानसेन' निरधार ।। २५० ।।
दोय लघु पुनि एक गुरु, द्वै लघु एक गुरु होय।
जयमंगल ताकौं कहैं, 'तानसेन' सुर जोय ।। २५१ ।।
प्रथम दोय लघु चार द्रुत, मल्लकामोद बखान।
'तानसेन' संगीत मत, जानहु ग्रंथ प्रमान ।। २५२ ।।

आदि गुरु लघु कहत हैं, गुरु लघु गुरु पुनि जोय ।
'तानसेन' जयश्री कहै, महा बुद्धि सो बिलोय ॥ २५३ ॥
द्वै द्रुत द्वै लघु कहैं तेहि, मकरंद उरही धार ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ बुद्धि विचार ॥ २५४ ॥
आदि लघु पुलित गुरु, लघु पुलितहु पुनि धार ।
'तानसेन' कीर्तन कहै, मन में निरख विचार ॥ २५५ ॥
दोय लघु द्वै गुरु पुनि, श्रीकीरती बखान ।
'तानसेन' उर धारिकै, करहु कि याकौ ध्यान ॥ २५६ ॥
प्रथम पुलित पुनि गुरु कह्यौ, पुलित लघु त्यौं होय ।
विजयताल ताकौं कहैं, 'तानसेन' उर जोय ॥ २५७ ॥
आदि गुरु द्रुत चतुर पुनि, अंत गुरू ही लेख ।
'तानसेन' संगीत मत, विंदुमालि तेहि देख ॥ २५८ ॥
आदि द्वै लघु द्रुत कहौ, अंत द्रुतहि विराम ।
'तानसेन' मन मानि हौ, नाम कहत वाहि साम ॥ २५९ ॥
आदि लघु द्वै द्रुत पुनि, अंत पुलित परमान ।
नंदन ताकौं कहत हैं, 'तानसेन' मन मान ॥ २६० ॥
प्रथम दोय द्रुत द्वै लघु, द्वै गुरु अंतहि होय ।
'तानसेन' दीपक कहै, बूझै विरला कोय ॥ २६१ ॥
आदि गुरू लघु मानि पुनि, अंत गुरू ज्यौं होय ।
ठेकीताल ताकौं कहैं, 'तानसेन' है सोय ॥ २६२ ॥
आदि तीन द्रुत द्रुत विराम, चार द्रुत अंत विराम ।
विषमताल ताकौं कहैं, 'तानसेन' अभिराम ॥ २६३ ॥
एक लघु पुनि पुलित है, द्वै लघु पुलतहि होय ।
अनंगताल यह कहत है, 'तानसेन' उर सोय ॥ २६४ ॥
आदि लघू द्वै द्रुत कहे, गुरू अंत में जोय ।
नंद्रीताल सब कहैं तेहि, 'तानसेन' बे जोय ॥ २६५ ॥

चार लघू पुनि द्रुत है, अंत द्रुतहि सो विराम ।
मल्लताल संगीत मत, 'तानसेन' अभिराम ।। २६६ ।।
आदि चार द्रुत गुरू लघु, कहैं पूर्न कंकाल ।
'तानसेन' श्रवनन करै, अति ही रसिक रसाल ।। २६७ ।।
द्वै द्रुत द्वै गुरु कहे तैं, कहियत खंड कंकाल ।
'तानसेन' सुभ जानहीं, अंतहि माँहि रसाल ।। २६८ ।।
द्वै गुरु एक लघु होत हैं, सत कंकाल बखान ।
'तानसेन' संगीत मत, जानहु ग्रंथ प्रमान ।। २६९ ।।
एक लघु द्वै गुरु यह विषम, कहि कंकाल विचार ।
'तानसेन' संगीत मत, आनंद सुनत विसाल ।। २७० ।।
चार लघू एक गुरू कहो, लघु कंडुअ सो ताल ।
'तानसेन' संगीत मत, सबन करत प्रतिपाल ।। २७१ ।।
आदि लघू द्वै द्रुत कहे, लघू गुरू ज्यौं होय ।
कुमुदताल पुनि होत है, 'तानसेन' कहै सोय ।। २७२ ।।
तीन लघु जहाँ होत हैं, तीन गुरू पुनि भेख ।
कहत बसंतीताल यह, 'तानसेन' उर देख ।। २७३ ।।
द्वै लघु लघुसेखर कह्यौ, 'तानसेन' मन मान ।
अवप्रातायरव सो कह्यौ, जानहु चतुर सुजान ।। २७४ ।।
आदि पुलित द्रुत विराम हैं, लघु सो अंत विचार ।
सो प्रतापसेखर कह्यौ, 'तानसेन' मति धार ।। २७५ ।।
अदि द्रुत पुनि द्रुत विराम, अंत लघू परमान ।
'तानसेन' झपताल कहै, जानहु बुद्धि निधान ।। २७६ ।।
तीन गुरु और एक लघु, पुलित गुरु द्वै होय ।
अंत दोय द्रुत 'तानसेन', पार्वतीलोचन सोय ।। २७७ ।।
चार द्रुत करनपति, ललितहि करौ बखान ।
द्वै द्रुत पुनि लघु गुरु कहै, 'तानसेन' मन मान ।। २७८ ।।

द्वै लघु गुरु लघु पुनि गुरु, ललितप्रिया सो विचार।
'तानसेन' संगीत मत, जिय में निश्चय धार ॥ २७९ ॥
चतुर लघू द्वै गुरु जहाँ, द्वै लघु द्वै गुरु जोय।
जनकताल कहै 'तानसेन', जानत विरला कोय ॥ २८० ॥
द्वै द्रुत लघू पुलित हैं, श्रीनंदना है जान।
'तानसेन' संगीत मत, कहियत ग्रंथ प्रमान ॥ २८१ ॥
दोय द्रुत और लघु पुलित, वर्धनताल बखान।
'तानसेन' संगीत मत, जानहु चतुर सुजान ॥ २८२ ॥
षट द्रुत षंडताल है, चौ द्रुत अंबरक्रीड़।
लघु विराम है सो कहे, 'तानसेन' मत व्रीड़ ॥ २८३ ॥
आदि लघू त्रै द्रुत कहे, द्वै लघु बहुरो देख।
सारसताल सो होत है, 'तानसेन' उर लेख ॥ २८४ ॥

चच्पुट ताल लक्षण—

द्वै गुरु लघु चच्पुट कहे, सो जानौ सब तात।
षट कलाहि परसंग होइ,सिष्य मुख साध्यौ जात ॥ २८५ ॥
गुरू एक जुग लघु गुरू, बहुरि बाम मुख होत।
षट कलाहि पिय बसन है, चाचपुट ही उदोत ॥ २८६ ॥
तीन गुरू द्वै द्रुत कहे, सत्पुरुष ही तें होत।
षट मात्रा षट स्थान कहि, जानियै बुद्धि उदोत ॥ २८७ ॥
लघु द्रुत लघु द्वै द्रुत लघू, त्रै द्रुत लघु पुनि होय।
ब्रह्मताल गोपाल यह, मात्रा सप्त सुर कोय ॥ २८८ ॥
द्वै द्रुत लघु पुनि द्वै द्रुत, और तीन लघु होय।
गुरू अंत में होत है, रुद्रताल है सोय ॥ २८९ ॥
त्रै द्रुत एक लघु द्वै द्रुत, लघु एक द्रुत द्वै होय।
अंत लघू द्वै द्रुत लघु, एक द्रुत पुनि लघु होय ॥ २९० ॥

द्वै द्रुत द्वै लघु पुनि लघू, द्रुत बहुरौ लघु होय।
कहियै कच्छपताल ही, सांगीत मत सोय ।। २६१ ।।
दोय लघू बहुरौ कहे, तीन द्रुतहि जहाँ देख।
ताल मल्लिकामोद सो, 'तानसेन' मत लेख ।। २६२ ।।
लघु जुग ही कहियै जहाँ, तीन गुरू जहाँ होय।
विजयानंद कहत तेहि, 'तानसेन' सब कोय ।। २६३ ।।
गुरु लघु गुरु लघु होत जहाँ, अंतहि पुनि गुरु एक।
विजयश्री सो नाम है, है यह ताल विवेक ।। २६४ ।।
तीन द्रुत दविराम कहैं, सुनियै नायक गोपाल।
गुरू औ गुरु पुलित लघु, महाविषम यह ताल ।। २६५ ।।
दोय द्रुत और लघू द्रुत, तीन पुलित गुरु एक।
महानंद यह ताल कौं, जानहु चतुर विवेक ।। २६६ ।।
द्वै द्रुत माँहि सो एक गुरु, पुलितै तहाँ निहार।
ताल तहाँ कामोद कौ, 'तानसेन' हि विचार ।। २६७ ।।
आदि गुरू पुनि तीन द्रुत, लघु ही होत विराम।
जानहु झोवड़ताल सो, महा सुरंग अभिराम ।। २६८ ।।
द्रुत लघु द्रुत लघु द्रुत लघू, दीजे तहाँ विचार।
द्वै लघु द्रुत लघु द्वै द्रुत, लघु लीजै सो धार ।। २६६ ।।
एक द्रुत द्वै लघु द्वै द्रुत, लघु द्रुत लघु द्वै होय।
जातसेखरहि ताल यह, जानत विरला कोय ।। ३०० ।।
लघु गुरु द्वै लघु गुरु द्वै, द्रुत द्वै गुरु पुनि होय।
सिंहनाद सो ताल यह, जानै विरला कोय ।। ३०१ ।।
दोय द्रुत हैं और लघु, गुरू अंत को मान।
राजनारायन नाम कहौ, सात मात्रा सब जान ।। ३०२ ।।
द्वै लघु गुरु लघु जानियै, पुलित अंत श्रीनंद।
सप्त मात्रा पिंड है, कहियै सो नँदनंद ।। ३०३ ।।

चार लघू पुनि द्वै गुरू, छै लघु मात्रा होय।
दस मात्रा ताकी कही, चंपकताल है सोय ।। ३०४ ।।

भरतमतानुसारेण तालाध्याय—

तालाध्याय हौं कहत हौं, यौं बिचारिकै लेहु।
मात्रा सब जिय समुभिकै, ताल सोधिकै देहु ।। ३०५ ।।
लघु दुत लघु द्वै दुत लघू, तीन दुतहि लघु बीर।
सप्त मात्रा ब्रह्म की, सुनी रसिक रनधीर ।। ३०६ ।।
दोय लघू गुरु लघु अरु, पुलित कोकिलाताल।
आठ मात्रा हैं गहैं, गावत गीत रसाल ।। ३०७ ।।
द्वै लघु गुरु पुनि दुत जुहैं, राजविद्याधर होय।
पाँच मात्रा ताहि गिनि, बूझि लेउ सब कोय ।। ३०८ ।।
लघु गुरु गुरु लघु पुनि गुरू, दुत विराम में बोल।
ताहि कहत तुम जयश्री, गुनि जन कहत अमोल ।। ३०९ ।।
द्वै लघु द्वै गुरु द्वै लघू, श्रीकीरति इह नाम।
आठ मात्रा संगीत मत, रसिकन को यह धाम ।। ३१० ।।
आदि अंत गुरु जानियै, चार सो दुत हैं मध्य।
मात्रा सुर निज सोधिकै, विंदमाली ये बध्य ।। ३११ ।।
एक लघू द्वै दुत पुनि, एक पुलित नंदन जान।
पाँच मात्रा पिंड है, संगीत मत परमान ।। ३१२ ।।
द्वै लघु पाछे द्वै गुरू, दुत ही अंत बिराम।
सवातीन मात्रा कही, यह मुष्टिक है नाम ।। ३१३ ।।
दुत गुरु इक गुरू अंत दुत, कहौ उदीछन ताल।
चार मात्रा जानियै, अरु वयसंधी काल ।। ३१४ ।।
एक गुरु दो लघु पुनहि, अंत पुलित ज्यौं होय।
ताकौं कवि जन कहत हैं, चित्रमुखी सब कोय ।। ३१५ ।।

दोऊ द्रुत पुनि गुरु धरौ, तीन मात्रा धार।
कहत ताल यह मदन कौ, भरत संगीत बिचार॥ ३१६॥

द्रुत लघु पाछें पुलित कहि, लीलाताल बखान।
मात्रा साढ़े चार जो, रसिकन गन में जान॥ ३१७॥

चार द्रुत जामैं रहैं, कर्नताल यह जान।
रसिक संभु सब देत है, निस्चै मन में आन॥ ३१८॥

चार द्रुत एक विराम द्रुत, मात्रा साढ़े दोय।
कहत भरत संगीत मत, ताल गारुड़ी लोय॥ ३१६॥

दोय द्रुत लघु गुरु कहौं, लघु गुरु कहौं निदान।
राजनारायन नाम कहि, सात सो मात्रा जान॥ ३२०॥

द्वै लघु गुरु लघु गुरु लघू, ललित जु मात्रा आत।
आनौ रसिक संगीत मत, कानन राग सुहात॥ ३२१॥

एक गुरू द्वै लघू पुनि, पुलित एक श्रीनंद।
सात मात्रा पिंड है, राग सो आनंदकंद॥ ३२२॥

दोइ द्रुत एक पुलित कहि, वर्धन मात्रा चार।
भरत प्रसंगहि तें यहै, कहत हैं सब नर-नारि॥ ३२३॥

एक गुरू और एक पुलित, लघु एक गुरु पुनि होय।
अनंगताल ताकौं कहैं, चातुर कवि जन सोय॥ ३२४॥

दोय लघु द्रुत सात हैं, द्वै लघु पुनि ज्यौं होय।
नाम सो भीषमताल यह, जानत विरला कोय॥ ३२५॥

एक लघू एक पुलित जोइ, जानौं ताल अभंग।
चार मात्रा भरत मत, गनियै याके संग॥ ३२६॥

षट द्रुत है पुनि द्वै लघू, एक गुरू तुम जान।
षटतालहि ताकौं कहैं, मात्रा सात बखान॥ ३२७॥

प्रथम तीन गुरु धारिकै, तीन पुलित पुनि लेख।
मात्रा एही जानियै, चंदकला की रेख ॥ ३२८ ॥

चार द्रुत चार लघु पुलित, पंच सो यह जानीस।
रच्छाताल मन में धरै, रच्छक रहै निधीस ॥ ३२९ ॥

लघु के पाछै देय द्रुत, मात्रा कहियै दोय।
सिंहताल तेहि कहत हैं, जानत विरला कोय ॥ ३३० ॥

लघु के पाछैं तीन द्रुत, पुनि द्वै लघु ज्यौं अंत।
मात्रा साढ़े चार हैं, सारसताल कहंत ॥ ३३१ ॥

द्रुत विराम आदै लघू, मात्रा पौने दोय।
चतुर संगीतक कहत हैं, लुब्धताल है सोय ॥ ३३२ ॥

तीन लघु इक गुरु तीन लघु, द्वै गुरु चौ लघु जान।
एक लघु पुलित पंचमनि यौं, विष्नुताल परमान ॥ ३३३ ॥

लघु द्रुत गुरु पुनि चार लघु, त्रै द्रुत एक लघु जान।
रुद्रताल एकादस, सो जानौ चतुर सुजान ॥ ३३४ ॥

इति श्री तालाध्याय भरतमते कथिता सम्पूर्ण शुभमस्तु।
लिख्ये श्री लाल हटेसिंह, सावन बदि बुधवार, संवत् १८८८

राग-माला*

ॐ

दोहा

सुर-मुनि कों परनाम करि, सुगम करौं संगीत।
'तानसेन' बानी सरस, जान गान की प्रीत ॥ १ ॥
देख्यौ शिव मत भरत मत, हनूमान मत जोय।
कहै संगीत विचारि कै, 'तानसेन' मत सोइ ॥ २ ॥

संगीत लक्षण—

गीत, वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम संगीत।
'तानसेन' सु मतंग मुनि, भरत मते हो थीत ॥ ३ ॥

संगीत भेद—

द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जान।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसनु मान ॥ ४ ॥
गीत, वाद्य अरु नृत्य रस, साधारन गुन जोय।
'तानसेन' उपजै नहीं, सो संगीत न होय ॥ ५ ॥

१—नाद

नाद लक्षण—

द्वै प्रकार जो नाद है, राख्यौ सुर-मुनि जान।
'तानसेन' सो कह्यौ है, बहु विधि तिन्हैं बखान ॥ ६ ॥

नाद-भेद—

नाहत नाद जो मुक्ति है, आहत रंजक जान।
भौ भंजन मीयाँ प्रगट, नादहि कह्यौ बखान ॥ ७ ॥

* इस ग्रंथ के आरंभिक दोहे 'संगीत-सार' के दोहों से बहुत मिलते हुए हैं। तुलना के लिए देखिये पृ० ३१-३२

आहत अनाहत—

नाहत बाजत आपु ही, आहत दैव बजाइ ।
'तानसेन' संगीत मत, इन्ह के कहे सुभाइ ॥ ८ ॥
नाद अनाहत कौ सदाँ, सुर-मुनि करैं जु ध्यान ।
गुरु उपदेसैं मुक्ति दें, यह जानौं परमान ॥ ९ ॥
वायु-अगिन संयोग तैं, उपजत आहत नाद ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सुरन ब्रह्मादि ॥ १० ॥
जिव टारत है चित्त कौं, चित टारत है अग्नि ।
टारत अगिन जु वायु कौं, ब्रह्म ग्रंथि सौं मग्न ॥ ११ ॥
ततछन ऊरध कौं चलै, ब्रह्म ग्रंथि की वायु ।
सुच्छम धुनि ह्वै नाभि की, अंग मध्य पुष्टायु ॥ १२ ॥
होय पुष्ट जो सीस में, कृत्यम बहु मुख आइ ।
पंच स्थानन फिरत है, 'तानसेन' मुख भाइ ॥ १३ ॥
कही जु उतपति नाद की, सास्त्र रीति परमान ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौं चतुर सुजान ॥ १४ ॥
गीत, वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ आतमा नाद ।
'तानसेन' संगीत मत, जामैं उपजत स्वाद ॥ १५ ॥
तीनौं मत बस नाद कौं, कह्यौ सु मुनिन प्रमान ।
ताहि हिये महँ जानि निज, मीयाँ सरस सुजान ॥ १६ ॥

नाद शक्ति—

बरन बात व्यवहार में, मिलौ रहत है नाद ।
'तानसेन' सब जगत मय, और कहै सो बाद ॥ १७ ॥
नाद ज्ञान बरतत रहै, सारद के परसाद ।
केवल पसु जड़ नाग हू, कुँडलि भये सुन नाद ॥ १८ ॥
पसु सिसु अहि संतुष्ट भौ, सुनौ सब्द जिन नाद ।
'तानसेन' था नाद की, कही न जात मरजाद ॥ १९ ॥

नाद उदधि के पार कौं, केतौ करयौ उपाय ।
मज्जन के डर सारदा, तूँबो रही लगाय ॥ २० ॥

मतंग और विज्ञानेश्वर मत—

बीन वाद्य श्रुति ताल में, निपुन पुरुष है जोय ।
बिना परिश्रम जात है, मोक्ष पंथ महँ सोय ॥ २१ ॥

नाड़ी ज्ञान—

इड़ा पिंगला सुषमना, तीनौं नाड़ी नाम ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौं आवैं काम ॥ २२ ॥
इंगला वायव्या कही, दच्छिन पिंगला जान ।
मध्य रहत है सुषमना, ब्रह्म रंध्र लौं मान ॥ २३ ॥
ता ऊपर जो प्रान लौं, चढ़ौ रहत है नित्त ।
अध ऊरध कौं चलत है, ज्यौं नटुवा रहै मित्त ॥ २४ ॥
द्वै अंगुल आधार पै, अंगुल द्वै ही नीच ।
तप्त हेम के बरन सौ, अंगुल द्वै ही बीच ॥ २५ ॥
सूक्षम सिखा जो अगिन की, तहाँ रहत सो जान ।
ता ऊपर नव अंगुली, चक्र रहत सो मान ॥ २६ ॥
तासौं अंगुल चार रहि, ऊँचे देही कंध ।
ब्रह्म ग्रंथि ताकौं कहैं, सुरपति सब निर्द्वन्द ॥ २७ ॥

२—तान

स्वर—

षरज रिषभ गंधार अरु, मध्यम पंचम जान ।
धैवत और निषाद कौं, मीयाँ सरस बखान ॥ २८ ॥
आर्चिक कहियै एक सुर, गाथिक द्वै सुर जान ।
सामिक त्रै सुर, चार मिलि, सुर अंतरहि बखान ॥ २९ ॥

औडव कहियै पाँच सुर, षाडव षट सुर सोइ।
संपूरन मीयाँ कहैं, सप्त सुरन मिलि होइ॥ ३० ॥
मंद्र हृदय में होत हैं, गरैं होत है मध्य।
मूर्ध होत है तार जो, 'तानसेन' सो सध्य॥ ३१ ॥
सप्त सुरन कौ यौं कह्यौ, स रि ग म प ध नि नाम।
दुतिय भेद यातैं कह्यौ, सुर सु बर्तनी काम॥ ३२ ॥

ग्राम—

सुर समूह कौं ग्राम कहि, मीयाँ सरस प्रवीन।
जाके आश्रय मूर्छना, रहत सदाँ लयलीन॥ ३३ ॥

तान विवेक

षाडव औडव भेद तैं, सुद्ध मूर्छना होइ।
उपजै षरज की मूर्छना, सुद्ध तान कहि सोइ॥ ३४ ॥
सप्त सुरन तैं जो छुटैं, सरि पनि सुर परमान।
षरज ग्राम की मूर्छना, षाडव अठाइस तान॥ ३५ ॥
मध्य ग्राम की मूर्छना, षाडव इकइस तान।
सप्त सुरन सरगम छुटैं, मीयाँ सरस जवान॥ ३६ ॥
सुद्ध तान उनंचास हैं, षाडव की यहि जान।
कहौं सुमत संगीत कौं, 'तानसेन' मन मान॥ ३७ ॥

औडव तान—

सुश्रुति द्वै श्रुति सात तैं, छुटते उपजै तान।
षरज ग्राम औडव कह्यौ, यह जानौ परमान॥ ३८ ॥
मध्यम ग्राम की मूर्छना, तिन द्वै छुठि तैं हीन।
औड़व चौदह तान हैं, 'तानसेन' परवीन॥ ३९ ॥
तानैं औडव की कहीं, इकईस चौदह जान।
यह संगीत मत लै कह्यौ, मीयाँ सरस बखान॥ ४० ॥

षाडव औडव दुहुन तैं, होत चौरासी तान।
कह्यौ सो मत संगीत के, 'तानसेन' परमान ।। ४१ ।।

कूट तान—

असंपूरन पूरन दोऊ, होवैं क्रम तैं हीन।
कह्यौ मूर्छना कूट तेहि, मीयाँ सरस प्रवीन ।। ४२ ।।
पूर्नापूर्न की मूर्छना, कूट कह्यौ है जाहि।
मत संगीत मीयाँ सदा, संख्या कह्यौ सराहि ।। ४३ ।।
पाँच सहस चालीस हैं, संपूरन की तान।
जानौ मत संगीत के, करि हिय सुर कौ ज्ञान ।। ४४ ।।
एक-एक जो तान में, छप्पन-छप्पन तान।
कह्यौ है मत संगीत कौ, मीयाँ सरस सुजान ।। ४५ ।।
द्वै लख अस्सी सहस अरु, जुग सौ पुनि चालीस।
कूट तान परमान ये, कह्यौ सुर-मुनि ईस ।। ४६ ।।

षाडव तान—

कहीं सात सौ बीस जो, षाडव की हैं तान।
एक-एक जो तान में, अड़तालिस परिमान ।। ४७ ।।
चौंतीस हजार अरु पाँच सौ साठिक हैं परिमान।
संख्या कही संगीत मत, 'तानसेन' जस जान ।। ४८ ।।
औडव एक सौ बीस हैं, तान कहै यहि जान।
हर तानन में तान सो, चालिस-चालिस मान ।। ४९ ।।
चार हजार औ आठसौ, संख्या जानौं लोय।
'तानसेन' जो कह्यौ है, मत संगीत कौ सोइ ।। ५० ।।

स्वरांतर—

सुर अंतर की तान जो, चौबिस कही बखान।
बत्तिस-बत्तिस एक में, कूट तान लेहु जान ।। ५१ ।।

सामिक तान—

सामिक उपजत तान द्वै, सो हैं सोरह जान ।
एक-एक संख्या कही, बत्तिस-बत्तिस मान ।। ५२ ।।

गाथिक तान—

गाथिक उपजत तान षट, एक-एक में चौबीस ।
ताकी यह संख्या कही, एक सौ चौवालीस ।। ५३ ।।

आर्चिक तान—

आर्चिक तान जो एक है, तामैं कूट जो आठ ।
'तानसेन' संगीत मत, करि राख्यौ है पाठ ।। ५४ ।।

३—स्वर

साधारण स्वर—

सुर साधारन चार हैं, जाति साधारन दोइ ।
'तानसेन' संगीत मत, भाखत पंडित लोइ ।। ५५ ।।
साधारन सुर काकली, अंतर मध्यम जान ।
'तानसेन' संगीत मत, चौथे षरजहि मान ।। ५६ ।।
निषाद एक द्वै षरज की, गहे तें काकली होइ ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सुरन मन लोइ ।। ५७ ।।
विवि श्रुति गहै गंधार जब,मध्यम की वह भाँति ।
'तानसेन' संगीत मत, अंतर की है जाति ।। ५८ ।।
द्वै निषाद श्रुति षरज की,रिषभ बच्यौ जो अंत ।
कह्यौ षरज साधारनहि, 'तानसेन' रस संत ।। ५९ ।।
साधारन मध्यम कह्यौ, सुच्छम सुर ह्वै जाय ।
चिकुर अग्र रस होत है, 'तानसेन' जू ताहि ।। ६० ।।
कह्यौ जाति साधारनहि, करै राग सम गान ।
'तानसेन' संगीत मत, पंडित करै बखान ।। ६१ ।।

बादी-संबादी स्वर-

बादी-संबादी कह्यौ, बिवादी ज्ञान सो देखि ।
'तानसेन' संगीत मत, अनुवादी कौं लेख ॥ ६२ ॥
बाद करै ताकौं कहैं, बादी ताकौ नाम ।
बराबरी संबादि है, जानौ आवै काम ॥ ६३ ॥

स्वर के चार वर्ण—

अस्थाई जो आदि है, आरोही अवरोह ।
संचारी मीयाँ सरस, इनकौ कह्यौ गिरोह ॥ ६४ ॥
सुस्थिर ह्वै गावै सुरन, सब संपूरन होय ।
'तानसेन' संगीत मत, विधि अस्थाई सोय ॥ ६५ ॥
गाये तैं इकठौर सब, चरन चार जब होत ।
'तानसेन' संगीत मत, संचारी यह गोत ॥ ६६ ॥
आरोही सुर चढतु है, उतरत सुर अवरोहि ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है बहु विधि जोहि ॥ ६७ ॥

३ ग्राम—

स्वर्ग लोक में ग्राम जो, प्रगट भये हैं तीन ।
द्वै तेहि उतरे अवनि में, एक सुर राख्यौ बीन ॥ ६८ ॥
गंधारी ताकौं कह्यौ, सुर-मुनि राख्यौ चाहि ।
षरज मध्यम जो नाम है, भुव में गावत ताहि ॥ ६९ ॥
स्वर समूह जो ग्राम हैं, मूर्छना है ता संग ।
'तानसेन' संगीत मत, तामैं उपजत रंग ॥ ७० ॥

राग—

जो धुनि सुर अरु बरन सौं, कबहू होत विसेष ।
'तानसेन' निज चित हरन, सोई राग सम सेष ॥ ७१ ॥

राग के ४ अंग—

रागांग भाषांग अरु बहुरि, क्रिया अंग सो जान ।
'तानसेन' संगीत मत, बहुरि उपांगहि मान ।। ७२ ।।
राग-अंग तासौं कहै, छाया परै दिखाय ।
'तानसेन' तेहि सुने तें, बढ़त सदाँ चित चाय ।। ७३ ।।
भाषा-अंग तासौं कहैं, गावै भाषा छाँहि ।
'तानसेन' मत जो कह्यौ, इह संगीत के माँहि ।। ७४ ।।
दया हुलास तेहि होत है, सो क्रियांग जिय जान ।
'तानसेन' संगीत मत, बहु विधि कह्यौ बखान ।। ७५ ।।
कछुकै छाया जो करै, सो उपांग जिय लेख ।
मीयाँ सरस बिचार यह, कह्यौ तीन मत देखि ।। ७६ ।।

श्रुति—

तीव्रा अरु कामोदनी, मंद्रा जियहि विचार ।
छंदोवर्ति मियाँ कहैं, षरज श्रुती ये चार ।। ७७ ।।
दयावती अरु रंजनी, रतिका श्रुति हैं तीन ।
रिषभ लगी जोरति रहै, 'तानसेन' परबीन ।। ७८ ।।
रौद्री क्रोधा दोय हैं, श्रुति गंधार की होय ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ गायन लोय ।। ७९ ।।
कही हैं द्वै श्रुति वर्तिका, अरु प्रसारिनी जान ।
प्रीति मार्जिनी चार श्रुति, मध्यम की ये मान ।। ८० ।।
छिति रिक्ता संदीपनी, अरु लापिका सो जान ।
पंचम की श्रुति चार हैं, ये संगीत मत मान ।। ८१ ।।
कहियै मंदति रोहिनी, रम्या श्रुति हैं तीन ।
ये धैवत की कही हैं, मीयाँ सरस प्रबीन ।। ८२ ।।
द्वै श्रुति उग्रा छोभिनी, लगीं निषाद सो जान ।
कहीं जु श्रुति मीयाँ सरस, यह संगीत मत मान ।। ८३ ।।

करत उचार जो होत धुनि, सूच्छम के अनुमान ।
'तानसेन' संगीत मत, श्रुति कौ यह परमान ।। ८४ ।।

मूर्छना—

रंजनी अरु उत्तरायनी, उत्तरुन्मदा नाम ।
सुद्ध षरज समलंकृता, जानौ आवै काम ।। ८५ ।।
चक्रवती अभिरुंदता, कहीं मूर्छना सात ।
षरज ग्राम सौं लगी हैं, जानौं दीरघ बात ।। ८६ ।।
सौवीरी अरु हरिनती, कौलोयनि ता नाम ।
मधु मध्या अरु मारगी, जानौ आवै काम ।। ८७ ।।
कही पौरवी हर्षिका, सप्त मूर्छना होइ ।
एती मध्यम ग्राम की, जानौं गायन लोइ ।। ८८ ।।
नंदा कही विसाल अरु, सुमुखी चित्रा जान ।
चित्रावती शिष्या कही, ताकौ हित सौं मान ।। ८९ ।।
आलापा सो मूर्छना, ग्राम गंधार की लेख ।
'तानसेन' सो कह्यौ है, मत संगीत कौ देख ।। ९० ।।

गान विद्या के १३ लक्षण—

तेरह लक्षन कहे हैं, जामैं होत प्रकार ।
'तानसेन' संगीत मत, जान लेहु यह सार ।। ९१ ।।
ग्रह अरु अंस जो न्यास है, मंद्र मध्य अरु तार ।
अलप बहुरि मारग कह्यौ, अंतर है यह सार ।। ९२ ।।
असन्यास सन्यास हैं, और जो है विन्यास ।
'तानसेन' संगीत मत, कृत लक्षन सो न्यास ।। ९३ ।।
गावैं जो उच्चार सुर, गृह सुर कहियै ताहि ।
ता ऊपर विस्तार है, सोई अंस जो आहि ।। ९४ ।।
असन्यास सुर तजनि है, संन्यासन सुर जाइ ।
विन्यासन सुर जोरिवौ, मीयाँ सुर सन गाइ ।। ९५ ।।

मंद्र हृदय में होत है, गरें होत है मध्य ।
द्वितीय षरज जो तार है, 'तानसेन' करि सध्य ॥ ९६ ॥

करि विस्तार पूरन करै, न्यास वहै सुर जान ।
'तानसेन' संगीत मत, सो जिय में पहिचान ॥ ९७ ॥

अल्प जो थोरौ जानियै, बहुत-बहुत करि मान ।
विविध मध्य अंतर कह्यौ, मारग मग जिय जान ॥ ९८ ॥

सप्त स्वर—

षरज रिषभ गंधार अरु, मध्यम पंचम जान ।
धैवत मीयाँ कहत है, बहुरि निषादहि मान ॥ ९९ ॥

सप्त सुरन के कहत हैं, स रि ग म प ध नि नाम ।
द्वितिय भेद यातें कह्यौ, सुर आवर्तन काम ॥ १०० ॥

अलंकार प्रस्तार—

सासा रेरे गग मम पप धध निनि सासा ।
सासा निनि धध पप मम गग रेरे सासा ॥ १०१ ॥

स्वर उत्पत्ति—

जानौ षरज मयूर तें, चातक रिषभहि मान ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ जो जिय में जान ॥ १०२ ॥

अजा मुखहि गंधार है, क्रौंच तें मध्यम होय ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सुरन मुनि लोय ॥ १०३ ॥

पिक तें पंचम होत है, धैवत दादुर भाख ।
'तानसेन' संगीत के, मते कह्यौ सो राख ॥ १०४ ॥

गज तें कह्यौ निषाद सुर, आंकुस लगते होइ ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ बुध जन लोइ ॥ १०५ ॥

स्वर स्थान—

षरज कंठ स्थान है, रिषभ सीस तें जान।
नासिका तें गंधार है, मध्यम उर तें मान॥ १०६ ॥
पंचम सुर गर सीस तें, धैवत भाल स्थान।
'तानसेन' संगीत मत, यहि जानौ परमान॥ १०७ ॥

व्याकरण मत—

षरज गंधार जो सुर कहे, तालु कंठ स्थान।
कह्यौ जो मत यह व्याकरन, मीयाँ सरस सुजान॥ १०८ ॥
धैवत निषाद है दरस तें, अधर तें मध्यम जान।
पंचम हू कौ कह्यौ यह, बूझि व्याकरन मान॥ १०९ ॥
रिषभ सीस तें जानियै, करिकै देखौ ज्ञान।
'तानसेन' जु कह्यौ है, मत व्याकरन सुजान॥ ११० ॥

स्वर जाति—

षरज मध्यम पंचम कह्यौ, विप्र बरन सो होय।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सुरनि मुनि लोय॥ १११ ॥
रिषभ धैवत क्षत्री कहे, मीयाँ सरस सु भाँति।
कहे निषाद गंधार जो, सो सुर वैश्य हैं जाति॥ ११२ ॥
जानौं काकिल अंतरहि, ये सुर दोऊ सूद्र।
'तानसेन' मत सो कह्यौ, देखि संगीत-समुद्र॥ ११३ ॥

४ – राग

राग निरूपण—

षरज प्रथम सुर मेघ पर, आनि होत है लीन।
'तानसेन' संगीत मत, जानि सु लेहु प्रबीन॥ ११४ ॥
रिषभ दौरि सारंग थल, लसत सरस आरूढ़।
'तानसेन' संगीत मत, जानि लेहु सो गूढ़॥ ११५ ॥

गांधार गौड़ सारंग सो, आन करत रस रीति।
'तानसेन' संगीत मत, जानि लेहु करि प्रीति ॥ ११६ ॥
मध्यम सुर आसावरी, मिलत आनि बड़ भाग।
'तानसेन' संगीत मत, जामैं अवर न लाग ॥ ११७ ॥
पंचम सौं पंचम मिलत, तीनौं मत परमान।
'तानसेन' संगीत मत, जानौं चतुर सुजान ॥ ११८ ॥
धैवत धुर मधि ही चढ़्यौ, करत रहत आनंद।
'तानसेन' संगीत मत, जानि लेहु बिनु द्वंद ॥ ११९ ॥
निषाद बनत है षरज पर, जानौ गायन लोय।
'तानसेन' संगीत मत, सप्त राग सुर सोय ॥ १२० ॥

आलाप—

द्वै प्रकार आलाप हू, राग रूप कहि जान।
मींड़ सरस सो कह्यौ है, मत संगीत कौ मान ॥ १२१ ॥

कटिता रूपक छुप्पना, अंतर सुर हैं चार।
आलापन अस्थान पै, 'तानसेन' जिय सार ॥ १२२ ॥

षरज दोय के मध्य सुर, ऊर्ध जो कहियै ताहि।
अर्धालापि सुर चालि सो, थिर दियैं कटिता आहि ॥ १२३ ॥

चौथौ सुर आलापि कै, चौथे ही पर सोय।
द्वितीय भेद रूपक कह्यौ, 'तानसेन' सो होय ॥ १२४ ॥

ऊर्ध दुगुन के मध्य सुर, अर्धहि करत निवासु।
'तानसेन' संगीत मत, छुप्पन जानहु तासु ॥ १२५ ॥

द्वितीय षरज आलापि कैं, फिर अस्थाई होय।
'तानसेन' संगीत मत, अंतर जानौं सोय ॥ १२६ ॥

राग वरन अरु ताल सौं, रूप अलापहि जान।
प्रतिग्रहनिका मंजनी, द्वै प्रकार सो मान ॥ १२७ ॥

प्रतिग्रहनिका वह कही, विधि विधान करै गान ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौं चतुर सुजान ।। १२८ ।।
द्वै प्रकार है मंजनी, स्थाई रूपक मान ।
कह्यौ है मीयाँ सरस मत, यह संगीत जिय जान ।। १२९ ।।
वहु जो मान बरनत रहै, सुरन की औरै भाँति ।
कह्यौ है रूपकमंजनी, 'तानसेन' गुन काँति ।। १३० ।।
ताल बरन तुक राग तें, निर्मित कह्यौ है ताहि ।
बिना ताल तुक जानियै, सोई अनिर्मित आहि ।। १३१ ।।

गमक—

तिरै स्फुरित जो कंपितनि, लय आंदोलित पाहि ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ है जानौ ताहि ।। १३२ ।।
प्रावित हुंपिक मुद्रिका. नासिक मिश्रित मान ।
'तानसेन' संगीत मत, कह्यौ सो जी में जान ।। १३३ ।।
गमक नाम पंद्रह कहे, करै जो ताकौ स्वेद ।
'तानसेन' संगीत मत, समझौ याकौ भेद ।। १३४ ।।
कह्यौ गमक सुर कंप कौं, श्रवन चित्त सुख देत ।
मत संगीत के होत तब, 'तानसेन' करि लेत ।। १३५ ।।
डमरू धुनि सी कंप द्वै, द्रुत चौथाई मान ।
तिरै गमक सो कही है, मीयाँ सरस सुजान ।। १३६ ।।
त्रितिय अंस द्रुत कौ जबैं, होत शीघ्रता जान ।
कह्यौ स्फुरित वह गमक है, मीयाँ सरस बखान ।। १३७ ।।
आधे द्रुत अति शीघ्रता, कंपित गमक जो होय ।
द्रुत के वेग जो कंप है, निमिलक कहियै सोय ।। १३८ ।।
लघु के बेग जो कंप है, गमक आंदोलित जान ।
'तानसेन' जो कह्यौ यह, मत संगीत कौ मान ।। १३९ ।।

बहु भाँतिन सुर कंप है, अतिहि बेग जब गाय ।
कह्यौ गमक मिश्रितक है, मीयाँ सरस सुभाय ।। १४० ।।
त्रै स्थान लौं सघन सुर, अतिहि शीघ्रता होत ।
मीयाँ सरस त्रिभिन्न सो, गमक कही यह गोत ।। १४१ ।।
कोमल कंठ में कंप जो, सुरन तें उपजत होय ।
ग्रंथिल गमक सो कही है, जानैं गायन लोय ।। १४२ ।।
आदि के सुर गुंजाय कैं, अग्रिम सुरन कौं लेय ।
पहिलै सुरहि जगाय कैं, कुरुल गमक कहि देय ।। १४३ ।।
क्रम तें आगै सुरन लै, विकृत ह्वै हिय लाय ।
गमक उल्लासी कही है, मीयाँ सरस सुभाय ।। १४४ ।।
पुलित समीप जो कंप ह्वै, प्लावित गमक सो नाम ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौं आवै काम ।। १४५ ।।
हृदय तें सुर जो उपजि कै, होत हुंकार गंभीर ।
हुंपति गमक सो कही है, मीयाँ सरस सुधीर ।। १४६ ।।
मुख मूंदे सुर होत जो, मुद्रित गमकहि जान ।
'तानसेन' जो कह्यौ यह, मत संगीत कौ मान ।। १४७ ।।
कह्यौ सुरन की चाल सौं, नासिक गमकहि लेख ।
'तानसेन' संगीत मत, बहु भाँतिन सौं देख ।। १४८ ।।
सकल गमक के भेद सो, एक ठौर जब होय ।
गमक वहै मिश्रित कही, जानौ गायन लोय ।। १४९ ।।

५—गान

गान विद्या के गुण—

मधुर स्निग्ध गंभीर मृदु, कांति रिक्त पुष्टाम ।
अनगन धुनि गायननि के, 'तानसेन' परिनाम ।। १५० ।।

गान विद्या के दोष—

रुक्ष अनरस कर्कस विरस, विकृत स्थाई-भ्रष्ट।
गिरै जो गायन स्थान तैं, औगुन कहे जु अष्ट॥ १५१ ॥
संदिष्टी उद्भृष्ट अरु, सीत्कारि भीत होय।
संकित कंपि कराल जो, औगुन गायन लोय॥ १५२ ॥
कपिल काक बेताल अरु, कूर्म उदंड जो घोष।
झुंबक तुंबक बिकारित, अस्फुट गायन दोष॥ १५३ ॥
निमिलक कह्यौ प्रसारि सो, विरस अपसुरौ जान।
अब्दक अरु नासिक मिलै, दोष हिये में मान॥ १५४ ॥
जन संधान जो कह्यौ है, स्थान भ्रष्ट इहि भाँति।
'तानसेन' संगीत मत, होत ये अवगुन जाति॥ १५५ ॥
दसन दाबि गावै जबहि, दोष दंष्ट सो होय।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ गायन लोय॥ १५६ ॥
विरस गाय सुर चढ़त है, सो उद्भृष्ट है दोष।
'तानसेन' सो हँसि कह्यौ, जानै मन कौ चोष॥ १५७ ॥
बार-बार सी-सी करै, गावत गायन लोग।
कहौ सीत्कारी वहै, महादोष यह जोग॥ १५८ ॥
गावै नीचे नयन कर, भय तैं जानौ भीत।
संकित तासौं कहत है, वेग गावै जो गीत॥ १५९ ॥
गैवे में जु सुभाव तैं, काँपत अतिहि सरीर।
कह्यौ जो कंपित दोष वह, नाँहिन हीयें धीर॥ १६० ॥
मुख पसारि गावै जबहि, कहियत दोष कराल।
घटि बढ़ि श्रुति सुर गाइयै, कपिल दोष ततकाल॥ १६१ ॥
कौआ कौ सौ सब्द जो, गायन गायें होइ।
कह्यौ है मत संगीत के, काक दोष है सोइ॥ १६२ ॥

ताल चूकि गावै जबै, सोई दोष बेताल ।
मूँड़ काँधे धरि गावही, कूरम दोष जंजाल ॥ १६३ ॥
बकरा की सी धुनि लियें, गायन गावत होय ।
दोष सो अब्दक कह्यौ है, जानौ गायन लोय ॥ १६४ ॥
भाल बदन अरु गरे में, उठि आवत सिर होइ ।
दोष सो उद्भिद कह्यौ है, जानौं गायन लोय ॥ १६५ ॥
लौकी जैसी होत त्यौं, गल फूलै दुहुँ ओर ।
दोष तुंबकी कह्यौ है, जानौ गायन थोर ॥ १६६ ॥
गावत सिगरौ गल फुलै, फूल दोष सो जान ।
गावै टेढ़ी ग्रीव करि, चक्री दोषहि मान ॥ १६७ ॥
कहौ प्रसारी दोष यह, गावै अंग पसार ।
अपुनौं जानौ हीय में, मत संगीत विचार ॥ १६८ ॥
गावत में जो बरन सब, प्रगट होत नहिं जाहि ।
सोई दोष अव्यक्त है, जानि लेहु सब ताहि ॥ १६९ ॥
गायन गावै नाक जब, लगत दोष यह जान ।
अनुनासिकी सो दोष है, कह्यौ संगीत बखान ॥ १७० ॥
गिरै गान स्थान तें, यह जानौ जिय लोय ।
स्थान-भ्रष्ट यह दोष है, मत संगीत के होय ॥ १७१ ॥
गाते वक्त न चेत तन, सोई अन-संधान ।
दोष कह्यौ संगीत, मत, जानौ यह परमान ॥ १७२ ॥
गावै राग मिलाय कै, मिश्रित दोष सो होय ।
'तानसेन' संगीत मत, जानौ गायन लोय ॥ १७३ ॥

पंच गायक—

शिक्षाकारि अनुकारि पुनि, रसिक अनुरंजिक जान ।
भावुक मीयाँ सरस कहि, गायन पंच प्रमान ॥ १७४ ॥

कवि गायन गुन में निपुन, सोई शिक्षाकारि।
सिखै जथारथ सिद्ध ह्वै, सो कहियै अनुकारि॥ १७५॥
आपुहि गावत आपुही, रीझत आपुहि मान।
रसिक गायक तासौं कह्यौ, 'तानसेन' जिय जान॥ १७६॥
रंजत श्रवन जो सबनि के, रंजक गायन जान।
'तानसेन' संगीत मत, याकौं रंजक मान॥ १७७॥
गावै भाव बताइ कैं, जामैं यह गुन होइ।
'तानसेन' संगीत मत, भावुक गायक सोइ॥ १७८॥

गान भेद—

एकल गायन एक है, जुगलक द्वै कौं जान।
गावै बहुतन संग लै, वृंद गायन सो मान॥ १७९॥
गुन विद्या में निपुन हैं, तासौं सीखौ होय।
सकल दोष तें रहित जो, उत्तम गायन सोय॥ १८०॥
गुन द्वै चार तें हीन है, दोष रहित सो जान।
मध्यम गायन कह्यौ है, मत संगीत कौ मान॥ १८१॥
जामैं एकै गुन रहत, मिले रहत सब दोष।
अधम गायन तासौं कह्यौ, धरैं रहत सब रोष॥ १८२॥
पहिली तुक उदग्राह है, द्वितीय मिलापक आहि।
ध्रुवक जानि लेहु तीसरी, चौथी भोग सराहि॥ १८३॥
बरन समूह जो मात्र है, समूह कह्यौ है जाहि।
'तानसेन' संगीत मत, चित में राखौ चाहि॥ १८४॥
धातु करन कौं कहत हैं, राखौ जिय में जान।
होत संगीत के मत इहै, 'तानसेन' कृत मान॥ १८५॥
ध्रुवा भोग के मध्य तुक, अंतर कहियै जाहि।
'तानसेन' संगीत मत, पैरी कहियै ताहि॥ १८६॥
उदग्राह मिलापक ध्रुवक अरु, अंतर कहियै भोग।
राखी मीयाँ सरस करि, जहाँ ही जाकौ जोग॥ १८७॥

६—काव्य

कवि-भेद—

सब गुन ,जामैं जुक्त हैं, उत्तम कवि है सोय।
जानें धातु कौं मात्रनहि, मध्यम कवि सो होय॥ १८८॥
मात्रा धरै जो सोधि कैं, अमिल धातु नहीं राखि।
कह्यौ है मत संगीत के,अधम सो कवि यह भाखि॥ १८९॥

प्रबंध गीताध्याय—

धातु अंग तें जुक्त ह्वै, जानौ ताहि निबंध।
धातु अंग जामैं नहीं, सो कहियै अनिबंध॥ १९०॥
प्रबंध वस्तु अरु गीत है, रूप सहित ये चार।
चार नाम परिबंध के, कहे संगीत विचार॥ १९१॥
चतुर्धातु त्रैधातु षट, ताकौं कहत प्रबंध।
'तानसेन' संगीत मत, बिनु जानै है अंध॥ १९२॥
धातु अंग परिबंध के, जानौं चार प्रकार।
कह्यौ जो मत संगीत के, यह परिबंध प्रकार॥ १९३॥
तीन पद दोऊ नेत्र हैं, पाठ विरुद विधि पानि।
ताल औ दो सुर उचार है, तन प्रबंध तेहि मानि॥ १९४॥
तीन कह्यौ आलाप कौं, पद है जामैं अर्थ।
पाठ पखावज बिरुद गुन, बिन जानेहि अनर्थ॥ १९५॥
चंचपुट तालहि आदि है, तासौं कहियै ताल।
सा रि गमादि दै सुर कह्यौ, तेहि जानौं ततकाल॥ १९६॥
स्वर विरदहि पद तीन कहि, पाठ ताल षट अंग।
गावै मीयाँ सरस करि, मेदिनि जाति अभंग॥ १९७॥
पाँच अंग लै गायऊ, मीयाँ सरस सुभाँति।
कहौं संगीत के मत इहै, होय नादिनी जाति॥ १९८॥

चार अंग तैं होत है, जातिदीपनी जान।
कह्यौ है मत संगीत के, मीयाँ सरस बखान॥ १६६॥
तीन अंग सौं पावनी, गावै जातिनी होय।
'तानसेन' संगीत मत, गावै पंडित लोय॥ २००॥
दोइ अंग तैं होय है, जाति तारावलि जान।
'तानसेन' संगीत मत, ताकौ हित है मान॥ २०१॥
ताल आदि द्वै छंद है, सोई नियमक आहि।
जामैं नियम न जानियै, अनियम कहियै ताहि॥ २०२॥

गरण विचार—

भगन आदि गुरु होत है, मही देवता जाहि।
'तानसेन' संगीत मत, देत लच्छिमी चाहि॥ २०३॥
यगन आदि लघु जानियै, जासु देवता नीर।
बुद्धि करत यह गन धरैं, वहु सुख होत सरीर॥ २०४॥
नगन तीन गुरु जानियै, बुद्ध देवता होय।
अर्थार्थी यह गन धरै, कहत सु पंडित लोय॥ २०५॥
गगन तीन लघु जानियै, इंद्र देवता जाहि।
बढ़ै आप यह गन धरैं, यह संगीत मत चाहि॥ २०६॥
रगन मध्य लघु कह्यौ है, देव अगिन जंजाल।
ये गन धरैं कवित्व में, मृत्यु होइ ततकाल॥ २०७॥
सगन अंत गुरु होत है, वायु देवता जान।
ततछिन जगह छुटात है, यह संगीत मत मान॥ २०८॥
तगन अंत लघु जानियै, गगन देवता नाम।
निरधन करै जो गन धरै, यह पुरवै नहीं काम॥ २०६॥
जगन मध्य गुरु जानियै, जाहि देवता बरुनि।
होत व्याधि यह गन धरैं, सकल देह में जरनि॥ २१०॥

वर्ग विचार—

अवर्ग देवता चंद है, आयुस बढ़ै अपार।
कवर्ग देव मंगल कह्यौ, भासै कीर्ति उदार॥ २११ ॥
टवर्ग देवता गुरु कह्यौ, संपति होय जो आन।
चवर्ग देवता बुध कह्यौ, जस कर्ता तेहि जान॥ २१२ ॥
तवर्ग देवता शुक्र है, देय कष्ट वह चाहि।
यवर्ग देवता शनि कह्यौ, देय सौभाग्य सो चाहि॥ २१३ ॥
पवर्ग देवता सूर्य है, कीरति मय करि देत।
सवर्ग देवता राहु है, जस निगलन कौ हेत॥ २१४ ॥
अवर्ग कहियत विप्र है, चवर्ग है जो क्षत्रि।
'तानसेन' संगीत मत, बरनैं पंडित अत्रि॥ २१५ ॥
पवर्ग वर्न सो वैश्य है, सवर्ग वर्न सो शूद्र।
जानौ मीयाँ सरस करि, कह्यौ संगीत-समुद्र॥ २१६ ॥

७—संकीर्णाध्याय

राग संकीर्ण—

टंके टोड़ी अंस मिलि, सुद्ध देव गंधार।
आदि राग भैरव यहै, प्रगट्यौ भरत कुमार॥ २१७ ॥
प्रथम ललित बागेश्वरी, ललित दूसरौ जान।
पूरिया और घनाश्री, मालकोष तेहि मान॥ २१८ ॥
जहाँ ललित लीलावती, और भैरौं सब भाग।
गायें पंचम पूरिया, ये हिंदोल सु राग॥ २१९ ॥
दीपक नाँहिन दीप में, गावत गुनि जन जान।
यातैं लिख्यौ न ग्रंथ में, याकौ कहूँ बखान॥ २२० ॥
गौरी जहाँ मिलाइयै, राग टंक बरहंस।
सिरीराग सो जानियै, भाख्यौ रिषि अवतंस॥ २२१ ॥
मिल बसंत सावंत कौ, जिहि कल्यानक मोद।
मेघराग सो जानियै, उपजै सुनैं विनोद॥ २२२ ॥

रागिनी संकीर्ण—

सुद्ध कान्हरा आदि तें, भेद कान्हरा पाँच।
कहत मते संगीत के, गुनि जन जानौं साँच ।। २२३ ।।
प्रथम कहत हौं गाय कैं, सुद्ध कान्हरा एक।
भेद चार पुनि गावहू, ताकौं सुनौ विवेक ।। २२४ ।।
जहँ कान्हरा धनासिरी, दोऊ मिलत अभिराम।
एकहि सुर करि गाइयै, बागेश्वरी सो नाम ।। २२५ ।।
मिलि मलार औ कान्हरौ, राग अड़ानौ होय।
फिरोदस्त संग गाइयै, कहैं सहानौ सोय ।। २२६ ।।
जहाँ कान्हरौ धौलश्री, दोऊ सुर सम भाग।
मंगलाष्टक गाइयै, कहैं सो पूरिया राग ।। २२७ ।।
गौड़ बिलावल के मिलैं, होय राग कामोद।
पाँच भाँति सो कहैं सब, गावत सुनैं विनोद ।। २२८ ।।
एक कह्यौ कामोद जब, गावै सुद्ध समेत।
होय सुद्ध कामोद तब, जन आनंद निकेत ।। २२६ ।।
मिलैं कल्यान कामोद जहाँ, होय कल्यानकामोद।
ये सामंत मिल गाइयै, सो सामंतकामोद ।। २३० ।।
कामोदहि जो गाइयै, अरु षट राग समेत।
तिलकनामकामोद यह, कह्यौ सदाँ सुख हेत ।। २३१ ।।
देसी अरु आसावरी, षट रागिनि के संग।
बंसाली जिय जानियै, उपजत सुनैं अनंग ।। २३२ ।।
देसकार टोड़ी मिलैं, तिरबन सुर सम भाग।
गावैं तिरहुत देस में, सदाँ बरारी राग ।। २३३ ।।
मारू धवल धनासिरी, तासु भारिया चार।
एकै सुर करि गाइयै, पटमंजरी विचार ।। २३४ ।।

मारू केदारा मिलै, जयतिसिरी अरु सुद्ध।
घंटा राग सु जानियै, गावैं सबै विसुद्ध॥ २३५॥
जित भैरौं अरु कान्हरौ, आधौ-आधौ होय।
सिरी राग सारंग मिलि, टंक कहावै सोय॥ २३६॥
सूहौ मिलै मलार सौ, केदारौ सम भाग।
नागलोक मोहन करै, नागध्वनि कौ राग॥ २३७॥
देसकरी कल्यान कौं, मिलै गूजरीस्याम।
सदा पियारी कान्ह की, राग अहीरी नाम॥ २३८॥
जहाँ संकराभरन में, जुरै सोरठी आय।
राग रहसमंगल वहै, मिलै अड़ानौं जाय॥ २३९॥
बंगयाल अरु गूजरी, जिहि पंचम गंधार।
होय भैरवी के मिलैं, सोरठ सो अवतार॥ २४०॥
सिरी राग मालव मिलैं, जहाँ मनोहर होय।
नारद भाख्यौ भरत सौं, राजहंस है सोय॥ २४१॥
टंक सुद्ध गंधार मिलि, मालसिरी एक ठाम।
भीमपलासी मूर्छना, श्रीसामोदहि नाम॥ २४२॥
जहाँ धौल गौड़हि मिलैं, राग सो हंसी होय।
टोड़ी अरु षटराग मिलि, देसी कहियै सोय॥ २४३॥
मिलै सुद्ध सारंग जिहि, श्रुति पूरवी सु ठाम।
गायौ देवन देवगिरि, देवगिरी सो नाम॥ २४४॥
जिहिं कल्यान विहागरौ, मिलौ कान्हरौ आय।
कोलाहल सो जानियै, कह्यौ भरत रिषिराय॥ २४५॥
जहाँ संकराभरन कौं, सिरी राग सम भाग।
मिलै गाइयै मालश्री, सिरी रमन सो राग॥ २४६॥
जहाँ बिलावल पूरबी, केदारौ इक ठाम।
देवगिरी माधौ मिलै, ताहि कुंकम है नाम॥ २४७॥

रामकली और स्याम मिलि, बहु लागैं गंधार।
राग सो मंगलगूजरी, गूजर देस विचार ॥ २४८ ॥
चैती गौरी श्रीरमन, होय बरारी एक।
कही विचित्रा रागिनी, श्रुति सुख देत अनेक ॥ २४९ ॥
नटनारायन कान्हरौ, औ मल्हार सम भाग।
बीलाबल सम गाइयै, होय गुलाली राग ॥ २५० ॥
रामकली और गूजरी, देसकार के संग।
सोई बहुला जानियै, मिलौ जो पंचम बंग ॥ २५१ ॥
सुद्ध संकराभरन मिलि, जिहि कान्हरौ मलार।
होय राग देसाख्य सो, प्रगट्यौ उभै कुमार ॥ २५२ ॥
सारंग नट मल्लार सम, होय बिलावल अंत।
देवगिरी मिलि गाइयै, सोई राग बसंत ॥ २५३ ॥
लंकदहन अरु सोरठी, मिलैं बिलाबल जाहि।
राग संकराभरन सो, कोऊ जानत ताहि ॥ २५४ ॥
जहाँ बिलाबल गाइयै, एक संग सारंग।
बेलावलि सो जानियै, होत सुनत सुख अंग ॥ २५५ ॥
सुर सुघराई सोरठी, जहाँ दुहूँ की होय।
सुनत बढ़ावै मोद कौं, कामोदिनी है सोय ॥ २५६ ॥
मिलै जहाँ कल्यान कौं, केदारौ सम भाग।
सुरति बिलाबल के मिलैं, होत ईमन सो राग ॥ २५७ ॥
केदारौ कल्यान जहाँ, इमन सुद्ध कौ साथ।
राग होय हम्मीर तहाँ, गायौ गौरीनाथ ॥ २५८ ॥
गौरी सिंधु आसावरी, भैरौं सुर संचार।
देवगिरी मिल गाइयै, राग होय गंधार ॥ २५९ ॥
मालसिरी जो गाइयै, कुंभारी एक ठाम।
तामैं मिलै सरस्वती, होय दिवारी नाम ॥ २६० ॥

जहाँ धनासिरी गाइयै, सारस्वती मिलाय।
कुंभारी सो जानियै, गनपति कही बनाय॥ २६१॥
मधुमाधवी सरस्वती, केदारौ सुर होय।
मिलै संकराभरन सो, मालसिरी है सोय॥ २६२॥
गौरी मारू जैतसिरी, यहै धनाश्री जान।
धौल बरारी जाहि में, दोऊ सुर सम तान॥ २६३॥
मिलै बरारी जैतसिरी, दुहू सुरन सम तान।
गावत गुनी प्रसिद्ध सब, धौलसिरी नहीं आन॥ २६४॥
भीमपलासी ललित मिलि, गावै सुर सम भाग।
रामकली रमनीय अति, राग तें उपजत राग॥ २६५॥
गौड़ अड़ानौ गौरि जुत, यहै गुनकरी जान।
मालव की यह जोषिता, पंडित करैं बखान॥ २६६॥
देसी टोड़ी ललित मिलि, देसकली पहिचान।
गायौ गुनिजन प्रीति करि, हिय में सुर कौं आन॥ २६७॥
जहाँ-जहाँ गौडहि गाइयै, लै आसावरी साथ।
गौड़कली सो जानियै, भाख्यौ गोरखनाथ॥ २६८॥
जहाँ टोड़ी आसावरी, स्याम बहुरि गंधार।
मिलै बरारी मूर्छना, षट आनन षट राग॥ २६९॥
केदारौ कल्यान मिलि, कान्हरौ जैसिरी स्याम।
मंगलाष्टक नाम यह, गायौ गिरिपति नाम॥ २७०॥
आसावरी सुर पूरवी, भैरौं देवगंधार।
चार मिलैं चौराष्टक, गावत भरत कुमार॥ २७१॥
कहुँ कल्यान कामोद कहुँ, कहुँ सारंग हमीर।
इन्हैं मिलैं जहाँ गाइयै, कहै नाट बलबीर॥ २७२॥
कहूँ सुद्ध केवल मिलै, तातें उपजी कांति।
एक-एक रागिनी मिलैं, होत नाट की भ्रांति॥ २७३॥

बागेसुरी मिलाय कें, पूरिया औ मधुमाध।
केवल नाट सो जानियै, मूरछना श्रुति आध ॥ २७४ ॥
लंकदहन मधुमाधवी, कछु लीलावति जान।
मिलै संकराभरन सो, नटनारायन आन ॥ २७५ ॥
कुंभारी अरु पूरिया, जिय करियै एक ठाम।
राजरंग सो जानियै, राजनारायन नाम ॥ २७६ ॥
अरिल धवल मधु माधवी, एकहि लरिकै गाय।
धनासिरी कल्यान कहुँ, सुर कामोद मिलाय ॥ २७७ ॥
केदारौ अरु कान्हरौ, मिलैं जहीं सब आय।
होत नाटतांडव तहाँ, ब्रह्मादिक गये गाय ॥ २७८ ॥
गौरी बहुरि विभास कौं, साधि लेहु सुरतान।
असंन्यास ग्रह सोधि कें. तिरवन के सुर जान ॥ २७९ ॥
गौरी मालव जोग तें, राग पूरवी होय।
राग रंग सब सोधि कें, गावत हैं सब कोय ॥ २८० ॥
जहाँ पहाड़ी मालवी, अरु चैती सम अंस।
ताँही मिलै धनासिरी, होय राग बड़हंस ॥ २८१ ॥
जहाँ पूरवी गाइयै, गौरी स्याम समेत।
फिरोदस्त सो जानियै, श्रवन सुनत सुख देत ॥ २८२ ॥
तिरवन पहाड़ी मालव, तीन राग एक ठाम।
राग मनोहर गौरी, कह्यौ भरत मुनि नाम ॥ २८३ ॥
पूरन सुद्ध मलार कौं, जहाँ गावै सुर साध।
मालसिरी सैंधौ मिलैं, होय राग मधुमाध ॥ २८४ ॥
नटनारायन गाइयै, जैतसिरी एक ठाम।
सुद्ध संकराभरन मिलि, राग सरस्वती नाम ॥ २८५ ॥
जहाँ बिलाबल गाइयै, केदारौ सम भाग।
कहैं संकराभरन सो, शंकर के अनुराग ॥ २८६ ॥

जहाँ पहाड़ी गाइयै, केदारौ सम तान।
लंकदहन सो जानियै, कह्यौ आपु हनुमान ॥ २८७ ॥
देवगिरी अरु पूरवी, जित गौरी एक ठाम।
गावत गौड़ मिलाय कैं, राग परोवी नाम ॥ २८८ ॥
मालसिरी मल्लार तें, मिल जहाँ होय एक रूप।
खंभावति सो जानियै, कह्यौ भरत रिषि भूप ॥ २८९ ॥
नटनारायन मिलि जहाँ, राग सुद्ध मल्लार।
सुद्ध सहित सम भाग जहाँ, होत हमीर प्रचार ॥ २९० ॥
सब गोपिन मिलि राग करि, गायौ राधानाथ।
मधुबन में मधु मथन करि, कह्यौ माधवी साथ ॥ २९१ ॥
ललित विभास बसंत मिलि, देसकार हिंदोल।
अमर पंचमुख पंचधुनि, परम प्रसंसित लोल ॥ २९२ ॥
ललित पंचमुख पंच सुर, गायौ पंचम तान।
सोई पंचम जानियै, कह्यौ बीर हनुमान ॥ २९३ ॥
सोरठ श्रुतिहि मिलाइयै, नट हमीर अरु हीर।
गौर राग जुत रास में, गावत सुनि अति धीर ॥ २९४ ॥
केदारौ गौरी मिलै, कछुक स्याम संजोग।
सोई एक विहागरौ, गावत हैं सब लोग ॥ २९५ ॥
सुद्ध बिलावल गाइयै, बागेसुरी मिलाय।
सोई सूहौ जानियै, सब कौं सुनत सुहाय ॥ २९६ ॥
देवगिरी मल्लार नट, सारंग कहियै सोय।
देवगिरी धुनि एक जहाँ, सुद्ध सारंग सो होय ॥ २९७ ॥
बड़हंसी और सैंधवी, साधि देव सुर गाय।
रति तें उपजत राग सो, सुरहति नाम सुभाय ॥ २९८ ॥
आसावरी कौं आदि ही, बहुरि अहीरी टेरि।
गायें सैंधवि रागिनी, सकल सिंधु की फेरि ॥ २९९ ॥

ललित देस कान्हरौ श्रुति, गावै एक करि तान ।
होय है बखारविंद सो, राग सुलच्छन जान ॥ ३०० ॥
सूहौ कान्हरौ जो मिलैं, हरद-चून की भाँति ।
कला प्रबीन सो नाद-विद, बदैं कुराई कांति ॥ ३०१ ॥
ईमन गुनकरी साधि कैं, अरु कल्यान अनूप ।
प्रगट लोक में गाइयै, भूपाली कौ रूप ॥ ३०२ ॥
ललित धनाश्री धवल मिलि, एक टोड़ी कौ अंग ।
सुद्ध स्याम भैरव मिलैं, होय भैरवी रंग ॥ ३०३ ॥
दीपक की ज्योतिहि मिलैं, सुर सरसुति ये अंस ।
दीपावती प्रसिद्ध जग, जग नृप कौ अवतंस ॥ ३०४ ॥
मिलै बरारी अंग सो, गौड़ गूजरी लाग ।
कहै बंगाली रागिनी, बंग देस कौ राग ॥ ३०५ ॥
देसी और विभास मिलि, पंचम भैरौं भाग ।
ललित रूप सो गाइयै, ललित मनोहर राग ॥ ३०६ ॥
नट सारंग संजोग सौं, मेघराग की तान ।
मिलै एक करि गाइयै, यह मल्लार सुजान ॥ ३०७ ॥
नट केदारौ कान्हरौ, कामोदी सुर स्याम ।
असन्यास ग्रह ये सबै, उपजै सावंत नाम ॥ ३०८ ॥

॥ इति तानसेनी राग-माला संपूर्णम् ॥

परिशिष्ट

१. तानसेन के पुत्रों की रचनाएँ

●

१—तानतरंग की रचनाएँ

शंकर-वंदना— [१] रागिनी टोड़ी, सुर फाक्ता

संभु हर रे गंगाधर रे, कामित जन मन चिंतामनि,
कल्पबृक्ष कामधेनु, काम संपूरन कर रे।
कर त्रिसूल त्रिलोचन रे, मात्रा यति अंग ख्याल,
बाघंबर अंबर रे॥
नीलकंठ भस्मभूषन, फनि गुनि गलैं मुंडमाल,
मंडित खड्वांग खप्पर रे।
चंद्र किरन भुव कुंडल मंडित श्रवन, अखंड उर पन्नग गन रे।
तांडव सिव राजत मुखमंडन भंड-भंड,
भंडासुर 'तानतरंगन' रे॥

[२] रागिनी टोड़ी, ताल धीमा

देखौरी एक जोगी यह भेष कियें,
जपने कौं अष्ट फन मुंडमाल हियें।
जटाजूट गंग जाकें, बरद बाहन अंबर बाघंबर,
त्रिसूल-डमरू-खप्पर लियें॥
बीन पिनाक गवरी अर्धंग, गावत तान बजावत,
टोड़ी आलाप कियें।
'तानतरंग' सेवक सेवौ शंकर,
चंद्रमा ललाट आढ़ दियें॥

बड़ी रानी की स्तुति— [३]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

प्यारी ! तेरौ रूप सुघर गुन पूरन समुद्र भयौ,
ता मधि सोभा ऐसी बुद्धि जहाज ।
यौवन तरंग लियें, कमला कौ मुख मानौ मोतीहृद,
सेवा कुंडल स्वर्ग अंबर जानौ मीन हंस ताज ॥
क्रोध कौ घूंघट कियें ता मधि मुख मयंक,
नहीं है कलंक तामैं, मेरी जान बुध-समाज ।
'तानतरंग' प्रभु निरख अस्तुति कीन्हीं,
महाजान बड़ी रानी महाराज ॥

संगीत-विवेचन— [४] टोड़ी, चौताल

अनुक्रम सौं पावै, तीवर तरतीवर कोमल,
संवादी त्रय भेद संग लियें सुर-ताल ।
सप्त सुर, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना,
उनंचास कूट तान, अक्षर-सुर सांचे चाल ॥
औडव-षाडव संपूरन याकौ व्यौरौ बूझिवौ,
संगीत बड़ौ जाल ।
'तानतरंग' कहै तुम नीके जानत,
समझ कर लीजियै अपने मन में भूपाल ॥

[५]

चुनरी प्यारी पचरंग पहिरैं सु पनियाँ गगरिया भरैं,
आवति है सु दोऊ हाथ चैंथी धरैं ।
गोरे भुजन में गाढ़े बरा, पुनि हाथन में स्याम चुरी,
हथेरी-नखन मेंहदी सौं गहिरौई रंग करै ॥

स्त्राँसन बेसर-मोती हालत, मुख प्रस्वेद, नैंना भौंहै चढ़ायें,
कानन बारी, गरैं मोतिन-लर, कुच उतंग, नितंब भारी,
कटि छीनी चलत लफि-लफि परत उर बेनी,
पट भीजे री सु बहुत फुलेल परै।
जेहरि-जोति सूरज सौं हो उपरि, पाँय महावर,
नखन जोति अरु गुदनाँ गुदायें,
'तानतरंग' के प्रभु विनती करत हौं,
सो हँसि बोलत हरै-हरै ॥

कृष्ण-लीला— [६] टोड़ी, चौताल

धीरे-धीरे-धीरे कान्ह सीखौ पर ग्रह आवन ।
हौं तौ अब ही जाय कहूँगी नंदराय सौं,
विधि तें हमकौं चलावन ॥
कैसै बल-छल बोलि कैं, कर भेष धरौ जब बामन।
'तानतरंग' प्रभु ऐसी हौ न गँवारि, तुम मोहि लागे बौरामन ॥

[७] रागिनी टोड़ी, चौताल

अब ही डारि दै रे इडुरिया,
कन्हैया मेरे पचरंग पाट की।
हा-हा खात तेरे पैंयां परति हौं,
यह लालच मोहि मथुरा नगर हाट की ॥
मेरे संग की दूर निकस गईं, हौं कीन्ही यहि घाट की।
'तानतरंग' प्रभु झगरौ ठान्यौ,
हँसत लुगाई बाट की ॥

२—विलास खाँ की रचनाएँ

सरस्वती-वंदना— [१] राग भैरव, चौताल

जै सारदा भवानी भारती विद्या, नाम वेद जस गावै।
वानी वाक् इड़ा देवी, सरस्वती मन भावै॥
मंगला ज्ञान रूपा वर्नमालिनी,
बीना-पुस्तक धारिनी, जो तोहि ध्यावै।
कहै 'विलास' त्रय ताप मिटै,
निर्बोध बोध होवै, वांछित फल पावै॥

हरिनाम-स्मरण— [२] टोड़ी, चौताल

मेरैं तौ हरि नाम कौ आधार, जिन रचौ संसार,
काम-क्रोध-लोभ महा जंजार।
जिन रच्यौ अरस-कुरस जिमी-आसमान,
निरंजन निराकार साँचौ, क्यों न सेवौ परबरदिगार॥
काहे कौं हूजै गुनहगार, काहे कौं लीजै ऐतौ भार,
सोई रसवाद क्यों न तजियै, जाकौ नाम रोजगार।
'विलास' के प्रभु सौं पाक साफ रहियै तैयार,
जनम जीव नहीं बारंबार॥

प्रबोध— [३] टोड़ी, तिताला

कौन भ्रम भूल्यौ रे मन अज्ञानी,
सीखत न राग-रंग-तान अक्षर सुद्ध बानी।
और स्वारथ सौं जनम गँवायौ,
विद्या बात अधिक सयानी॥
जे साधू गुनी भये, तिनकौं न गुन की मति ठानी।
'विलास' के प्रभु कौ जु भलौ चाहत,
तौ मिलाओ तानसेन गुरु-ज्ञानी॥

खंडिता— [४] टोड़ी, चौताल

सौंहैं सौंहैं कत खात, बात कहत तोतरात,
प्रात आये हौ जहाँ तें अब तहाँ ही क्यों न जात।
चिह्न देखियत हैं गात, यातें अरसात जम्हात,
याही तें उपजावत मेरौ मन मनात ॥
अबहू बैन कहत न सोहात एक,लंगर सौ ढीठ, मन-मन मुसक्यात।
'विलास' के प्रभु पर घर गमन छाँड़ौ,
हमसौं अबध बद अनत विरम रहे, आये हौं मेरें परभात ॥

माननी— [५] टोड़ी, धमार ध्रुपद

पिय के मन-नैनन भावै, भावै तेरौ बदन पिय कौ।
तेरे रूप-रस ऐसौ बस भयौ प्रानपति,
जो न चाहै आनन काहू तिय कौ ॥
रूप-जोबन तोहि दीनौ करतार बनाय,
आली ! कोप न राखौ गरब हिय कौ।
'विलास' के प्रभु नवल लाल, अति रसाल,
प्रीत नई आनंद बढ़्यौ जिय कौ ॥

विरहणी— [६] टोड़ी, चौताल

हमारी सुरत बिसारी बनवारी हो,
सरबस दै-दै हारी, तौहू न भये सपुने अपने मुरारी।
वे मोहन मधुकर समान अनगन बेलि चित लावत धावत,
मो बिरहिन बिरह व्यापत, मनमथ धीर धरै न धारी ॥
ऐसे निठुर निरदई के बस भई,
जोई-जोई कही, सोई सही विरह बावरी।
'विलास' के प्रभु कौं हौ न पत्याऊँ,
जनम छाड़ौं जु रहौं न्यारी ॥

२. तानसेन के समकालीन संगीतज्ञ

●

तानसेन के अस्तित्व-काल के आस-पास उत्तर भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग में अनेक विख्यात संगीतज्ञ विद्यमान थे। उनकी विद्यमानता से उस काल में संगीत के व्यापक प्रचार का परिचय मिलता है। उस समय के कुछ प्रमुख संगीतज्ञों तथा गायक-गायिकाओं की नामावली इस प्रकार है—

राजकीय—

जौनपुर के सुलतान हुसैन शाह शर्की, ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर और उनकी रानी मृगनयनी, गुजरात के सुलतान बहादुरशाह, मालवा के सुलतान बाजबहादुर और उनकी प्रेयसी रूपमती, मुगल सम्राट अकबर और उनकी बेगम ताजबीबी, आमेर के राजकुमार माधवसिंह, बीकानेर के राजकुमार पृथ्वीराज, नरवरगढ़ के राजा आसकरन।

दरबारी—

बक्सू, पांडवीय, महमूद, कर्ण, बैजू, गोपाल, बाबा रामदास, चर्चू, भगवान, पुंडरीक विट्ठल।

भक्त—

स्वामी हरिदास, हित हरिवंश, हरिराम व्यास, रामराय, सूरदास मदनमोहन आदि वृंदाबन के भक्त गायक।

राजस्थान की भक्त-गायिका मीराबाई।

गोविंदस्वामी, सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, आदि अष्टछाप के कीर्तनकार।

धोंधी, मेहा, श्याम कुम्हार मृदंगी और उसकी पुत्री वीणा-वादिका ललिता आदि धार्मिक क्षेत्र के अन्त्यज।

३. प्रकीर्ण

★

'ध्रुपद स्वर लिपि' नामक पुस्तक में तानसेन और उनके पुत्र सुरतिसेन तथा तानतरंग के कुछ अन्य ध्रुपद भी मिले हैं, जो यहाँ संकलित किये जाते हैं—

१. तानसेन की रचनाएँ

[१] मुद्राकी, झपताल

सुभ घरी, सुभ लगन बिचार बैठे महम्मद साह,
कनक छत्र धरियै।
रच-पच मंडल बनायौ, जौहर कड़ा दर्पन रंग मृग तरियै॥
बाजत बाजने छत्र-दंड सोभा करै,
सेवक स्तुति करैं अरु चमर ढरियै।
'तानसेन' के प्रभु देत असीस, दरस परस इंद्रासन पइयै॥

[२] छाया, ताल सीर

कुंजन हेत मोर, रैन हेत चंद्रमा, आब हेत मीन, दीप हेत पतंग।
लोहा पाषान हेत, स्वाति चातक हेत, जननी बालक हेत,
कंत हेत अनंग॥
सरीर दुःख हेत, संतोष सुख हेत,
सुर हेत साधन, साधू हेत असंग।
तान हेत 'तानसेन' सेवा हेत गुरु-जन, भक्ति हेत पदारथ,
मुक्ति हेत श्री गंग॥

[३] राग केदारा

देखत तन-मन आनंद भये, विलाई विरह व्यथा,
भारी पुन दरसन ।
आये नंद घर अधर सुधारे, प्रेम-बूँद घन लागे बरसन ।।
रोम-रोम सुख उपजे क्रम-क्रम,
ज्यों-ज्यों लागि पिया के पग परसन ।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहु नायक,
सब सौतन मिलि लागी तरसन ।।

[४] राग बसंत

चलो सखि कुंज धाम, खेलत स्याम संग,
लिएँ राधे नाम, रूप-गुन जागरी ।
मुक्ता-हार रसाल माल केतका केसुक जल,
और न प्रकट बन फूल बन-बाग री ।।
बोलत कोकिल-कीट-कपोत, गुंजत भँवर,
समीर धीर उड़त, मनमोहन आगरी ।
'तानसेन' के प्रभु ग्रीवा मिलि केलि करत,
गावत बसंत राग, धन्य दरस भाग री ।।

[५] राग मेघ, झपताल

प्रबल दल साजे झुक झूम या भूम पर,
उमड़ घनघोर झर इंद्र लै आयौ रे ।
बरसत मूसल धार, होत पहर चार,
कृष्ण गिरिधर गोकुल बचायौ रे ।।
बूँदन तें धरनीधर सबन की रक्षा कर,
पसु-पंछी जीव-जंतु अति सुख पायौ रे ।
कहै 'मियाँ तानसेन' तेरी गति अव्यक्त,
सुरपति अधीन होय सीस नवायौ रे ।।

[६] राग मेघ, झपताल

अरे मन सुमिरन कर कर निसि-दिन, रहै-रहै साहन साह मदार।
जोई-जोई धावत सोई फल पावत, न्यामत पावत चार॥
हम तौ सेवक, दरबार के जाचक, तुम हो अल्लाह हजूर।
'तानसेन' के प्रभु यह बर माँगत, रहैं तान-राग सम पूर॥

[७] राग मेघ, चौताल

स्याम घन स्याम घन उमड़ घुमड़ आये,
मंद-मंद मुरली तान गगन घिर आई।
इत जलधर बूँद, उत सुधा बरसत,
इत चपला, उत पीतांबर पहिराई॥
इत मुक्त-माल गरे, उत बक-पाँति देखो,
इत धुरबार धार, उत गाज छाई।
यह सोभा निरखत 'तानसेन' के प्रभु,
इत अरुन बरन बादर, उत लाल पाग पहिराई॥

[८] राग मेघ, धमार

रिमझिम बरसैं आज बदरवा, पिया विदेस,
मोरी थरथरात छतिया, निस-दिन मन भावै।
नैन हू न नींद आवै, दामिनी दमकति लागै,
उन बिन कल न परत, नाथ-नाथ करि धावै॥
रह्यौ न जाय घड़ी-पल-छिन, तन दहै मोर,
आय मदन मो सन खोजत अवसर पावै।
निकसत नहीं प्रान, ह्वै रह्यौ चित पाषान,
ता पर कर बखान 'तानसेन' गावै॥

२. सुरतिसेन की रचनाएँ

[१] भूपाली, चौताल

आदि नाद प्रणव रूप सम्पूर्न दीजियै तुम प्रसाद,
ब्रह्मा-विष्णु-महेस त्रिविध गुन-निधान ।
आदि भूत अविनासी अनंत अगम अपार,
अति आनंद अपूर्व भाँति निरंजन ।।
सकल रूप कारन, सकल दुख निवारन,
भव बंधन तारन सुर-नर-मुनि बंदन ।
चतुर्वेद रटत हैं यह बानी तुम्हरौ नाम,
'सुरतिसेन' मानी देहु कृपा भिक्षा माँगी,
सदा रहूँ पास जन-जन ।।

[२ कुमारी, तिताला

षरज सुर साधै, सोई गुनी जो सुद्ध मुद्रा सुद्ध बानी,
सुद्ध राग अंग गावै ।
द्रुत-मध्य-बिलंवित करि दिखावै,
आरोहन-अवरोहन लाग-डाट सो बतावै ।।
करत कंठ प्रकास उक्ति-युक्त-अनुप्रास,
तब बढ़त घटत साँस गुरन तैं भेद पावै ।
कहै 'मियाँ सुरतिसेन' सुनियै सब गुनी जन,
ध्रुपद विद्या कठिन, एक जन्म नहिं आवै ।।

३. तानतरंग की रचना

[१] मुलतानी, धमार

सामल दा होरी खेलन नु माडा आवन दा ।
बंसी दी तान बजावन दा, साड़ा मन ललचावन दा ।।
चोबा चंदन अगर कुमकुमा, अबीर गुलाल उड़ावन दा ।
'तानतरंग' प्रभु रस भरि छिड़कत, रहस-रहस गरे लावन दा ।।